विक्रम संवत् 2080 ■ आश्विन (क्वॉर)/कार्तिक मास(8) ■ 01 अक्टूबर 2023 ■ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

मोदी यानि हर गारंटी पूरी होने की गारंटी!

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2021-23, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 10 एवं 15 तारीख

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और जी-20 के नेताओं ने राजघाट पर महात्मा गांधी जी की समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ब्राजील के राष्ट्रपति श्री लुइज इनासियो लूला दा सिल्वा को जी-20 की अध्यक्षता सौंपी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का ''नारी शक्ति वंदन अधिनियम'' पारित होने पर भाजपा केंद्रीय कार्यालय में अभिनंदन किया गया।

भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने भगवान श्री कामतानाथ मंदिर, चित्रकूट (मध्य प्रदेश) में पूजा-अर्चना की।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विश्वकर्माओं को पीएम विश्वकर्मा प्रमाण पत्र और आईडी कार्ड वितरित किये।

प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का भाजपा संसदीय बोर्ड द्वारा जी20 के ऐतिहासिक और अभूतपूर्व सफल समापन पर स्वागत किया गया।

भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने चित्रकूट (मध्य प्रदेश) में श्रद्धेय नानाजी देशमुख को पुष्पांजलि अर्पित की।

प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का बीना में कार्यकर्ताओं द्वारा गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

अनुक्रमणिका

वर्ष-55, अंक : 08, भोपाल, अक्टूबर 2023

संपादकीय ▶ संजय गोविन्द खोचे 04

- प्रचंड बहुमत से भाजपा सरकार

कवर स्टोरी 05

- मोदी यानि हर गारंटी पूरी होने की गारंटी!

- **बनेगी भाजपा सरकार :** 09
  - » भाजपा को मिलेगा भरपूर आशीर्वाद, फिर बनेगी भाजपा की सरकार...
- **गरीब कल्याणकारी सरकार :** 11
  - » गरीब कल्याण करने वाली भाजपा: अमित शाह ...
- **आत्म निर्भर भारत :** 12
  - » विश्व-मित्र के रूप में भारत...
- **विकसित भारत की मजबूत नींव :** 15
  - » सक्षम और समृद्ध भारत के निर्माण में अहम होगी मध्यप्रदेश...
- **दुनिया का विश्वास :** 16
  - » विश्व बंधुत्व का विश्वास बने मोदी...
- **महिला नेतृत्व का विकास :** 18
  - » लोकतंत्र में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित...
- **हमारे आदर्श :** 21
  - » पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के विचार हम सबके लिए...
- **विश्वकर्मा भाई-बहनों की सहयोगी सरकार :** 23
  - » भगवान विश्वकर्मा की जयंती पारंपरिक कारीगरों और...
- **अंत्योदय के साथ एक भारत-श्रेष्ठ भारत :** 27
  - » अंत्योदय के ध्येय मंत्र को साकार करती भाजपा...
- **रोजगार मेले में प्रधानमंत्री :** 29
  - » युवाओं के लिए लगातार नए नए अवसर बन रहे हैं...
- **बनेगी भाजपा सरकार :** 31
  - » 150 से अधिक सीटें देकर भाजपा की सरकार बनाएं - अमित शाह...
- **मन की बात :** 32
  - » अटल इरादे, कोई काम मुश्किल नहीं
- **जयंती :** 36
  - » त्याग एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति राजमाता विजया राजे सिंधिया...
  - » बारडोली सत्याग्रह की सफलता पर महिलाओं ने सरदार...
  - » आज भी देशभक्ति के लिए प्रेरित करता है जय जवान-जय...
  - » आत्म शुद्धि के बिना अहिंसा का पालन असंभव : गांधीजी...
- **कविता : अटल बिहारी वाजपेयी** 40
  - » कंठ-कंठ में एक राग है...
- **विचार प्रवाह :** 41
  - » संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है...

मुख्य व्रत-त्यौहार

2. गणेश चतुर्थी व्रत 6. जिऊतिया, महालक्ष्मी व्रत 10. इंदिरा एकादशी व्रत 12. प्रदोष व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत 14. पितृमोक्ष, स्ना. दा. श्रा. अमावस 15. शारदीय नवरात्रारंभ, बैठकी 16. चन्द्रदर्शन 18. विनायकी चतुर्थी व्रत 19. उपांग ललिता व्रत 20. सरस्वती आवान्ह 21. सरस्वती पूजा, निशा पूजा 22. दुर्गाष्टमी, महाष्टमी व्रत 23. दुर्गा नवमी, जवारे विसर्जन 24. विजयादशमी, दशहरा 25. पापांकुशा एकादशी व्रत 26. प्रदोष व्रत 28. शरद पूर्णिमा, कोजागरी व्रत, स्ना. दा. व्र. पूर्णिमा, चन्द्रग्रहण

मुख्य जयंती-दिवस

1. रायबहादुर डॉ. हीरालाल जयंती 2. म. गाँधी, लालबहादुर शास्त्री ज., विश्व अहिंसा एवं आवास दिवस 9. वीर सीताराम कंवर बलिदान दि. 10. विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस 12. विश्व दृष्टि दिवस 13. प्राणनाथ प्रगटन महोत्सव 15. डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम ज. 28. करम परब, असाटी दिवस, म. अजमीढ़, म. दमघोष जयंती, टेकचंद महाराज समाधि दिवस, संत सिंगाजी मेला निमाड़

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

बिना किसी उद्देश्य या दिशा के जिये गये नीरस जीवन का कोई मतलब नहीं है। जीवन में कुछ बड़ा प्राप्त करने के लिए आपको अपना सर्वस्व दांव पर लगा देना चाहिए और अपने विश्वास के बल पर छलांग लगानी चाहिए।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष
अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष
प्रशांत हर्णे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

कोषाध्यक्ष
कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी
डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

प्रचंड बहुमत से भाजपा सरकार

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में नारी-शक्ति वंदन अधिनियम पारित हो चुका है। इस अधिनियम का देश पिछले कई वर्षों से इंतजार कर रहा था। आज भारत की हर मातृ-शक्ति का आत्मविश्वास निश्चित ही बहुत बढ़ा होगा और यह संभव हुआ है, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली भारतीय जनता पार्टी की सरकार के प्रयासों से।

अगले महीने नवम्बर में म. प्र., छत्तीसगढ़, राजस्थान, तेलंगाना व मिजोरम में विधानसभा के चुनाव होने जा रहे हैं। कुछ ही दिनों में चुनाव आयोग चुनाव की तिथियों की घोषणा कर देगा। यूँ तो यह चुनााव विधानसभा के हैं, पर यह चुनाव देश की राजनीति की दशा व दिशा तय करेंगे। इस बार के विधानसभा चुनाव कई मायनों में गहरे अर्थ का प्रस्तुतिकरण दे रहे हैं। भारत की राजनीति में वर्तमान में एक ऐसा अजीब सा विरोधी दलों का गठबंधन तैयार हो गया है, जिनकी न तो कोई नीति है और न ही देश को आगे बढ़ाने की कोई नियत दिखती है। सनातन के ऊपर यह विरोधी दल हमले पर हमले कर रहे हैं। तुष्टिकरण का अत्यंत वीभत्स रूप आज देश और प्रदेश की जनता देख रही है। ऐसे समय में सिर्फ और सिर्फ भारतीय जनता पार्टी ही एक सकारात्मक आशा के रूप में जनता के सामने नजर आती है। जिसका नेतृत्व भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी कर रहे हैं। जिनका ध्येय वाक्य है- तुष्टिकरण नहीं, संतुष्टिकरण। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का मानना है कि यह देश ''सबका साथ,सबका विकास, सबका विश्वास और सबके प्रयास'' से ही विश्व में नई ऊँचाई छुएगा।

म. प्र. में भारतीय जनता पार्टी की सरकार के पहले जब काँग्रेस की सरकार थी तो हमारा यह प्रदेश बीमारू राज्य कहलाता था। श्रीमान बंटाढार का शासन उस समय था। म. प्र. हर क्षेत्र में चाहे वह शिक्षा का हो, स्वास्थ्य का हो, उद्योगों का हो हर क्षेत्र में पिछड़ा हुआ था। उसके बाद विगत 18 वर्ष से म. प्र. में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है और आज हमारा म. प्र. विकसित प्रदेश के रूप में जाना जाता है। आज म. प्र. स्वच्छता, जल संरक्षण, पीएम स्वामित्व योजना, पीएम स्वनिधि योजना और पीएम आवास योजना में देश में पहले स्थान पर हैं। यही है भारतीय जनता पार्टी का शासन करने का विजन। बीच में कुछ समय के लिए प्रदेश में काँग्रेस की सरकार बनी थी। पर उस सरकार की प्राथमिकता में प्रदेश का विकास नहीं था, उस समय प्रदेश में भ्रष्टाचार का बोलबाला था। आश्चर्य की बात थी कि उस समय की काँग्रेस की सरकार ने पीएम आवास योजना की लिस्ट दिल्ली तक नहीं पहुँचाई। उसके बाद जब फिर से म. प्र. में श्री शिवराज सिंह जी के नेतृत्व में प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी तब भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने तीन वर्षों में म. प्र. को पीएम आवास योजना में श्रेष्ठतम स्थानों में पहुँचा दिया। भारतीय जनता पार्टी का सिद्धांत अंत्योदय और गरीब कल्याण है। इसी लक्ष्य को लेकर के भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश को विकास के पथ पर आगे बढ़ा रहे हैं। म. प्र. की भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने भी मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की नीतियों और उनकी योजनाओं को म. प्र. में घर-घर तक पहुँचाया है। आज देश में अत्यंत गरीबी में रहने वालों की संख्या एक प्रतिशत से भी कम है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत आज दुनिया की पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। भारत मोबाइल उत्पादन में विश्व में दूसरे स्थान पर है। स्टील उत्पादन में भी भारत दूसरे स्थान पर है। ऑटोमोबाइल के क्षेत्र में भी भारत का स्थान विश्व में तीसरे नम्बर पर है। गर्व का विषय है की आज भारत की आवश्यकता का अधिकांश मोबाइल मेड इन इंडिया है। विश्व में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत की अर्थव्यवस्था सबसे तेज गति से आगे बढ़ रही है।

विज्ञान व तकनीकी और अनुसंधान के क्षेत्र में भी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने नए कीर्तिमान स्थापित किये हैं। कोरोना के संकटकाल में जिस तरह से भारत ने वैक्सीन बनाया वह भारत की बढ़ती अनुसंधान की क्षमता का परिचायक है। इसी तरह से भारत चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला पहला देश बन गया है। भारत ने आदित्य एल 1 की भी सफल लॉचिंग की है। म. प्र. में भारतीय जनता पार्टी की डबल इंजन की सरकार ने तेजी से विकास के कार्य किये हैं। भविष्य में भी म. प्र. में कई सारे रेल्वे स्टेशनों का आधुनिकीकरण होना है। आने वाला विधानसभा चुनाव दो विचारधाराओं के बीच का चुनाव है। एक तरफ भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, परिवारवाद, तुष्टिकरण और कमीशनखोरी करने वाली पार्टियाँ हैं तो दूसरी तरफ एकात्म मानववाद को आदर्श मान कर चलने वाली प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व की भारतीय जनता पार्टी है जो हर गरीब को बिना किसी भेदभाव के संसाधनों पर पूरा हक देती है। गरीबों का कल्याण करती है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार बेटियों और मातृ शक्ति को आगे बढ़ाने वाली सरकार है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित हो चुका है। इस अधिनियम का देश पिछले कई वर्षों से इंतजार कर रहा था। आज भारत की हर मातृ-शक्ति का आत्मविश्वास निश्चित ही बहुत बढ़ा होगा और यह संभव हुआ है, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली भारतीय जनता पार्टी की सरकार के प्रयासों से। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने औद्योगिक क्षेत्र में काफी तरक्की की है। म. प्र. भी इससे अछूता नहीं है। कई सारी औद्योगिक इकाईयाँ खुल रही हैं।

इंदौर में दो नए आई टी पार्क, रतलाम में मेगा इंडस्ट्रीयल पार्क और नर्मदापुरम में रीन्यूएबल एनर्जी से जुड़ी मैन्युफैक्चरिंग जोन और ऐसे ही अनेक औद्योगिक क्षेत्र म. प्र. की औद्योगिक ताकत को और ज्यादा बढ़ाऐंगे तो सभी को रोजगार के अवसर और ज्यादा मिलेंगे। भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में प्रदेश में चहुँमुखी विकास के कार्य हुए हैं। निश्चित ही आने वाले विधान सभा चुनाव में नेतृत्व और कार्यकर्ताओं के सम्मिलित प्रयास से भारतीय जनता पार्टी प्रचंड बहुमत से सरकार बनाएगी।

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

मोदी यानि हर गारंटी पूरी होने की गारंटी!

- **कांग्रेस की वंशवादी पार्टी का इतिहास भ्रष्टाचार और तुष्टिकरण का रहा है। कांग्रेस, जंग लगा हुआ वो लोहा है, जो बारिश में रखे-रखे खत्म हो जाता है।**
- **नारी शक्ति वंदन अधिनियम ने देश में एक नया इतिहास रचा है।**
- **कांग्रेस और उसका घमंडिया गठबंधन सनातन धर्म को नष्ट करना चाहता है।**
- **कांग्रेस ने अपने स्वार्थ के लिए लोगों को गरीब बनाए रखा। भाजपा शासन में 5 वर्षों में 13.5 करोड़ से अधिक लोग गरीबी से बाहर आये।**
- **कांग्रेस ने समृद्ध मध्य प्रदेश को बीमारू बना दिया।**

देश समृद्धि की तरफ बढ़ने के लिए घोर परिश्रम कर रहा है। लेकिन कांग्रेस देश को 20वीं शताब्दी में ले जाना चाहती है। मैं मध्य प्रदेश के युवा साथियों को, हमारे फर्स्ट टाइम वोटर्स को एक बात जरूर बताना चाहता हूं।

युवा साथियों आपके माता-पिता, आपके दादा-दादी को अभाव में रखने के लिए कांग्रेस ही जिम्मेदार है। उनको मुसीबत में जीने के लिए मजबूर करने वाली एकमात्र पार्टी कांग्रेस पार्टी है।

जनसैलाब, उमंग, उत्साह, कार्यकर्ता का महाकुंभ, महासंकल्प... बहुत कुछ कहता है। ये दिखाता है कि मध्य प्रदेश के मन में क्या है। ये दिखाता है- नई ऊर्जा से भरी हुई भाजपा। ये दिखाता है- भाजपा और भाजपा के हर कार्यकर्ता का बुलंद हौसला।

मध्य प्रदेश को, देश का दिल कहा जाता है। भाजपा के साथ देश के इस दिल का जुड़ाव कुछ विशेष ही रहा है। जनसंघ के जमाने से लेकर आज तक, भाजपा को MP के लोगों ने हमेशा भरपूर आशीर्वाद दिया है। अटल जी, कुशाभाऊ ठाकरे जी, कैलाश जोशी जी, प्यारेलाल खंडेलवाल जी, राजमाता विजयराजे सिंधिया जी, सुंदरलाल पटवा जी, वीरेंद्र सकलेचा जी, मध्य प्रदेश से निकले ऐसे अनेक महान व्यक्तित्वों ने हमें आज यहां तक पहुंचाया है। ऐसे अनेकों लोगों का तप और त्याग, आज भी भाजपा के हर कार्यकर्ता को प्रेरित करता है। इसलिए मध्य प्रदेश सिर्फ भाजपा के विचार का ही नही, बल्कि विकास के विजन का भी महत्वपूर्ण केंद्र है। इसलिए आज जब देश अमृतकाल की नई विकास यात्रा पर निकला है, तब मध्य प्रदेश की भूमिका और महत्वपूर्ण हो गई है।

मध्य प्रदेश में भाजपा की सरकार को लगभग 20 साल पूरे हो चुके हैं। यानि जो युवा इस बार के चुनावों में पहली बार वोट डालेंगे उन्होंने भाजपा की सरकार को ही देखा है। ये युवा सौभाग्यशाली हैं कि इन्होंने MP में कांग्रेस का वो बुरा शासन, वो बुराइयां उन्होंने देखी नहीं है। MP में कांग्रेस के शासन की पहचान थी- कुनीति, कुशासन और करोड़ों का करप्शन। आजादी के बाद मध्य प्रदेश में लंबे समय तक कांग्रेस का ही शासन रहा। लेकिन कांग्रेस ने साधन संपन्न मध्य प्रदेश को, समर्थ युवाओं वाले मध्य प्रदेश को, बीमारू बना दिया। यहां के युवाओं ने कांग्रेस के जमाने की खराब कानून व्यवस्था नहीं देखी। यहां के युवाओं ने उस दौर की खस्ताहाल सड़कें नहीं देखी। यहां के युवाओं ने अंधेरे में जीने को मजबूर गांव और शहर नहीं देखे। अपने हर कार्यकाल में भाजपा ने MP को नई ऊर्जा के साथ नई ऊंचाई पर ले जाने का प्रयास किया है। इसलिए यहां के युवाओं ने भाजपा का सुशासन ही देखा है। उन्होंने चारों तरफ से विकास करता मध्य प्रदेश ही देखा है। उन्होंने मध्य प्रदेश को देश के अग्रणी गेहूं उत्पादक राज्यों के रूप में देखा है। उन्होंने मध्य प्रदेश को शिक्षा के उभरते केंद्र के रूप में देखा है। और इसलिए आने वाले चुनाव बहुत अहम है। हमें ध्यान रखना है कि विकास का जो रास्ता MP के लोगों ने बनाया है, उस विकास की गाड़ी सड़क से उतरे नहीं, भटके नहीं और अटके भी नहीं। हम अपने आसपास देख रहे हैं कि जब इन्हें राजस्थान में मौका मिला तो कैसे कांग्रेस वहां सिर्फ बर्बादी लाई। हमने महाराष्ट्र में देखा है कि कैसे कांग्रेस ने गठबंधन में शामिल होकर लूट को ही अपना नंबर वन काम बना लिया।

मध्य प्रदेश के विकास के लिए आने वाले कुछ साल बहुत ही महत्वपूर्ण है। आज पूरी दुनिया से भारत में निवेश आ रहा है, अलग-अलग राज्यों

में आ रहा है। ये समय, भारत को, मध्य प्रदेश को विकसित बनाने का है, विकसित भारत बनाने का है। इतने महत्वपूर्ण समय में अगर कांग्रेस जैसी परिवारवादी पार्टी, हजारों करोड़ों के घोटाले का इतिहास रचने वाली पार्टी, वोटबैंक का तुष्टिकरण करने वाली पार्टी को जरा भी मौका मिल गया, तो मध्य प्रदेश को बहुत बड़ा नुकसान होगा। जहां-जहां कांग्रेस गई है उस राज्य को बर्बाद कर दिया है। मध्य प्रदेश को बचाना चाहिए कि नहीं बचाना चाहिए। कांग्रेस के हाथों नही जाने देना चाहिए ना। लूटने नहीं देना चाहिए ना, तबाही नहीं करनी देनी चाहिए ना। कांग्रेस, एक बार फिर MP को बीमारू बना देगी। क्या आप MP को फिर से बीमारू बनाना चाहते हैं? क्या आप MP के युवाओं के भविष्य को तबाह करना चाहते हैं? क्या आप चाहते हैं कि MP के विकास का पैसा कांग्रेस नेता लूट लें?

कांग्रेस के पास भविष्य की सोच ही नहीं बची है। कांग्रेस, जंग लगा हुआ वो लोहा है, जो बारिश में रखे-रखे खत्म हो जाता है। अब कांग्रेस में ना देखने का सामर्थ्य बचा है, ना देशहित को समझने का।

इसलिए आप देखेंगे कांग्रेस विकसित भारत से जुड़े हर प्रोजेक्ट की आलोचना करती है। कांग्रेस ने डिजिटल इंडिया का भी विरोध किया था। आज भारत के UPI से पूरी दुनिया मंत्रमुग्ध है। भारत में रिकॉर्ड डिजिटल लेनदेन हो रहे हैं। लेकिन कांग्रेस को ये भी पसंद नहीं है।

भाजपा आज आधुनिक सड़कें , आधुनिकतम सड़कें, चौड़े हाईवे-एक्सप्रेस वे बना रही है। लेकिन कांग्रेस इसकी आलोचना करती है। भाजपा आज वंदे भारत जैसी आधुनिक ट्रेनें ला रही है, स्टेशनों का कायाकल्प कर रही है। भोपाल के रानी कमलापति रेलवे स्टेशन की प्रशंसा हर कोई कर रहा है। ये भी कांग्रेस को नहीं पच रहा है। भाजपा बुलेट ट्रेन पर काम कर रही है- इसकी भी कांग्रेस आलोचना करती है। भाजपा सरकार ने नया भव्य संसद भवन बनाया। आने वाली सदियों तक देश की सेवा करे ऐसा भारत का अपना संसद भवन बना। पूरा देश इसकी भूरी-भूरी प्रशंसा कर रहा है। लेकिन कांग्रेस ने पहले ही दिन से इसका विरोध करना शुरू कर दिया। अब भी नकारात्मकता फैला रहा है कांग्रेस वाले। भारत कुछ भी नया करे, भारत कोई भी उपलब्धि हासिल करे, कांग्रेस को बिल्कुल पसंद नहीं आता है।

देश का नाम रोशन हो तो आपको खुशी होती है कि नहीं होती है.. देश की इज्जत बढ़े तो आपको खुशी होती है कि नहीं होती है... देश का मान बढ़े तो आपको गौरव होता है कि नहीं होता है। आपको होता है, कांग्रेस वालों को नहीं होता है। क्योंकि कांग्रेस ना खुद बदलना चाहती है और ना ही देश को बदलने देना चाहती है।

देश समृद्धि की तरफ बढ़ने के लिए घोर परिश्रम कर रहा है। लेकिन कांग्रेस देश को 20वीं शताब्दी में ले जाना चाहती है। मैं मध्य प्रदेश के युवा साथियों को, हमारे फर्स्ट टाइम वोटर्स को एक बात जरूर बताना चाहता हूं। युवा साथियों आपके माता-पिता, आपके दादा-दादी को अभाव में रखने के लिए कांग्रेस ही जिम्मेदार है। उनको मुसीबत में जीने के लिए मजबूर करने वाली एकमात्र पार्टी कांग्रेस पार्टी है। आज दुनिया भारत को लेकर जो कुछ कह रही है, ये सारे गौरवपूर्ण काम पहले भी हो सकता था। लेकिन कांग्रेस सिर्फ एक परिवार का गौरवगान करने में ही जुटी रही। कांग्रेस ने प्रजातंत्र को परिवारतंत्र बना दिया। कांग्रेस भारत में भ्रष्ट व्यवस्था को पोषित करने में ही जुटी रही। कांग्रेस की राजनीति अभाव में फलती-फूलती है, गरीबी और मुश्किलों में फलती-फूलती है। इन्होंने ऐसी व्यवस्था बनाई कि गरीब को हमेशा हाथ फैलाना पड़े, हर चीज के लिए निर्भर रहना पड़े। गरीब को तरसाकर, कांग्रेस को ये जताने का अवसर मिल जाता था कि उन्होंने गरीब को कुछ दिया है। ये अपनी योजनाओं का लाभ भी उन लोगों को देते थे जिनसे उन्हें वोट मिलते थे। इसलिए कांग्रेस ने जानबूझकर देश को गरीब रखा, देश के लोगों को अभाव में जीने के लिए मजबूर किया। रोटी-कपड़ा-मकान में ही उलझाए रखा।

जो मुश्किलें आपके माता-पिता से पहले की पीढ़ियों ने झेली, वो अब आपको और आपके बच्चों को ना झेलनी पड़े, इसके लिए भाजपा की डबल इंजन सरकार लगातार काम कर रही है। हमारे प्रेरणापुंज, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने सुशासन को अंत्योदय से जोड़कर देखा, समाज के अंतिम व्यक्ति के विकास को प्राथमिकता दी। अंत्योदय की यही प्रेरणा, सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास, उस मंत्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का चिंतन है, वह हमें प्रेरित करती है। बीते 9 वर्षों में हमने जो भी योजनाएं बनाईं उनके मूल में यही भावना है। भाजपा ने गरीबों, महिलाओं, शोषितों-वंचितों- SC-ST-OBC को विकास का सबसे बड़ा लाभार्थी बनाया है। वंचितों को वरीयता की जो गारंटी मोदी ने दी है, उसे हमने एक के बाद एक कदम उठाकर पूरा किया है। हमने गरीब का जीवन बेहतर करने के लिए प्रयास किए, प्रामाणिक प्रयास किए।

समाज में जो अभाव था, उसको दूर किया। और जानते हैं इसका नतीजा क्या मिला है? आपको पता है ना कि कांग्रेस ने 50 साल पहले गरीबी हटाओ का नारा दिया था। क्या कांग्रेस ने अपना वायदा पूरा किया ?

साढ़े 13 करोड़। कितना?

ये मध्य प्रदेश की कुल आबादी से भी ज्यादा है। भाजपा सरकार के 5 साल में ही देश में साढ़े 13 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। गरीबों का कल्याण करना अपना काम है। हम अपना काम पूरा कर रहे हैं। ये जो साढ़े तेरह करोड़ की मैं बात कर रहा हूं ना मतलब कि MP की कुल आबादी से भी ज्यादा लोग, भाजपा सरकार ने देश में गरीबी से बाहर निकाले हैं।

ये मोदी की गारंटी का नतीजा है। और जब मोदी गारंटी देता है, जब भाजपा गारंटी देती है, वो जमीन पर उतरती है, घर-घर पहुंचती है । हर लाभार्थी तक पहुंचती है। मोदी यानि हर गारंटी पूरी होने की गारंटी!

मध्य प्रदेश की बहनों को मोदी ने जो गारंटी दी थी, वो भी पूरी हो गई है। कुछ दिन पहले ही लोकसभा और राज्यसभा में माताओं-बहनों-बेटियों के लिए 33 प्रतिशत सीटें आरक्षित करने का कानून पारित हुआ है। नारी शक्ति वंदन अधिनियम ने देश में नया इतिहास रच दिया है। दशकों-दशक से देश की माताएं-बहनें, इसका इंतजार कर रही थीं। बल्कि ये तक कहा जाने लगा.. कि शायद ये कभी हो ही ना पाए। आखिर मोदी है तो, मोदी है.. तो.. हर गारंटी पूरी होने की गारंटी है। कांग्रेस और उसके नए-नए घमंडिया गठबंधन ने इस बिल का समर्थन बहुत खट्टे मन से किया है, बहुत बेमन से किया है। ये खट्टापन, उनके बहानों में दिखाई देता है। इनके गठबंधन में वही लोग है जिन्होंने तीस साल तक इस कानून को पारित नहीं होने दिया। पार्लियामेंट में हुड़दंग किया, बिल फाड़ दिए, स्पीकर पर हमले बोल दिए, और जब मजबूरी में उंगली उठानी पड़ी है, उनको तो लगता है कि अब देश की माताएं-बहनें उनके चरित्र को जान गई है, तब क्या शुरू किया, ये क्यों नहीं है, वो क्यों नहीं है, ऐसा क्यों है, वैसा क्यों नहीं है। उनको नारी शक्ति वंदन अधिनियम का मजबूरी में समर्थन इसलिए करना पड़ा क्योंकि मेरी माताए-बहनें जग गई हैं.. मेरी माता-बहनों का हौसला बुलंद है। मेरी माता-बहनों ने शक्ति का परिचय करवा दिया है और इसलिए ये माताओं और बहनों से डरे हुए हैं। इसलिए नीची मुंडी करके हाउस में अनचाहे अनमन से उंगली तो दबा दी। बीते 9 वर्षों में जिस तरह भारत की महिला सशक्त हुई है, उसे देखकर इन दलों की हिम्मत नहीं हुई की नारी शक्ति अधिनियम का विरोध कर पाएं। वरना इन्होंने तो दशकों तक देश में सरकारें चलाई

हैं। भारी बहुमत से सरकारें चलाई हैं। तब क्यों नहीं ये कानून बनाया? जो बहाने ये आज बना रहे हैं, तब क्यों नहीं ये सब कुछ कर दिया? सच्चाई ये है कि इनकी नीयत में खोट है।

इसलिए मौका मिलते ही ये घमंडिया गठबंधन के लोग माताओ-बहनों को धोखा देने का तय कर के बैठे हैं तैयार बैठे हैं। कांग्रेस के घमंडिया साथी, वही हैं जिन्होंने इस कानून को रोकने के लिए हर मर्यादा तोड़ी है। इनकी वो सोच आज भी नहीं बदली है। ये लोग बहुत बौखलाए हुए हैं। ये अब नया खेल खेलेंगे... पक्का मानिए, और ना क्या खेल खेलेंगे? ये नारी शक्ति को बांटने की पूरी कोशिश करेंगे। नारी शक्ति एक न हो इसलिए भांति-भांति की अफवाहें फैलाएंगे इसलिए देश की हर माता-बहन-बेटी को सावधान रहना होगा, सतर्क रहना होगा, और एकजुट रहना ही होगा। ये वही लोग हैं, जिन्होंने देश की पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति, द्रौपदी मुर्मू जी को राष्ट्रपति बनने से रोकने का भरसक प्रयास किया। ये लोग बार-बार उनको अपमानित करने का प्रयास करते हैं। ये वही लोग हैं, जिन्होंने देश की सेनाओं के अग्रिम मोर्चों में बेटियों की एंट्री को रोककर रखा था। अगर इनकी नीयत ठीक होती, तो क्या मोदी को करोड़ों बहनों के नाम पक्के घर करने देते, और मुझे ये काम करना पड़ता? उनकी नीयत ठीक नहीं थी, इसलिए आज वो काम मुझे करना पड़ रहा है। आजादी के इतने सालों बाद करना पड़ रहा है। इनको नहीं दिखता था कि सब कुछ पुरुष के नाम पर है, महिलाओं के नाम पर कुछ नहीं? अगर इनकी नीयत महिला हित की होती, तो क्या मोदी को आकर के करोड़ों टॉयलेट बनाने पड़ते? क्या टॉयलेट नहीं बना सकते थे ये लोग... वो काम भी मुझे ही करना पड़ा, उनकी नीयत में ही खोट थी। अंधेरे का इंतजार करती माताओं-बहनों को देखकर इनकी आंखों में क्यों पानी नहीं आता था? इनकी नीयत ठीक होती तो, बहनों को धुएं में जीने को मजबूर होना न पड़ता। करोड़ों बहनों तक गैस सिलेंडर पहुंचाने की मेहनत मोदी को क्यों करनी पड़ी? ये महिलाओं के हितैषी होते तो, महिलाओं को पानी की बूंद-बूंद के लिए दशकों तक तरसा कर ना रखते।

ये महिलाओं के हित में काम करते तो मोदी को आकर आयुष्मान योजना के तहत मुफ्त इलाज की व्यवस्था ना करनी पड़ती। ये अगर महिला हितैषी होते तो हमें बेटियों को बचाने और उन्हें पढ़ाने के लिए आवाज ना उठानी पड़ती। इन्होंने तो महिलाओं को बैंकों से भी दूर रखा। देश की करोड़ों बहनों के जनधन खाते आपके इस सेवक को खुलवाने पड़े। हमारी कोशिश यही थी कि बहनों की समृद्धि का रास्ता खुले, बेटियां अपने पैरों पर खड़ी हो सके। इसलिए मैं देश की हर माता-बहन-बेटी से कहूंगा कि कोई कितनी भी कोशिश कर ले, आपको भ्रमित नहीं होना है। हमने एक कठिन रास्ता पार किया है। ये महिलाओं की भागीदारी के विस्तार की शुरुआत है। ये एक सार्थक बदलाव का शुभारंभ है।

कांग्रेस आज भी उसी पुराने ढर्रे, उसी पुरानी मानसिकता पर चल रही है। चांदी का चम्मच लेकर पैदा हुए इनके नेताओं के लिए गरीब का जीवन मायने नहीं रखता है। कांग्रेस के नेताओं के लिए गरीब का जीवन एक एंडवेचर टूरिज्म है। कांग्रेस के नेताओं के लिए गरीब की बस्ती, पिकनिक मनाने, वीडियो शूटिंग कराने का लोकेशन बन गई है। कांग्रेस के लिए गरीब किसान का खेत, फोटो सेशन का मैदान बन गया है। इन्होंने अतीत में भी यही काम किया, देश-विदेश के अपने दोस्तों में इन्होंने भारत की गरीबी का माखौल उड़ाया और आज भी यही कर रहे हैं। जबकि भाजपा की सरकार भारत को भव्य भी बना रही है और यही भव्य तस्वीर दुनिया के सामने सीना तान कर के दिखा भी रहे हैं। कांग्रेस और भाजपा के बीच का यही अंतर हमें बूथ-बूथ में, हर वोटर को बताना है, हर मतदाता को समझाना है।

मोदी का मिजाज भी अलग है, मेहनत भी अलग है और मिशन भी अलग है। मेरे लिए देश से बड़ा, देशवासियों से बड़ा कुछ भी नहीं है। मैं अभावों में रहा हूं लेकिन अपने देश को अभावों में नहीं रहने दे सकता। मुफ्त राशन और मुफ्त इलाज, गरीब की चिंता दूर करने का अवसर कांग्रेस के पास भी था। लेकिन नीयत और इच्छा शक्ति नहीं थी। बेईमानी और भ्रष्टाचार की नीयत, ऐसा करने से उन्हें रोकती थी। पहले समाज के जिन वर्गों को छोटा समझा गया, उनके जीवन में बड़े परिवर्तन का प्रयास हमने किया है। गरीब से गरीब को गुणवत्ता का जीवन मिले, आज देश में इसके लिए काम किया जा रहा है। कुछ दिन पहले ही, पीएम विश्वकर्मा योजना शुरु हुई। देशभर में हमारे विश्वकर्मा साथी कोने-कोने में फैले हुए हैं। कोई ऐसा गांव नहीं होगा जहां कोई ना कोई विश्वकर्मा परिवार रहता ना हो। अपनी परंपरा, अपनी कला, अपनी उपयोगिता के लिए जाने-जाने वाले ये साथी हर समाज में हैं। लेकिन कांग्रेस ने उन्हें क्या दिया? कांग्रेस ने उन्हें अपने हाल पर छोड़ दिया था। आपने एक वोट देकर इस सेवक को आपकी सेवा करने का अवसर दिया। आज हमारे कुम्हार भाई-बहन, लोहार भाई-बहन, सुनार भाई-बहन, सुतार भाई-बहन, जूते बनाने वाले, राजमिस्त्री, दर्जी, ऐसे दर्जनों साथियों के लिए राष्ट्रीय विश्वकर्मा योजना बनी है। इनकी ट्रेनिंग का इंतजाम हुआ है। लाखों रुपए के लोन की व्यवस्था हुई है। और विश्वकर्मा साथियों के लिए जो ये कम ब्याज का लोन मिलेगा, उसकी गारंटी मोदी ने ली है, सरकार ने ली है।

हमने रेहड़ी, पटरी, ठेले पर छोटा-मोटा कारोबार करने वाले साथियों के लिए भी बैंकों के दरवाजे खोले हैं। पीएम स्वनिधि योजना के तहत इनकी मदद की गारंटी भी मोदी ने ली है। गांव में, कस्बों में हमारे साथी, अपनी दुकान, ढाबा, गेस्ट हाउस, ऐसे व्यवसाय कर सकें, ये पहले बहुत मुश्किल था। उनके पास गारंटी नहीं होती थी, इसलिए बैंक से उन्हें मदद मिलना मुश्किल था। मोदी ने ऐसे साथियों की गारंटी भी ली। मुद्रा योजना के तहत लाखों का बिना गारंटी का पैसा उन्हें मिल रहा है। इस योजना की सबसे बड़ी लाभार्थी हमारी बहनें हैं, हमारे दलित भाई-बहन हैं, पिछड़े परिवार है, हमारे आदिवासी साथी हैं। हमारे छोटे किसानों, पशुपालकों और मछुआरों की तो सरकारी नीतियों में पूछ ही बहुत कम होती थी। कांग्रेस की सरकारें वोट पाने के लिए किसानों को लोन माफी की झूठी गारंटी देती रही हैं।

लेकिन छोटे किसानों, पशुपालकों के लिए तो बैंक से लोन लेना असंभव था। वे तो छोटी-छोटी जरूरतों के लिए बाजार से महंगा ब्याज लेते थे। महंगे ब्याज पर पैसे लेते थे। इसलिए आपके इस सेवक ने पीएम किसान सम्मान निधि के तहत, छोटे किसानों की भी गारंटी ली। जब पीएम किसान योजना हमने शुरु की थी, तब कांग्रेस ने इसको लेकर कितना झूठ फैलाया था। कहा जाता था कि चुनाव होने के बाद मोदी ये पैसे वापस ले लेगा। लेकिन पीएम किसान सम्मान निधि 5 साल से निरंतर चल रही है। कोरोना काल में जब सब कुछ रुक गया था, तब भी ये नहीं रुकी। क्योंकि हमारी सरकार ने डायरेक्ट आपके खाते में पैसा भेजने का प्रावधान किया है। अभी तक ढाई लाख करोड़ रुपए से अधिक देशभर के किसानों को मिल चुके हैं। इसमें मध्य प्रदेश के हर किसान के बैंक खाते में करीब 30 हजार रुपए तक पहुंचे हैं। भाजपा सरकार ने छोटे किसानों के साथ ही पशुपालकों और मछुआरों को भी किसान क्रेडिट कार्ड जैसी सुविधाएं दी हैं।

मध्य प्रदेश में हमारी धरोहर के दर्शन होते हैं। देवी अहिल्याबाई और रानी दुर्गावती, सहित हमारे अनेक पूर्वजों ने भारत की विरासत को समृद्ध करने में भूमिका निभाई है। लेकिन कांग्रेस और उसका घमंडिया गठबंधन हमारी इस विरासत को, सनातन को, समाप्त करना चाहता है। इसलिए भी ऐसे दलों से मध्य प्रदेश को बहुत सावधान

रहना होगा। मैं देश के लोगों को, मध्य प्रदेश के लोगों को एक और बात बताना चाहता हूं। कांग्रेस ने अपनी सारी इच्छा शक्ति खो दी है। हम देखते हैं कि कुछ समय से कांग्रेस के जमीन से जुड़े नेता चुपचाप मुंह पर ताला लगाकर बैठ गए हैं। कांग्रेस पहले बर्बाद हुई, अब बैंकरप्ट हुई और अब कांग्रेस ने अपना ठेका दूसरों को दे दिया है। कांग्रेस को अब कांग्रेस के नेता नहीं चला रहे। अब कांग्रेस एक ऐसी कंपनी बन गई है, नारों से लेकर नीतियां तक हर चीज आउटसोर्स कर रही है। और ये ठेका किसके पास है...जानते हैं? कांग्रेस का ठेका अब कुछ अर्बन नक्सलियों के पास है। कांग्रेस में अब अर्बन नक्सलियों की ही चल रही है। ये ग्राउंड पर कांग्रेस का हर कार्यकर्ता महसूस कर रहा है। इसलिए कांग्रेस, जमीन पर भी लगातार खोखली हो रही है।

आज भारत एक बहुत ही महत्वपूर्ण कालखंड में प्रवेश कर चुका है। पूरा विश्व कह रहा है कि ये भारत का कालखंड है। हर देश भारत से मित्रता करना चाहता है। हर निवेशक भारत में अवसर देख रहा है। हमारे चंद्रयान का गौरवगान पूरा विश्व कर रहा है। कुछ दिन पहले हुए जी 20 सम्मेलन में भारत की भूमिका और सशक्त हुई है। ये इसलिए हो रहा है क्योंकि आपने देश में एक स्थिर और मजबूत सरकार चुनी। आपने ऐसी सरकार चुनी जो चुनौतियों को चुनौती दे सकती है। हजार वर्ष की गुलामी के कालखंड में हमने जो आत्मविश्वास खोया, आज भारत उस आत्मविश्वास को जी रहा है। आज हम जो फैसले लेंगे, वो आने वाले हजार साल की हमारी यात्रा को तय करने वाले हैं। ये सब कुछ मध्य प्रदेश की भागीदारी के बिना संभव नहीं है। विकसित भारत के लिए मध्य प्रदेश का विकसित होना बहुत आवश्यक है। ऐसा विकसित मध्य प्रदेश जहां हर व्यक्ति, हर परिवार का जीवन वैसा ही हो, जैसा विकसित देशों में हमने देखा है। हमें ऐसे मध्य प्रदेश का निर्माण करना है, जो छोटी-छोटी जरूरतों का मोहताज ना रहे। हमें मध्य प्रदेश को नए अवसरों की धरती बनाना है। इसके लिए ये जरूरी है कि आने वाले 5 वर्ष के लिए यहां फिर से भाजपा सरकार बने, पूर्ण बहुमत की स्थिर भाजपा सरकार बने। भाजपा के पास रोडमैप भी है और उसे जमीन पर उतारने की इच्छा शक्ति भी है। इसलिए मध्य प्रदेश के हर कार्यकर्ता की जिम्मेदारी बहुत बड़ी है। हमें विधानसभा ही नहीं, बल्कि हर बूथ जीतना है, हर बूथ पर लोगों का दिल जीतना है। बूथ का हर कार्यकर्ता हमारा उम्मीदवार है। क्योंकि उसकी पहचान कमल है, उसकी शान कमल है, उसका निशान कमल है। इसलिए हर कार्यकर्ता को जी-जान से जुटना है।

दो महीने पार्टी को अपना अमूल्य समय देकर दो तिहाई बहुमत से सरकार बनाएं: शिवराज सिंह चौहान

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश निरंतर आगे बढ़ रहा है। आने वाले पांच वर्षों में मध्य प्रदेश भारत का नंबर वन राज्य बनेगा। आपके बढ़ते हुए उत्साह को देखकर आज कह सकता हूँ कि भारतीय जनता पार्टी फिर दो तिहाई बहुमत से मध्यप्रदेश में सरकार बनायेगी। चुनाव में सिर्फ दो माह शेष हैं, यह दो महीने भारतीय जनता पार्टी को चुनाव प्रचार के लिए दीजिए। अपने बूथ पर हम भारी बहुमत से भाजपा को जिताएंगे, यह संकल्प लेकर यहां से जायें। भारतीय जनता पार्टी हमारी माँ है और प्रत्येक कार्यकर्ता को दूध की लाज रखनी है और अपने बूथ को जिताकर फिर से सरकार बनानी है। हमें आने वाले विधानसभा चुनावों में ऐतिहासिक जीत दर्ज करनी है और 2024 में मोदी जी को 29 में से 29 सीटें जीतकर मध्यप्रदेश से उनके गले में 29 कमल की माला पहनानी है। प्रत्येक कार्यकर्ता संकल्प ले कि प्रत्येक बूथ जीतेंगे, विधानसभा जीतेंगे और भाजपा को भारी बहुमत से विजयी बनाकर एक वैभवशाली, गौरवशाली और समृद्ध भारत के निर्माण में हम सहयोगी बनेंगे। कांग्रेस ने अपने काले दौर में मध्यप्रदेश को बीमारू राज्य बना दिया था, उस कलंक को मिटाने का काम भाजपा सरकार ने किया है। कांग्रेस के शासनकाल में 60 हजार किलोमीटर टूटी-फूटी गड्ढों वाली सड़क होती थी, आज प्रदेश में शानदार 5 लाख किलोमीटर सड़कें बनाई गईं हैं। कांग्रेस के समय दो-तीन घंटे बिजली आती थी और बिजली का उत्पादन 2900 मेगावाट था। आज प्रदेश में 29 हजार मेगावाट बिजली का उत्पादन हो रहा है। डबल इंजन की सरकार ने मध्यप्रदेश में तेजी से विकास किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने नई संसद के शुभारंभ के पहले दिन ही महिला सशक्तिकरण कानून बनाकर 33 प्रतिशत बहनों को लोकसभा एवं राज्यसभा में आरक्षण दिया है। यह ऐतिहासिक काम इसलिए संभव हुआ है कि मोदी है तो मुमकिन है।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम लाकर मोदी जी ने इतिहास बनाया: विष्णुदत्त शर्मा

देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में जी-20 देशों की सफलता पूर्वक अध्यक्षता की एवं देश में महिलाओं की 50 प्रतिशत आबादी के लिए नारी शक्ति वंदन अधिनियम लाकर 33 प्रतिशत आरक्षण देकर इतिहास बनाने का काम किया है।

देश में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के विचार को प्रतिपादित कर गरीब कल्याण की योजनाओं से गरीबों का जीवन बदलने का काम किया है। प्रधानमंत्री जी ने 25 जून को मेरा बूथ-सबसे मजबूत अभियान दिया था, उस बूथ सशक्तिकरण के अभियान को कार्यकर्ताओं की महाशक्ति ने जमीन पर उतारने का संकल्प पूरा किया है।

मध्यप्रदेश में प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत 44 लाख परिवारों को पक्का मकान और आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत 3 करोड़ 60 लाख परिवारों को मुफ्त इलाज मिला है। प्रदेश में महिला सशक्तिकरण की दृष्टि से लाड़ली लक्ष्मी योजना एवं लाड़ली बहना योजना संचालित हो रही हैं।

मध्यप्रदेश में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रयासों से केंद्र एवं राज्य की डबल इंजन की सरकारों द्वारा चलाये गये गरीब कल्याण के महाअभियान से 1 करोड़ 36 लाख गरीब गरीबी रेखा से ऊपर आएं हैं। प्रधानमंत्री जी ने प्रदेश के विकास को ताकत दी है और गरीब का जीवन बदलने का जो अभियान चलाया है, इसलिए आज लाखों लाख कार्यकर्ता मोदी जी का आशीर्वाद लेने के लिए यहां उपस्थित हुए हैं।

विधानसभा चुनाव एवं 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव में इतिहास बनाने के लिए भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता तैयार हैं।

हमारी संस्कृति, धर्म और संस्कारों पर चोट कर रहा है घमंडिया गठबंधन: जे.पी. नड्डा

भाजपा को मिलेगा भरपूर आशीर्वाद, फिर बनेगी भाजपा की सरकार

2002 से पहले मध्यप्रदेश शिक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य, उद्योग हर क्षेत्र में पिछड़ा हुआ और बीमारू राज्य था।

आज यह विकसित प्रदेश के रूप में जाना जाता है।

जब हम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में लगे हैं। चांद और सूरज को जीतने की कोशिश में लगे हैं। जब दुनिया के सबसे ताकतवर देशों के प्रतिनिधि भारत में जी 20 के लिए एकत्र हो रहे हैं और भारत की जय जयकार सारी दुनिया में हो रही है। ऐसे समय में घमंडिया गठबंधन हमारी संस्कृति पर, हमारे धर्म पर, हमारे संस्कारों पर और भारत की सोच पर बहुत गहरा आघात करने का प्रयास कर रहा है। इससे पूरा भारत आक्रोशित है और पीड़ा में है।

2002 से पहले मध्यप्रदेश शिक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य, उद्योग हर क्षेत्र में पिछड़ा हुआ और बीमारू राज्य था। आज यह विकसित प्रदेश के रूप में जाना जाता है। 2002 में मध्यप्रदेश में जनता की प्रति व्यक्ति आय केवल 11,171 रुपये थी, आज यह 1.40 लाख रुपये है। 2002 में केवल 7000 किमी सड़क बनी थी, आज 5 लाख किमी से अधिक सड़क है। 2002 में एमपी में मेडिकल सीटें केवल 620 थी, आज 4000 से अधिक हैं। हमारी सरकार आने से पहले मध्यप्रदेश में केवल 310 कॉलेज थे, आज 536 हैं। पहले केवल 23 इंडस्ट्रियल एरिया थे, आज 112 इंडस्ट्रियल एरिया है। मध्यप्रदेश स्वच्छता, स्मार्ट सिटी, जल संरक्षण, पीएम स्वामित्व योजना, पीएम मातृत्व वंदन योजना, पीएम स्वनिधि योजना और पीएम आवास योजना में देश में पहले स्थान पर है। कांग्रेस की कमलनाथ सरकार ने पीएम आवास योजना की लिस्ट दिल्ली पहुँचने ही नहीं दी थी। इसके बावजूद मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जी ने केवल तीन वर्षों में एमपी को पीएम आवास योजना में नंबर एक पर पहुंचा दिया है।

5-जी के लक्ष्य के साथ देश को आगे ले जा रही भाजपा

जब हम 5-जी की बात करते हैं हमारे लिए इसके मतलब है- **ग्रोथ, गुड गवर्नेंस, गुडविल, गारंटी और गरीब कल्याण**। इस लक्ष्य के साथ देश को विकास के पथ आगे बढ़ाने में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है। मध्य प्रदेश की भाजपा सरकार ने भी उनकी नीतियों एवं उनकी योजनाओं को मध्य प्रदेश में जन-जन तक, घर-घर तक पहुंचाया है। प्रधानमंत्री जी के अथक प्रयासों के कारण बीते 9 सालों में लगभग साढ़े 13 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर निकले हैं। देश में अत्यंत गरीबी एक प्रतिशत से भी कम है। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत 9.5 करोड़ गरीब परिवारों को गैस कनेक्शन दिया गया। अब इसे विस्तार देते हुए और 75 लाख गैस कनेक्शन जारी किये जायेंगे। साथ ही प्रधानमंत्री जी ने देश की बहनों को रक्षाबंधन का तोहफा देते हुए हर गैस सिलेंडर पर 200 रुपये की सब्सिडी भी दी है। उज्ज्वला योजना के लाभार्थियों को प्रति गैस सिलिंडर पर 400 रुपये की बचत होगी। प्रधानमंत्री श्री

नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत 9 साल में ही दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। आज भारत मोबाइल उत्पादन में दूसरे स्थान पर, स्टील उत्पादन में दूसरे स्थान पर और ऑटोमोबाइल क्षेत्र में तीसरे स्थान पर है। आज भारत की आवश्यकता का 97 प्रतिशत मोबाइल मेड इन इंडिया होता है। भारत की अर्थव्यवस्था सबसे तेज गति से आगे बढ़ रही है। भारत चांद के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला पहला देश बन गया है। हमने आदित्य एल-1 की सफल लॉन्चिंग की है।

भाजपा की डबल इंजन वाली सरकार के कार्यकाल में प्रदेश तेजी से विकास कर रहा है। प्रदेश में अगले दो सालों में 34 रेलवे स्टेशन का आधुनिकीकरण होगा। इसकी आधारशिला कुछ ही दिन पहले प्रधानमंत्री जी ने रखी है। नेशनल हाइवे पर 33 हजार करोड़ रुपये खर्च हो रहे हैं। नर्मदा एक्सप्रेस हाइवे के लिए 31 हजार करोड़ रुपये, चंबल एक्सप्रेस हाइवे के लिए 8000 करोड़ रुपये और इंदौर से भोपाल तक मेट्रो के लिए लगभग 710 करोड़ रुपये आवंटित किये गए हैं। मध्यप्रदेश में केंद्र सरकार ने 14 मेडिकल कॉलेज दिए हैं। एशिया का सबसे बड़ा सोलर प्लांट 750 मेगावाट का रीवा में लगा है। मध्यप्रदेश में सरकारी नौकरियों में महिलाओं को 35 प्रतिशत आरक्षण दिया गया है।

शिक्षक भर्ती में 50 प्रतिशत तो पुलिस भर्ती में 33 प्रतिशत आरक्षण महिलाओं को दिया जा रहा है। प्रदेश के विकास की यह रफ्तार बनी रहे, इसके लिए प्रदेश में फिर से कमल का खिलना जरूरी है। प्रदेश में कुछ दिनों के लिए आई कांग्रेस की कमलनाथ सरकार करप्ट और भ्रष्टाचार से युक्त सरकार थी। ऐसी सरकार को प्रदेश में फिर कभी नहीं आने देना है।

देश पर आंख उठाने वालों को मुंहतोड़ जवाब देती है मोदी सरकार-विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सरकार देश पर आंख उठाने वालों को मुंहतोड़ जवाब देना जानती है। जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों ने हमारे सेना के अधिकारियों, जवानों को शहीद कर दिया था। हमारी सेना ने उन आतंकियों को घेर लिया और उन्हें बचकर निकलने का कोई अवसर नहीं दिया। ये प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का नेतृत्व है।

भारत की विकास दर 7.8 प्रतिशत

भारत की विकास दर वर्ष प्रति वर्ष 7.8 प्रतिशत की दर से कई अन्य प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की विकास दर से कहीं अधिक है। भारत की आर्थिक वृद्धि ने वित्त वर्ष 2023 की पिछली तिमाही में देखी गई सशक्त गति को बनाए रखा है।

कुल मिलाकर भारत की व्यापक आर्थिक स्थिरता और विकास की संभावनाएं इसके केंद्रीय बिंदु हैं। पहली तिमाही के सकल घरेलू उत्पाद के आंकड़ों ने सरकार के समग्र व्यापक-आर्थिक प्रबंधन के इन दो प्रमुख पहलुओं की पुष्टि की है, खासकर कोविड महामारी के वर्षों के दौरान इसकी महत्ता उजागर हुई है। केंद्रीय और राज्य दोनों ही स्तरों पर पूंजीगत व्यय में वृद्धि के साथ-साथ विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में सशक्त उपभोग मांग और सेवा क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन के कारण पहली तिमाही में भारत की अर्थव्यवस्था एक वर्ष में सबसे तेज गति से बढ़ी है।

भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए सबसे महत्वपूर्ण व सकारात्मक तथ्य यह है कि निजी क्षेत्र का पूंजी निर्माण बहुत शानदार तरीके से और अच्छी तरह से चल रहा है। यह भविष्य में रोजगार तथा भारतीय परिवारों की आय वृद्धि के लिए अच्छा संकेत है। निजी क्षेत्र द्वारा घोषित नई निवेश परियोजनाएं वित्त वर्ष 2023-24 की पहली तिमाही में 14 वर्षों में सबसे अधिक रही हैं।

एफएमसीजी की ग्रामीण मांग विशेष रूप से उच्च मूल्य वाली वस्तुओं के लिए बढ़ी हुई है। यही प्रवृत्ति छोटे शहरों के लिए भी स्पष्ट है, जो विकास में योगदान दे रहे हैं।

वैश्विक मंदी होने के बावजूद देश के सेवा क्षेत्र में निर्यात ने उल्लेखनीय प्रदर्शन दिखाया है। विनिर्माण एवं सेवा दोनों ही क्षेत्रों का विस्तार हो रहा है और यह ग्रामीण मांग में सुधार से आय में वृद्धि स्पष्ट है।

- आवासीय रियल एस्टेट क्षेत्र निर्माण सामग्री सेक्टर में विकास को बढ़ावा देगा।
- पिछले कुछ वर्षों में पूंजीगत व्यय पर केंद्र सरकार का एकाग्र ध्यान निजी क्षेत्र पर बढ़ गया है और इसका असर राज्य सरकारों पर भी पड़ा है। इन सब के बावजूद मुद्रास्फीति का प्रभाव नियंत्रण में है।
- निवेश और उपभोक्ता आवेग आगामी वर्ष में ठोस विकास संभावनाओं को सशक्त बनाएगी।
- सरकार के कैपेक्स प्रोत्साहन द्वारा प्राप्त सहयोग से कॉर्पोरेट और बैंक बैलेंस शीट की मजबूती के बाद निजी क्षेत्र सशक्त निवेश वृद्धि में योगदान देने के लिए तैयार है।
- बाजार में ताजा स्टॉक आने और सरकार के एहतियाती उपायों से खाद्य मुद्रास्फीति कम होने की काफी संभावना है।
- सार्वजनिक डिजिटल प्लेटफार्म के विस्तार तथा पीएम गतिशक्ति, राष्ट्रीय लॉजिटिक्स नीति और प्रोडक्शन-लिंक्ड प्रोत्साहन योजनाओं जैसे अग्रणी उपायों से विनिर्माण उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा।

गरीब कल्याण करने वाली भाजपा: अमित शाह

कांग्रेस के जमाने में पाकिस्तान से आतंकी आते थे और हमारे जवानों का सिर कलम करके ले जाते थे। उन्हें पता नहीं था कि देश में अब मोदी जी की सरकार है। उन्होंने पुलवामा और उरी में हमला किया, तो हमारी सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक के जरिए आतंकियों के घर में घुसकर उनका सफाया कर दिया।

दो विचारधाराओं के बीच चुनाव करना है। एक तरफ बंटाढार और करप्शननाथ वाली कांग्रेस है, जो कहती है कि देश के संसाधनों पर पहला अधिकार अल्पसंख्यकों का है। दूसरी तरफ मोदी जी के नेतृत्व वाली भाजपा है, जो गरीबों, आदिवासियों को सम्मान देती है। आपको तय करना है कि बंटाढार और करप्शननाथ की सरकार चाहिए या विकास करने वाली, गरीब कल्याण करने वाली भाजपा की डबल इंजन सरकार चाहिए।

आदिवासियों के सम्मान और विकास के क्षेत्र में मध्यप्रदेश ने दिखाया नया रास्ता

1857 में जब देश के कई राजे-रजवाड़े अंग्रेजों से समझौता कर रहे थे, राजा शंकरशाह और रघुनाथ शाह ने देश की आजादी के लिए अपने सीने पर अंग्रेजों की तोप के गोले झेले और जीवन बलिदान कर दिया। उनका बलिदान पूरे देश के युवाओं को प्रेरणा देता है। कांग्रेस ने ऐसे बलिदानी वीरों के सम्मान और आदिवासियों के विकास के लिए कुछ नहीं किया। कांग्रेस जल, जंगल और जमीन की सुरक्षा की बात करती थी, लेकिन मोदी जी ने हमारे जनजातीय समाज को सुरक्षा और सम्मान से जीने का अधिकार भी दिया है। स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार ने अलग से आदिवासी मंत्रालय बनाया और प्रधानमंत्री मोदी जी की सरकार ने 23 और जातियों को जनजातीय वर्ग में शामिल किया। भगवान बिरसा मुंडा के जन्मदिवस को देश में जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत मोदी जी की सरकार ने की, देश में जनजातीय संग्रहालय बनाए। कांग्रेस सरकार के समय आदिवासियों का बजट 24 हजार करोड़ था, जिसे मोदी जी ने 1,19000 करोड़ तक पहुंचा दिया। एकलव्य स्कूलों के लिए 287 करोड़ का प्रावधान किया। कांग्रेस ने किसी आदिवासी नेता को आगे नहीं बढ़ने दिया, जबकि मोदी जी ने एक गरीब, आदिवासी परिवार की बहन द्रोपदी मुर्मू को राष्ट्रपति बनाया है। राजा शंकरशाह और रघुनाथशाह का भव्य स्मारक जबलपुर में बनाया जा रहा है। मध्यप्रदेश सरकार ने देश में सबसे पहले पेसा एक्ट लागू किया। दो साल पहले आदिवासी सम्मेलन में मुख्यमंत्री शिवराज जी ने 17 घोषणाएं की थीं और दो सालों में ये सारी घोषणाएं पूरी हो चुकी हैं। मध्यप्रदेश ने आदिवासी कल्याण के क्षेत्र में देश को नया रास्ता दिखाया है।

20 साल पहले प्रदेश में बंटाढार की सरकार थी, जिसने प्रदेश को बीमारू बनाकर छोड़ दिया था। हर तरफ भ्रष्टाचार और लूट-खसोट मची हुई थी। सड़कें गड्ढों से भरी थीं। खेतों को पानी नहीं मिलता था और घरों में बिजली नहीं आती थी। महिला सुरक्षा का अभाव था। इसके बाद आई भाजपा की सरकार ने बीमारू राज्य को बेमिसाल राज्य बनाया। इसके बाद आई कमलनाथ सरकार ने भाजपा सरकार द्वारा शुरू की गई गरीब कल्याण की 51 योजनाएं बंद कर दीं। सीएमओ को मनी कलेक्शन ऑफिस बना दिया और कांग्रेस वर्किंग कमेटी करप्शन वर्किंग कमेटी बन गई थी। मुख्यमंत्री कमलनाथ ने अपने इस्तीफे से 15 मिनट पहले 65 हजार करोड़ का मोबाइल घोटाला किया। कमलनाथ 350 करोड़ के मोजर बेयर घोटाले, 2400 करोड़ के अगस्ता वेस्टलैंड घोटाले, 600 करोड़ के इफको घोटाले, 25 हजार करोड़ की किसान कर्जमाफी धोखाधड़ी और 1178 करोड़ के किसानों के बोनस घोटाले से संबद्ध रहे हैं और उस सरकार ने भ्रष्टाचार के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिये। इसके बाद फिर शिवराज जी की सरकार बनी और मोदी जी के नेतृत्व में डबल इंजन वाली सरकार प्रदेश को बेमिसाल राज्य बनाने के लिए काम कर रही है। केंद्र और राज्य सरकार मिलकर 91 लाख किसानों को हर साल 12000 रुपये किसान सम्मान निधि दे रही है। जलजीवन मिशन में 7 लाख परिवारों को नल कनेक्शन दिए गए हैं। 5.10 करोड़ लाभार्थियों को प्रतिमाह 5 किलोग्राम राशन मुफ्त दिया जा रहा है और उज्जवला योजना में 10 लाख गैस सिलेंडर दिये हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना में 42 लाख घर बनाने का काम किया है और मोदी जी तथा शिवराज जी की जोड़ी ने 1.36 करोड़ गरीबों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाया है।

भाजपा की सरकार गांव, गरीबों का उत्थान करने वाली और बेटियों को आगे बढ़ाने वाली सरकार है, जिसने सारी दुनिया में भारत की छवि को निखारा है। कांग्रेस के जमाने में पाकिस्तान से आतंकी आते थे और हमारे जवानों का सिर कलम करके ले जाते थे। उन्हें पता नहीं था कि देश में अब मोदी जी की सरकार है। उन्होंने पुलवामा और उरी में हमला किया, तो हमारी सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक के जरिए आतंकियों के घर में घुसकर उनका सफाया कर दिया। मोदी जी ने सारी दुनिया को यह संदेश दे दिया कि कोई भारत की सेना और सीमा से छेड़खानी करने की हिम्मत न करे। कांग्रेस के समय में देश की अर्थव्यवस्था दुनिया में 11 वें स्थान पर थी, जिसे मोदी जी की सरकार ने पांचवें स्थान पर पहुंचा दिया। भारत जी-20 की अध्यक्षता कर रहा है। दुनिया में सबसे ज्यादा सम्मान मोदी जी को मिले हैं। इसलिए आप गांव, गरीबों को उत्थान के लिए भारतीय जनता पार्टी को अपना आशीर्वाद दें।

विश्व-मित्र के रूप में भारत

जी-20 की ऐतिहासिक सफलता ने सिद्ध किया है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी जी द्वारा विश्व के कल्याण की दिशा में किए जा रहे कार्य से संपूर्ण विश्व में देश और देशवासियों का मान-सम्मान बढ़ा है। चंद्रयान की सफलता के लिए भी वैज्ञानिकों को प्रणाम और प्रधानमंत्री श्री मोदी जी का वंदन है। उनके नेतृत्व में अब हम सूर्य की ओर भी अग्रसर हैं।

- बीना रिफाइनरी में ''पेट्रोकेमिकल कॉम्प्लेक्स''
- नर्मदापुरम में ''पावर एंड रिन्यूएबल एनर्जी मैन्युफैक्चरिंग जोन'' तथा रतलाम में मेगा इंडस्ट्रियल पार्क।
- इंदौर में दो आईटी पार्क और राज्य भर में छह नए औद्योगिक पार्क।
- ''परियोजनाएं मध्य प्रदेश के लिए हमारे संकल्पों की विशालता का संकेत देती हैं''।
- ''किसी भी देश या किसी भी राज्य के विकास के लिए शासन का पारदर्शी होना और भ्रष्टाचार की समाप्ति आवश्यक है''।
- ''भारत ने गुलामी की मानसिकता को पीछे छोड़ दिया है और अब स्वतंत्र होने के विश्वास के साथ आगे बढ़ना शुरू कर दिया है''।
- ''लोगों को भारत को एकजुट रखने वाले सनातन को तोड़ने वालों से सचेत रहना चाहिए''।
- ''जी 20 की शानदार सफलता 140 करोड़ भारतीयों की सफलता''।
- ''भारत विश्व को एक साथ लाने और विश्वामित्र के रूप में उभरने में अपनी विशेषज्ञता दिखा रहा है''।
- ''वंचितों को प्राथमिकता देना सरकार का मूल मंत्र''।
- ''मोदी की गारंटी का ट्रैक रिकॉर्ड है''।
- ''सबका साथ-सबका विकास'' का मॉडल विश्व को रास्ता दिखा रहा है।

बुंदेलखंड की धरती वीरों की धरती है, शूरवीरों की धरती है। इस भूमि को बीना और बेतवा, दोनों का आशीर्वाद मिला हुआ है। ये परियोजनाएं, इस क्षेत्र के औद्योगिक विकास को नई ऊर्जा देगी। इन परियोजनाओं पर केंद्र सरकार 50 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा खर्च करने वाली है। हमारे देश के बहुत सारे राज्यों का पूरे साल का बजट भी इतना नहीं होता है जितना एक ही कार्यक्रम के लिए भारत सरकार लगा रही है। ये दिखाता है कि मध्य प्रदेश के लिए हमारे संकल्प कितने बड़े हैं। ये सारे प्रोजेक्टस आने वाले समय में मध्य प्रदेश में हजारों-हजार युवाओं को रोजगार देंगे। ये परियोजनाएं, गरीब और मध्यम वर्गीय परिवारों के सपनों को सच करने वाली हैं।

आजादी के इस अमृतकाल में हर देशवासी ने अपने भारत को विकसित बनाने का संकल्प लिया है। इस संकल्प की सिद्धि के लिए ये जरूरी है कि भारत आत्मनिर्भर हो, हमें विदेशों से कम से कम चीजें बाहर से मंगानी पड़ें। भारत पेट्रोल-डीजल तो बाहर से मंगाता ही है, हमें पेट्रो-केमिकल प्रॉडक्ट्स के लिए भी दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ता है। बीना रिफाइनरी में पेट्रो-केमिकल कॉम्प्लेक्स भारत को ऐसी चीजों के उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने का काम करेगा। बीना में बनने वाला आधुनिक पेट्रो-केमिकल कॉम्प्लेक्स पूरे क्षेत्र को विकास की नई ऊंचाई पर ला देगा। इससे यहां नई-नई इंडस्ट्री आएंगी, यहां के किसानों, यहां के छोटे उद्यमियों को तो मदद मिलेगी ही, सबसे बड़ी बात है, नौजवानों को रोजगार के भी हजारों मौके मिलने वाले हैं।

आज के नए भारत में मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर का भी कायाकल्प हो रहा है। जैसे-जैसे देश की जरूरतें बढ़ रही हैं, देश की जरूरतें बदल रही हैं, मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर को भी आधुनिक बनाना उतना ही जरूरी है। इसी सोच के साथ एमपी के 10 नए इंडस्ट्रियल प्रोजेक्ट्स पर भी काम शुरू किया गया है। नर्मदापुरम में रीन्यूएबल एनर्जी से जुड़ी मैन्यूफैक्चरिंग जोन हो, इंदौर में दो नए आई-टी पार्क हों, रतलाम में मेगा इंडस्ट्रियल पार्क हो, ये सभी मध्य प्रदेश की औद्योगिक ताकत को और ज्यादा बढ़ाएंगे। और जब मध्य प्रदेश की औद्योगिक ताकत बढ़ेगी, तो इसका लाभ सबको होने वाला है। यहां के नौजवान,

यहां के किसान, यहां के छोटे-छोटे उद्यमी सभी की कमाई बढ़ेगी, सभी को ज्यादा से ज्यादा नए अवसर मिलेंगे।

किसी भी देश या फिर किसी भी राज्य के विकास के लिए जरूरी है कि पूरी पारदर्शिता से शासन चले, भ्रष्टाचार पर लगाम कसी रहे। मध्य प्रदेश में आज की पीढ़ी को बहुत याद नहीं होगा, लेकिन एक वो भी दिन था, जब मध्य प्रदेश की पहचान देश के सबसे खस्ताहाल राज्यों में हुआ करती थी। आजादी के बाद जिन्होंने लंबे समय तक एमपी में राज किया, उन्होंने भ्रष्टाचार और अपराध के सिवाय एमपी को कुछ भी नहीं दिया। वो जमाना था, एमपी में अपराधियों का ही बोल बाला था। कानून व्यवस्था पर लोगों को भरोसा ही नहीं था। ऐसी स्थिति में आखिर मध्य प्रदेश में उद्योग कैसे लगते? कोई व्यापारी यहां पर आने की हिम्मत कैसे करता? हमने पूरी ईमानदारी से मध्य प्रदेश का भाग्य बदलने का भरसक प्रयास किया है। हमने मध्य प्रदेश को भय से मुक्ति दिलाई, यहां कानून-व्यवस्था को स्थापित किया। पुरानी पीढ़ी के लोगों को याद होगा कि कैसे कांग्रेस ने बुंदेलखंड को सड़क, बिजली और पानी जैसी सुविधाओं से तरसा कर रख दिया था। भाजपा सरकार में हर गांव तक सड़क पहुंच रही है, हर घर तक बिजली पहुंच रही है। जब यहां कनेक्टिविटी सुधरी है, तो उद्योग-धंधों के लिए भी एक सानुकूल, पॉजिटिव माहौल बना है। आज बड़े-बड़े निवेशक मध्य प्रदेश आना चाहते हैं, यहां नई-नई फैक्ट्रियां लगाना चाहते हैं। अगले कुछ वर्षों में मध्य प्रदेश, औद्योगिक विकास की नई ऊंचाई छूने जा रहा है।

आज का नया भारत, बहुत तेजी से बदल रहा है। भारत ने, गुलामी की मानसिकता को पीछे छोड़कर अब स्वतंत्र होने के स्वाभिमान के साथ आगे बढ़ना शुरू कर दिया है। और कोई भी देश, जब ऐसा ठान लेता है, तो उसका कायाकल्प होना शुरू हो जाता है। इसकी एक तस्वीर जी-20 समिट के दौरान भी देखी है। गांव-गांव के बच्चे की जुबान पर जी-20 शब्द आत्मविश्वास से गूंज रहा है भारत ने जी-20 का सफल आयोजन किया है।

ये 140 करोड़ भारतवासियों की सफलता है। ये भारत की सामूहिक शक्ति का प्रमाण है।

एक तरफ आज का भारत दुनिया को जोड़ने का सामर्थ्य दिखा रहा है। दुनिया के मंचों पर भारत विश्व-मित्र के रूप में सामने आ रहा है।

ये सनातन की ताकत थी कि झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, अंग्रेजों को ये कहते हुए ललकार पाईं कि मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी। जिस सनातन को गांधी जी ने जीवन पर्यंत माना, जिन भगवान श्री राम ने उनको जीवन भर प्रेरणा दी, उनके आखिरी शब्द बने हे राम! जिस सनातन ने उन्हें अस्पृश्यता के खिलाफ आंदोलन चलाने के लिए प्रेरित किया, ये इंडी गठबंधन के लोग, ये घमंडिया गठबंधन उस सनातन परंपरा को समाप्त करना चाहते हैं। जिस सनातन से प्रेरित होकर स्वामी विवेकानंद ने समाज की विभिन्न बुराइयों के प्रति लोगों को जागरूक किया, इंडी गठबंधन के लोग उस सनातन को समाप्त करना चाहते हैं। जिस सनातन से प्रेरित होकर लोकमान्य तिलक ने मां भारती की स्वतंत्रता का बीड़ा उठाया, गणेश पूजा को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ा, सार्वजनिक गणेश उत्सव की परंपरा बनाई, आज उसी सनातन को ये इंडी गठबंधन तहस-नहस करना चाहता है।

ये सनातन की ताकत थी, कि स्वतंत्रता आंदोलन में फांसी पाने वाले वीर कहते थे कि अगला जन्म मुझे फिर ये भारत मां की गोद में देना। जो सनातन संस्कृति संत रविदास का प्रतिबिंब है, जो सनातन संस्कृति माता शबरी की पहचान है, जो सनातन संस्कृति महर्षि वाल्मीकि का आधार है, जिस सनातन ने हजारों वर्षों से भारत को जोड़े रखा है, ये लोग मिलकर अब उस सनातन को खंड-खंड करना चाहते हैं। आज इन लोगों ने खुलकर के बोलना शुरू किया है, खुलकर के हमला करना शुरू कर दिया है। कल ये लोग हम पर होने वाले हमले और बढ़ाने वाले हैं। देश के कोने-कोने में हर सनातनी को, इस देश को प्यार करने वाले को, इस देश की मिट्टी को प्यार करने वाले को, इस देश के कोटि-कोटि जनों को प्यार करने वालों को, हर किसी को सतर्क रहने की जरूरत है। सनातन को मिटाकर ये देश को फिर एक हजार साल की गुलामी में धकेलना चाहते हैं। लेकिन हमें मिलकर ऐसी ताकतों को रोकना है, हमारे संगठन की शक्ति से, हमारी एकजुटता से उनके मंसूबों को नाकाम करना है।

भारतीय जनता पार्टी राष्ट्र-भक्ति की, जनशक्ति की भक्ति की और जनसेवा की राजनीति के लिए समर्पित है।

वंचितों को वरीयता यही भाजपा के सुशासन का मूल मंत्र है। भाजपा की सरकार एक संवेदनशील सरकार है। दिल्ली हो या भोपाल, आज सरकार आपके घर तक पहुंच कर आपकी सेवा करने का प्रयास करती है। जब कोविड का इतना भयंकर संकट आया तो सरकार ने करोड़ों देशवासियों का मुफ्त टीकाकरण कराया। हम आपके सुख-दुख के साथी हैं। हमारी सरकार ने 80 करोड़ से अधिक देशवासियों को मुफ्त राशन दिया, गरीब के घर का चूल्हा जलते रहना चाहिए, गरीब का पेट भूखा नहीं रहना चाहिए। हमारी कोशिश यही थी कि कोई गरीब, दलित, पिछड़े, आदिवासी परिवार की मां को अपना पेट बांधकर सोना ना पड़े। वो मां इस बात से ना तड़पे कि मेरा बच्चा भूखा है। इसलिए गरीब के इस बेटे ने गरीब के घर के राशन की चिंता की, गरीब मां की परेशानी की चिंता की।

हमारा ये निरंतर प्रयास है कि मध्य प्रदेश विकास की नई बुलंदियों को छुए, मध्य प्रदेश के हर परिवार का जीवन आसान हो, घर-घर समृद्धि आए। मोदी की गारंटी का ट्रैक रिकॉर्ड सामने है। मोदी ने गरीबों को पक्के घर की गारंटी दी थी। आज मध्य प्रदेश में ही 40 लाख से ज्यादा परिवारों को पक्के घर मिल चुके हैं। घर-घर टॉयलेट की गारंटी दी थी- ये गारंटी भी पूरी करके दिखाई। गरीब से गरीब को मुफ्त इलाज की गारंटी दी थी। हर घर बैंक अकाउंट खुलवाने की गारंटी दी थी। माताओं-बहनों को धुएं से मुक्त रसोई की गारंटी दी थी। ये हर गारंटी आज पूरी कर रहे हैं। बहनों के हितों को ध्यान में रखते हुए इस रक्षाबंधन पर गैस सिलेंडर की कीमतों में भी बड़ी कमी कर दी। उज्ज्वला की योजना, कैसे बहनों-बेटियां का जीवन बचा रही है, ये सभी जानते हैं। प्रयास है, एक भी बहन-बेटी को धुएं में खाना ना बनाना पड़े। अब देश में 75 लाख और बहनों को मुफ्त गैस कनेक्शन दिया जाएगा। कोई भी बहन गैस कनेक्शन से छूटे नहीं, ये हमारा मकसद है। एक बार तो हमने काम पूरा कर दिया, लेकिन कुछ परिवारों में विस्तार हुआ, परिवार में दो हिस्से हुए तो दूसरे परिवार को गैस चाहिए। उसमें जो कुछ नाम आए हैं उनके लिए ये नई योजना लेकर के हम आए हैं।

हम अपनी हर गारंटी को पूरा करने के लिए पूरी ईमानदारी से काम कर रहे हैं। हमने बिचौलिए को खत्म कर हर लाभार्थी को पूरा लाभ देने की गारंटी दी थी। इसका एक उदाहरण प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि भी है। इस योजना के लाभार्थी हर किसान को 28 हजार रुपए सीधे उनके बैंक खाते में भेजे गए। इस योजना पर सरकार 2 लाख साठ हजार करोड़ रुपए से अधिक खर्च कर चुकी है।

बीते 9 वर्षों में केंद्र सरकार का ये भी प्रयास रहा है कि किसानों की लागत कम हो, उन्हें सस्ती खाद मिले। इसके लिए सरकार ने 9 वर्ष में 10 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा सरकारी तिजोरी में से खर्च किया हैं। आज यूरिया की

बोरी, अमेरिका में 3000 रुपए में बिकती है, लेकिन वही बोरी मेरे देश के किसानों को हम सिर्फ 300 रुपये में पहुंचाते हैं, और इसके लिए दस लाख करोड़ रुपया सरकारी खजाने से खर्च किया है। जिस यूरिया के नाम पर पहले हजारों करोड़ रुपए के घोटाले हो जाते थे, जिस यूरिया के लिए किसानों को दिन-रात लाठियां खानी पड़ती थीं, अब वही यूरिया, कितनी आसानी से हर जगह उपलब्ध हो रहा है।

सिंचाई का महत्व क्या होता है, ये बुंदेलखंड से बेहतर कौन जानता है। भाजपा की डबल इंजन सरकार ने बुंदेलखंड में अनेक सिंचाई परियोजनाओं पर काम किया है। केन-बेतवा लिंक नहर से बुंदेलखंड सहित इस क्षेत्र के लाखों किसानों को बहुत लाभ होने वाला है और जीवन भर होने वाला है, आने वाली पीढ़ियों के लिए भी होने वाला है। देश की हर बहन को उसके घर में पाइप से पानी पहुंचाने के लिए भी सरकार निरंतर परिश्रम कर रही है। सिर्फ 4 वर्षों में ही देशभर में लगभग 10 करोड़ नए परिवारों तक नल से जल पहुंचाया गया है। मध्य प्रदेश में भी 65 लाख परिवारों तक पाइप से पानी पहुंचाया जा चुका है। इसका बहुत अधिक लाभ बुंदेलखंड की माताओं-बहनों को हो रहा है। बुंदेलखंड में अटल भूजल योजना के तहत पानी के स्रोत बनाने पर भी बड़े स्तर पर काम हो रहा है।

सरकार इस क्षेत्र के विकास के लिए, इस क्षेत्र के गौरव को बढ़ाने के लिए भी पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

5 अक्टूबर को रानी दुर्गावती जी की 500 वीं जन्मजयंती है। डबल इंजन की सरकार, इस पुण्य अवसर को भी बहुत धूमधाम से मनाने जा रही है।

सरकार के प्रयासों का सबसे अधिक लाभ गरीब को हुआ है, दलित, पिछड़े, आदिवासी को हुआ है। वंचितों को वरीयता का, सबका साथ, सबका विकास का यही मॉडल आज विश्व को भी राह दिखा रहा है। अब भारत दुनिया की टॉप-3 अर्थव्यवस्था में आने का लक्ष्य लेकर के काम कर रहा है।

भारत को टॉप-3 बनाने में मध्य प्रदेश की बड़ी भूमिका है और मध्य प्रदेश उसको निभाएगा। इससे यहां के किसानों, यहां के उद्योगों, यहां के नौजवानों उनके लिए नए-नए अवसर तैयार होने वाले हैं। आने वाले 5 साल मध्य प्रदेश के विकास को नई बुलंदी देने के हैं। जिन प्रोजेक्ट्स की नींव रखी हैं, ये मध्य प्रदेश के तेज विकास को और तेजी देंगे।

विश्व-कल्याण के लिये काम कर रहे हैं प्रधानमंत्री - मुख्यमंत्री श्री चौहान

जी-20 की ऐतिहासिक सफलता ने सिद्ध किया है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी जी द्वारा विश्व के कल्याण की दिशा में किए जा रहे कार्य से संपूर्ण विश्व में देश और देशवासियों का मान-सम्मान बढ़ा है। चंद्रयान की सफलता के लिए भी वैज्ञानिकों को प्रणाम और प्रधानमंत्री श्री मोदी जी का वंदन है। उनके नेतृत्व में अब हम सूर्य की ओर भी अग्रसर हैं।

पिछली सरकार ने बुंदेलखंड को पिछड़ा रखा था। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी की पहल पर यहां हो रहे 50 हजार करोड़ के निवेश से बुंदेलखंड की तस्वीर और यहां के निवासियों की तकदीर बदल जाएगी। बीना रिफाइनरी, एथिलीन क्रेकर परियोजना और प्रदेश के 10 प्रमुख औद्योगिक पार्कों से युवाओं के लिए लाखों रोजगार के अवसर सृजित होंगे, इन सौगातों के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी जी का आभार।

केन-बेतवा परियोजना मंजूर हो गई है इससे 20 लाख एकड़ में सिंचाई होगी और बुंदेलखंड क्षेत्र के लोगों का जीवन बदल जाएगा।

हर वर्ग को सम्मान दे रही भाजपा की सरकारें - विष्णुदत्त शर्मा

केंद्र में श्री नरेन्द्र मोदी जी और प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की सरकारों ने लगातार विकास और गरीब कल्याण के कार्य किए हैं। भाजपा की सरकारों ने महिलाओं, किसानों, युवाओं के साथ गांव और गरीबों के सशक्तीकरण की योजनाएं लागू की हैं और हर वर्ग को सम्मान देने का काम किया है।

पहले हमारी माताओं-बहनों को घरों में शौचालय न होने के कारण जिल्लत की जिन्दगी जीना पड़ता था। रहने के लिए छत तक नसीब नहीं होती थी। लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत गरीब परिवारों को पक्का मकान दिये और शौचालय भी बनवाए। किसानों के खातों में 6000 रुपए किसान सम्मान निधि के माध्यम से डायरेक्ट खाते में डालने का काम किया। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने लाड़ली बहनों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए लाड़ली बहना योजना के माध्यम से 1000 रुपए बहनों के खातों में डालने शुरू किया। रक्षाबंधन पर्व पर बहनों के खातों में 250 रुपए शिवराज भैया ने दिये हैं और अब अक्टूबर से 1250 रुपए आएंगे जो आगे बढ़कर 3000 रुपए हो जाएंगे। हमारी सरकार कन्याओं की भी चिंता करते हुए जन्म से लेकर पढ़ाई और विवाह तक जिम्मा उठा रही है। अब तो हमारी सरकार ने तय किया है कि जिन लाड़ली बहनों के पास आवास नहीं है, उन्हें भी लाड़ली बहना आवास योजना के माध्यम से आवास दिया जाएगा।

क्या भाजपा सरकार के पहले भी प्रदेश में, आपके क्षेत्र में इसी तरह की सड़कें थीं? क्या पूरे समय बिजली रहती थी? प्रदेश में विकास हुआ था क्या? लेकिन जब से मध्यप्रदेश में हमारी सरकार आई है, प्रदेश में हर तरफ सड़कें बन गई हैं। शहरों के साथ-साथ गांवों तक में 24 घंटे बिजली मिलती है। भाजपा की सरकारों ने हर क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास किया है।

सक्षम और समृद्ध भारत के निर्माण में अहम होगी मध्यप्रदेश की भूमिका: विष्णुदत्त शर्मा

आजादी के अमृतकाल में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी भारत को एक सक्षम, समृद्ध और शक्तिशाली राष्ट्र बनाने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं और यह हम सभी के लिए गर्व की बात है कि मध्य प्रदेश प्रधानमंत्री जी के इस अभियान में सक्रिय योगदान देता रहा है। प्रधानमंत्री जी ने बीना में जिस पेट्रोकेमिकल काम्पलेक्स का भूमि पूजन किया है तथा प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में औद्योगिक परियोजनाओं की आधारशिला रखी है, उनके शुरू होने पर देश को सक्षम और समृद्ध बनाने में मध्य प्रदेश की भूमिका और भी बढ़ जाएगी।

देश की ऊर्जा जरूरतों को लेकर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का विजन स्पष्ट है और वे देश को इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं। इसके चलते देश में जहां वैकल्पिक ऊर्जा की उपलब्धता बढ़ाने के लगातार प्रयास किए जा रहे हैं, वहीं देश में ही कच्चे तेल की खोज तथा तेल शोधन संयंत्रों की क्षमता बढ़ाने के भी प्रयास किए जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि जब वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतें आसमान छू रही थीं, तब भी देश में पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतें एक सीमा से अधिक नहीं बढ़ पाईं। इसके अलावा रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान जब सारा यूरोप और दुनिया के अन्य देश तेल संकट का सामना कर रहे थे, महंगा तेल खरीदने पर विवश हो गए थे, तब आपदा में अवसर तलाशते हुए भारत तेल आयात करने वाले देश से तेल निर्यात करने वाला देश बन गया था। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने बीना में जिस पेट्रोकेमिकल काम्पलेक्स का भूमिपूजन किया है, उससे देश की तेल शोधन क्षमता में वृद्धि होगी तथा पेट्रो पदार्थों का उत्पादन बढ़ेगा।

प्रदेश में बढ़ेंगे रोजगार के अवसर, होगा आर्थिक विकास

प्रधानमंत्री जी ने 50 हजार करोड़ की लागत वाले जिस पेट्रोकेमिकल काम्पलेक्स का भूमिपूजन किया है, उसके बन जाने पर बुंदेलखंड और पूरे प्रदेश के लाखों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तौर पर रोजगार मिलेगा। साथ ही प्रधानमंत्री जी ने 1800 करोड़ की लागत वाले इंडस्ट्रियल प्रोजेक्ट्स का वर्चुअली शिलान्यास किया, जिनमें नर्मदापुरम के ऊर्जा एवं नवकरणीय ऊर्जा उत्पादन प्रक्षेत्र, इंदौर के आईटी पार्क, रतलाम का मेगा इंडस्ट्रियल पार्क, तथा नर्मदापुरम, गुना, शाजापुर, मऊगंज, आगर-मालवा और मक्सी के इंडस्ट्रियल पार्क शामिल हैं। इन परियोजनाओं के पूरा होने पर रोजगार के अवसर बढ़ने के साथ-साथ प्रदेश के आर्थिक विकास को गति मिलेगी तथा देश के जीडीपी में मध्यप्रदेश की हिस्सेदारी बढ़ेगी।

मध्यप्रदेश के मन में बस गए हैं मोदी जी- विष्णुदत्त शर्मा

कांग्रेस लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ यानी पत्रकारों का अपमान कर रही है। बाकायदा सार्वजनिक रूप से कुछ टीवी पत्रकारों के नाम घोषित कर उनके कार्यक्रम का बहिष्कार करने की धमकी दे रही है। यह देश के हर पत्रकार का अपमान है। जनता अब जान चुकी है कि मिस्टर बंटाधार की इस प्रदेश में कोई जगह नहीं। मध्यप्रदेश के मन मे मोदी जी बस गए हैं। देश को पूरी दुनिया मे गौरवान्वित करने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हम 2023 और 2024 का चुनाव जीतेंगे।

लाड़ली बहनों को मिली दोहरी खुशी- विष्णुदत्त शर्मा

मध्यप्रदेश में लाड़ली लक्ष्मी के बाद लाड़ली बहना योजना शुरू की गई है। प्रदेश सरकार हर महीने इन बहनों के खातों में राशि डाल रही है। मुख्यमंत्री जी ने बहनों के बिजली बिलों में कटौती की घोषणा की है। उसके बाद अब लाड़ली बहनों को 450 रुपये में गैस सिलेंडर देने की घोषणा से इन बहनों को दोहरी खुशी मिली है और इससे प्रदेश के जन जन को लाभ होगा। महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का यह ऐतिहासिक निर्णय भाजपा सरकार ने लिया है जो अभूतपूर्व है।

हर गरीब के जीवन को बदलने का काम भाजपा सरकार कर रही है: विष्णुदत्त शर्मा

हर गरीब के जीवन को बदलने का काम भाजपा सरकार कर रही है। हमने केवल वादे-नारे नहीं दिए, जनता के काम किए हैं।

विश्व बंधुत्व का विश्वास बने मोदी

हजारों साल पहले वसुधैव कुटुम्बकम का शंखनाद करने वाले भारत ने श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में अंतरराष्ट्रीय पटल पर अभूतपूर्व भूमिका निभाने का खांका खींच दिया है।

अपनी अदभुत विश्वसनीय नेतृत्व क्षमता के बल पर श्री मोदी जी ने भारत की सही वैश्विक भूमिका के लिए सारी दुनिया को भी तैयार किया है। उनकी मैत्रीभाव शैली का प्रभाव है कि आज उनकी किसी भी पहल को नकारना हर देश के लिए मुश्किल है।

विष्णु दत्त शर्मा

दशकों बाद भारत दुनिया में पुनः प्रासंगिक देश बनकर उभरा है। नये भारत के नेतृत्व में विश्व आगे बढ़ने को आतुर है। हमारे नेता द्वारा बताये गये **'वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर'** के रोडमैप पर सारा विश्व चलने को तैयार है। जी-20 की सफलता और सार्थकता ने इस बात की पुष्टि कर दी है कि आज का भारत सारे विश्व के लिए पूरी तरह प्रासंगिक देश के तौर पर अग्रिम पंक्ति में खड़ा है। वसुधैव कुटुम्बकम का भारतीय मंत्र अब दुनिया को रास आ रहा है। वैश्विक समस्याओं के समाधान का यही सूत्र भी है, जिससे सारी दुनिया आपसी मेलभाव को बढ़ा सकती है।

इस भाव को वैश्विक विस्तार देने में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की भगीरथ भूमिका है। विगत एक दशक में उन्होंने अपनी विशेष कार्यप्रणाली से विश्व का ध्यान भारत की ओर न केवल खींचा है बल्कि उनको भारतीय विचारों को सहर्ष आत्मसात करने के लिए उन्मुख किया है। उनके प्रयास से सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत की प्रतिष्ठा विश्व बंधुत्व के अगुवा के रूप में बढ़ी है। हजारों साल पहले वसुधैव कुटुम्बकम का शंखनाद करने वाले भारत ने श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में अंतरराष्ट्रीय पटल पर अभूतपूर्व भूमिका निभाने का खांका खींच दिया है। अपनी अदभुत विश्वसनीय नेतृत्व क्षमता के बल पर श्री मोदी जी ने भारत की सही वैश्विक भूमिका के लिए सारी दुनिया को भी तैयार किया है। उनकी मैत्री भाव शैली का प्रभाव है कि आज उनकी किसी भी पहल को नकारना हर देश के लिए मुश्किल है। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री के तौर पर विगत एक दशक में शायद ही कोई देश बचा हो, जिसने श्री नरेंद्र मोदी जी को अपने सर्वोच्च सम्मान से विभूषित न किया हो। यदि कहा जाय कि आज की दुनिया में श्री मोदी जी जहां खड़े होते हैं, वहां विश्वास की नींव खड़ी हो जाती है, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। राजनयिक क्षेत्र में विश्वास की कमी से गुजर रही दुनिया भारत के श्री नरेंद्र मोदी जी में वह सामर्थ्य देख रही है, जो अविश्वास की खाई को कम कर सकता है और विश्व बंधुत्व को दिशा दे सकता है।

जी-20 का उदाहरण ही लें तो अब तक यह बैठक जहां भी हुई थी, वहां मात्र 2 शहरों तक ही सीमित रही थी लेकिन 10 महीने में देश के 60 शहरों में 220 सफल बैठकों के जरिये भारत ने विश्व को अपने सामर्थ्य का दर्शन करा दिया है। इस मामले में एक बड़ी लकीर खींचते हुए भारत ने 125 देशों के एक लाख से अधिक प्रतिनिधियों से संवाद

किया, उनकी मेजबानी की और उनको भारत के गौरवशाली सामर्थ्य से परिचित कराया। समापन बैठक में 54 देशों के संघ अफ्रीकी यूनियन की सदस्यता के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने जिस तरह आम सहमति बनाई, वह अतुलनीय नेतृत्व कौशल का बेजोड़ उदाहरण बना है। जी-20 को जी-21 बनते देर नहीं लगी और भारत ने अपनी अध्यक्षता में इतिहास रच दिया। यह भारतीय परंपरा है कि बंधुत्व भाव से सबको साथ लेकर चला जाय।

मोदी जी के नेतृत्व में जो घोषणापत्र जारी हुआ उसके लिए बनी सौ फीसदी सहमति ने भी भारत की भूमिका गढ़ी है। घोषणापत्र का एक भी बिंदु विवादित नहीं हुआ और वैश्विक सर्वसम्मति का नया अध्याय लिख दिया गया। इसलिए समापन भाषण का वह अंश अत्यंत महत्वपूर्ण है जिसमें श्री मोदी जी ने कहा कि युद्ध ने विश्वास की कमी को और गहरा किया है। हम सब मिलकर ग्लोबल ट्रस्ट डेफिसिट को एक विश्वास और एक भरोसे में बदलें। ये समय सबको साथ मिलकर चलने का है।

दरअसल, जी-20 के जरिये श्री मोदी जी ने विश्व को सबका साथ, सबका विकास, सबका प्रयास का मंत्र देकर भारतीय विश्व बंधुत्व की आधारशिला रखी है, जिसको कोई भी देश नकार नहीं सकता। विगत दशकों में खाड़ी युद्ध, वियतनाम, अफगानिस्तान और यूक्रेन जैसे युद्धों ने विश्व में अशांति की जो लहर पैदा की, उसका तोड़ श्री मोदी जी के इसी मंत्र में निहित है। जी-20 की सफलता के बाद दुनिया के अनेक विशेषज्ञों के लेखों का सार भी यही है कि श्री मोदी जी ने विश्व को भातृत्व भाव पर चलने का मार्ग प्रशस्त किया, इसी में विश्व कल्याण का लक्ष्य पूरा होगा।

पूर्व ब्रिटिश वित्त मंत्री और अर्थशास्त्री जिम ओ नील ने लिखा कि भारत की अध्यक्षता ने जी-20 को वैश्विक चुनौतियों के प्रभावी समाधान का उचित मंच बनाया है और भारी चुनौतियों के बावजूद सर्वसम्मति से घोषणापत्र जारी करने से इसकी प्रासंगिकता को फिर से स्थापित करने में भारत कामयाब रहा, जबकि बार-बार इसे लेकर सवाल उठाया गया था। नील ने भारत की सराहना करते हुए लिखा कि जी-20 में अफ्रीकी संघ को शामिल करने के लिए भी पीएम मोदी को एक विजेता के तौर पर देखा जाएगा। उनके एक सूझबूझ भरे कदम ने इसे जी-21 बना दिया। यह सफलता श्री मोदी जी को स्पष्ट कूटनीतिक जीत दिलाती है, जिससे उनकी छवि ग्लोबल साउथ के चैंपियन के रूप में उभरी है।

यह नेतृत्व कौशल का ही साहस है कि वैश्विक मंच पर प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने भारत की वह तस्वीर प्रस्तुत की, जो इसकी वास्तविक पहचान से जुड़ा है। उन्होंने सारी दुनिया को भारत की सनातन पहचान और उसके मूल प्रतिमानों से भी रूबरू कराया। भारत मंडपम में भारत की वह भव्य-दिव्य छवि उभरी, जो भारत को भारत बनाती है। स्वाधीनता के अमृत काल में गुलामी के सभी चिन्हों को मिटाने के अपने संकल्प को श्री मोदी जी ने सारे संसार के सामने चरितार्थ कर दिया। नालंदा, कोणार्क आदि के उन चित्रों को दुनिया को दिखाया, जिससे भारत की विश्वगुरु की छवि परिलक्षित होती है।

निःसंदेह हमारा देश 2014 के बाद श्री मोदी जी के नेतृत्व के साथ नयी भूमिका में आ गया है। चाहे वह पड़ोसी देशों के विवाद हों, विश्व आपदाएँ हों, सामरिक चुनौतियां हों या आर्थिक मोर्चा, सभी मामलों में भारत का अब निजी नजरिया और निर्णय होता है। यह नजरिया हमारे यशस्वी नेता के संकल्प से सिद्ध हुआ है। एक दशक में अब नया भारत हिमालय की तरह खड़ा है, जहां आतंकवाद को कुचलने हेतु भारतीय सेना अब पाकिस्तान में घुसकर स्ट्राइक करती है। अपने सैनिक को शत्रु के मांद से बिना शर्त तत्काल वापस लाती है। नये भारत ने विश्व शक्तियों की आंख में आंख डालकर कश्मीर में धारा 370 को विदा कर दिया।

श्रीराम मंदिर जैसे मसलों का हल निकाल कर दुनिया को अपनी अंदरुनी ताकत का एहसास करा दिया। सदी के सबसे बड़े मानवीय संकट (कोविड) में अनेक देशों को वैक्सीन देकर वसुधैव कुटुम्बकम की भावना और विश्व गुरु की भूमिका को चरितार्थ करने वाले हमारे नेता में दुनिया ने विश्वास किया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी देश को 2047 तक हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने हेतु प्रतिबद्ध हैं तो हर गरीब की जिंदगी बदलने का उनका ऐतिहासिक प्रयास भी परिणाम दे रहे हैं। श्री मोदी जी ने राष्ट्र को नयी संसद सौंपकर सच्ची स्वाधीनता की नींव रखी है। श्री नरेंद्र मोदी जी की अगुवाई में भारत का सांस्कृतिक पुनर्जागरण भी हो रहा है और अब भारत अपने स्व पर खड़े होकर इंडिया से भारत की ओर अग्रसर हुआ है।

(लेखक भाजपा मध्यप्रदेश के अध्यक्ष एवं खजुराहो लोकसभा से सांसद हैं)

नारी शक्ति वंदन अधिनियम में देश का भाग्य बदलने की क्षमता

लोकतंत्र में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित

कोटि-कोटि माताओं-बहनों के सपने को पूरा करने का सौभाग्य हमारी भाजपा सरकार को मिला है। और इसलिए, राष्ट्र को सर्वप्रथम मानकर चलने वाली पार्टी के रूप में, भाजपा के कार्यकर्ता के रूप में, एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में, ये हमारे लिए बहुत बड़ा दिन होने का गर्व अनुभव कर रहे हैं।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम ये कोई सामान्य कानून नहीं है। ये नए भारत की नई लोकतांत्रिक प्रतिबद्धता का उद्घोष है।

- **संसद में नारी शक्तिवंदन अधिनियम का सर्वसम्मति से पारित होना महिला नेतृत्व वाले विकास को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है**
- **महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान के लिए योजनाओं के माध्यम से उन्हें बंधन मुक्त करने का हर संभव प्रयास किया।**
- **इस कानून के जरिए लोकतंत्र में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए बीजेपी पिछले तीन दशकों से प्रयास कर रही थी। यह हमारा कमिटमेंट था और हमने इसे पूरा किया है।**
- **महिला आरक्षण विधेयक कोई सामान्य कानून नहीं, यह नए भारत की नई लोकतांत्रिक प्रतिबद्धता का उद्घोष है।**

बीस और इक्कीस सितंबर 2023 को हमने इतिहास को बनते देखा है। ये हम सबका सौभाग्य है कि इतिहास बनाने का अवसर कोटि-कोटि जनों ने हमें दिया है। आने वाली अनेकों पीढ़ियों तक इस निर्णय की चर्चा होगी, इस दिवस की चर्चा होगी।

कभी-कभी किसी निर्णय में देश के भाग्य को बदलने की क्षमता होती है और हम सभी ऐसे ही एक निर्णय के साक्षी बने हैं। संसद के दोनों सदनों द्वारा नारी शक्ति वंदन अधिनियम को रिकॉर्ड मतों से पारित किया जा चुका है। जिस बात का देश को पिछले कई दशकों से इंतजार था, वो सपना अब सच हुआ है। ये पूरे देश के लिए बहुत ही खास समय है। ये भाजपा के हर एक कार्यकर्ता के लिए भी बेहद खास दिन है। आज हर नारी का आत्मविश्वास, हर नारी का आत्मविश्वास आसमान छू रहा है। पूरे देश की माताएँ बहनें और बेटियाँ आज खुशी मना रही हैं, हम सबको आशीर्वाद दे रही हैं

कोटि-कोटि माताओं-बहनों के सपने को पूरा करने का सौभाग्य हमारी भाजपा सरकार को मिला है। और इसलिए, राष्ट्र को सर्वप्रथम मानकर चलने वाली पार्टी के रूप में, भाजपा के कार्यकर्ता के रूप में, एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में, ये हमारे लिए बहुत बड़ा दिन होने का गर्व अनुभव कर रहे हैं।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम ये कोई सामान्य कानून नहीं है। ये नए भारत की नई लोकतांत्रिक प्रतिबद्धता का उद्घोष है। ये अमृतकाल में सबका प्रयास से विकसित भारत के निर्माण की तरफ बहुत बड़ा बहुत मजबूत कदम है। महिलाओं का जीवन स्तर सुधारने के लिए, क्वालिटी ऑफ लाइफ बेहतर करने के लिए, वीमेन लेड डेवलपमेंट का नया युग देश में लाने की जो गारंटी, जो गारंटी मोदी ने दी थी, ये उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

लोकतन्त्र में महिलाओं के लिए इस कानून से बीजेपी महिलाओं की भागीदारी के लिए तीन दशक से प्रयास कर रही थी। ये हमारा

कमिटमेंट था। और आज हमने उसे पूरा कर दिया है। महिला आरक्षण सुनिश्चित कराने वाले इस कानून की राह में तरह-तरह की बाधाएं थीं, दशकों पुराने अड़ंगे थे। लेकिन, जब नीयत पवित्र होती है, प्रयासों में पारदर्शिता होती है, तो परेशानियों को पार करके भी परिणाम लाती है। ये भी अपने आप में एक रिकॉर्ड है कि इस कानून को सदन में इतना व्यापक समर्थन मिला। नए संसद भवन में पक्ष-विपक्ष की सीमाओं से ऊपर उठकर करीब-करीब सबने इसके पक्ष में वोट किया।

भारत को विकसित बनाने के लिए, आज भारत की नारी शक्ति को खुला आसमान देने का ये अवसर है। आज देश, माताओं-बहनों-बेटियों के सामने आने वाली हर अड़चन को दूर कर रहा है। इसी सोच के साथ बीते 9 वर्षों में हमने माताओं-बहनों से जुड़ी हर बंदिशों को तोड़ने का प्रयास किया है।

हमारी सरकार ने एक के बाद एक ऐसी योजनाएं बनाईं हैं, ऐसे कार्यक्रम शुरू किए हैं, जिससे हमारी बहनों को सम्मान, सुविधा, सुरक्षा और समृद्धि का जीवन मिले। हमने बहनों-बेटियों के जीवन चक्र से जुड़ी हर समस्या को दूर करने पर पूरी गंभीरता से ध्यान दिया है।

गर्भावस्था के दौरान शिशु को पौष्टिक खाना मिले इसके लिए हमने मातृवंदना योजना चलाई, महिलाओं के बैंक खाते में पैसे भेजने शुरू किए। माता मृत्यु को रोकने के लिए, नवजात बच्चों की रक्षा के लिए, हमने शिशु का जन्म अस्पताल में ही कराने का बहुत बड़ा अभियान चलाया। बेटी को कोख में ही ना समाप्त कर दिया जाए, इसके लिए हमने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसे जन आंदोलन भी शुरू किए। आज वर्षों बाद देश में जनसंख्या के आधार पर महिला-पुरुष के अनुपात में सुधार आया है।

इसी तरह, शौचालय ना होने की वजह से बेटियाँ स्कूल ना छोड़े, इसके लिए हमने करोड़ों शौचालय बनाए। बेटी की शिक्षा जारी रहे, इसके लिए हमने सुकन्या समृद्धि योजना में ज्यादा ब्याज का प्रावधान किया। बेटी को रसोई में लकड़ी का धुआं ना सहना पड़े, इसके लिए उज्ज्वला का गैस कनेक्शन दिया। बेटी को पानी के इंतजाम में परेशान ना होना पड़े, इसके लिए हमने हर घर पाइप से पानी देने की योजना शुरू की।

हर मां-बाप का सपना होता है कि उसकी प्यारी बेटी, बिना बाधा के जीवन बिताए, जीवन में आगे बढ़े। एक परिवार के सदस्य की तरह हमारी सरकार ने बेटी के हर सुख की चिंता की है, हर बाधा दूर करने की कोशिश की है। बेटी को अंधेरे में ना रहना पड़े, इसके लिए हमने सौभाग्य योजना से मुफ्त बिजली कनेक्शन दिया। बेटी पैसे की कमी की वजह से अपनी बीमारी छिपाए नहीं, इसलिए हमने उसे 5 लाख रुपए तक के मुफ्त इलाज की सुविधा दी। बेटी का घर की संपत्ति पर भी अधिकार हो, इसके लिए पीएम आवास के घरों में उसे संयुक्त भागीदारी दी। गृहणी को अपनी बचत अनाज के डिब्बों में ना रखने पड़ें, इसके लिए जनधन योजना के तहत करोड़ों महिलाओं के बैंक खाते खोले।

बेटी रोजगार कर सके, स्वरोजगार कर सके, इसके लिए हमने बिना गारंटी मांगे लोन देने वाली मुद्रा योजना शुरू की। वो मां बनने के बाद भी अपनी नौकरी जारी रख सके इसके लिए हमने मातृत्व अवकाश में वृद्धि की। बेटी अगर सैनिक स्कूल जाना चाहती है, तो उसके लिए भी हमने सैनिक स्कूल के द्वार खोल दिए। बेटी अगर सेना में अफसर बनना चाहे तो हमने तीनों सेनाओं में बेटियों के लिए नए रास्ते बना दिए। गांव की बहनों को कमाई के अवसर मिले, इसके लिए हमने 9 करोड़ से ज्यादा बहनों तक सेल्फ हेल्प ग्रुप का विस्तार किया और उन्हें मिलने वाली सहायता को भी बढ़ाया। इस साल लाल किले से मैंने देश में 2 करोड़ लखपति दीदी बनाने और सेल्फ हेल्प ग्रुप की महिलाओं को ड्रोन देने की योजना का भी ऐलान किया है।

सामाजिक स्तर पर भी तीन तलाक जैसी जिन कुरीतियों के कारण महिलाओं पर अत्याचार होते थे, हमने कानून बनाकर उन्हें रोका है। हमारी करोड़ों मुस्लिम बहनों को आज तीन तलाक की अमानवीय कुप्रथा से सुरक्षा मिली है। वो महिलाएं भी अब अपने अधिकारों के लिए आगे आ रही हैं।

महिला आरक्षण के लिए इतने दशकों से कोशिश तो हो रही थी। तीन-तीन दशकों से बात हो रही थी, नहीं हो पा रहा था, आज ये संभव हुआ है। कैसे संभव हो पाया? ये मोदी ने नहीं आपने किया है, करोड़ों देशवासियों ने किया है। और ये कैसे किया है? उसका सबसे बड़ा कारण है, देश की जनता ने, देश के मतदाताओं ने, विशेष कर के हमारी माताओं और बहनों ने वोट देकर के एक पूर्ण बहुमत वाली मजबूत और स्थिर सरकार बनाई। और उसी का कारण है आपने जो सरकार को मजबूती दी, आपने जो सरकार को बहुमत दिया उसी की ताकत है कि आज ये फैसले भी ले पा रही है और संसद में जाकर के 20 साल से लटके हुए काम को भी पूरा कर पा रही है। और इसलिए दोनों सदनों में इसका पास होना इस बात का साक्षी है कि पूर्ण बहुमत वाली स्थिर सरकार होती है, तो देश कैसे बड़े फैसले लेता है, कैसे पड़ावों को पार करता है। जब देश में पूर्ण बहुमत वाली सरकार आई, तो इतना बड़ा काम हो पाया। हमने महिला हित में हर स्तर पर फैसले लिए, किसी के राजनीतिक स्वार्थ को महिला आरक्षण के सामने दीवार नहीं बनने दिया। जबकि इससे पहले जब भी ये बिल संसद में आया, लीपापोती हुई, सिर्फ नाम दर्ज कराए गए, निष्ठापूर्वक कभी प्रयास नहीं हुआ। और बवाल हुआ, हंगामा हुआ। नारी का अपमान करने का भी प्रयास किया गया। सबने वोट तो दिया, लेकिन कुछ लोगों को इसमें भी तकलीफ थी कि नारी शक्ति वंदन शब्द क्यों लाए हो। क्या इस देश की नारी को वंदन करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए, क्या माताओं-बहनों को प्रणाम करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए, क्या माताओं-बहनों का गौरव, सम्मान बढ़ाना चाहिए कि नहीं बढ़ाना चाहिए। क्या हम पुरुषों को इतना अहंकार आ जाए, हमारी राजनीतिक विचारधारा को इतना अहंकार आ जाए कि हम नारी शक्ति की वंदना शब्द का प्रयोग करें तो वो भी किसी के पेट में चूहे दौड़ने लग जाए।

पूर्ण बहुमत की स्थिर सरकार है, तो महिला आरक्षण बिल- नारी शक्ति वंदन अधिनियम एक सच्चाई बन गया है। इस कानून ने फिर साबित किया है कि देश को आगे ले जाने के लिए, इस कानून ने सिद्ध कर दिया है कि पूर्ण बहुमत वाली सरकार, मजबूत सरकार, निर्णायक सरकार ये बहुत ही आवश्यक होती है।

महिलाओं को आगे बढ़ाने की बात, उनके विकास को केंद्र में रखकर नीतियों की बात, क्योंकि महिलाओं के नेतृत्व को, उनके सामर्थ्य को, रिजल्ट्स देने की उनकी काबिलियत सिद्ध है। जब मातृ शक्ति को काम मिलता है तो कैसे परिणाम देती है।

गुजरात में समृद्ध ग्राम की योजना बनाई थी और उसमें एक विशेषता थी कि जहां पर गांव के प्रधान के रूप में महिला के लिए आरक्षण है, वह सीट रिजर्व है, अगर उस गांव के सब लोग मिलकर के निर्विरोध उसको चुनते हैं। और सभी पुरुष अपने आप को विड्रॉ कर के सारे मेंबर महिला 100 पर्सेंट महिला मेंबर, उसको मैं समृद्ध ग्राम पंचायत कहता था। और गुजरात में हजारों ऐसी पंचायतें बनी थीं जिसमें एक भी पुरुष सदस्य नहीं था, शत-प्रतिशत महिला सदस्य थी और उत्तम से उत्तम विकास के काम

उन्होंने कर के दिखाया था।

महिलाओं की शक्ति और उनकी सोच क्या होती है, इसके हमारे पास अनेक उदाहरण हैं। गुजरात में तो मैंने बार-बार इस सामर्थ्य को देखा था। मैं नया-नया मुख्यमंत्री बना था, तो एक गांव की महिलाओं ने मेरा समय मांगा, वो गांव के चुने हुए लोग थे, वो बोले कि सब महिलाएं मिलना चाहती हैं। मैंने कहा भाई, मैं नया था, अभी तो मुझे छह महीने भी नहीं हुए थे, मैंने कहा कि काम क्या है, ग्रामीण विकास मंत्रालय को मिलिए, फलाने को मिलिए, उसने कहा नहीं नहीं साहब वो सब तो आपसे मिलना चाहती हैं। गांव की माताएं-बहनें थी तो मैंने कहा कि अच्छा भाई एक दिन बुला लेना मिल लूंगा। वो मिलने आईं, वे आठ-दस महिलाएं थीं, और उनमें सबसे ज्यादा पढ़ी लिखी बहन जों थी वो शायद सातवीं-आठवीं कक्षा तक पढ़ी थीं, वो मिलने आए और बोले कि हमारे गांव ने तय किया है कि एक भी पुरुष मेंबर नहीं होगा सबके सब महिला मेंबर होगी और इस बार गांव की प्रधान भी महिला होगी।

मैंने उनको पूछा कि अच्छा आपको इतना बड़ा अवसर मिला है, अच्छा जब समय मांगा तो मुझे लगा कि वो कुछ पैसों के लिए आएंगे कुछ योजना लेने के लिए आएंगे तो मैंने उनसे पूछा कि आपकी क्या अपेक्षा है और आप क्या करना चाहती हैं? सातवीं-आठवीं कक्षा पढ़ी - लिखी वो गांव की प्रधान महिला, और बाकी मेंबर तो उससे भी कम पढ़े लिखे थे। वो आठ-दस बहनें आई थीं, गांव की बहनें थीं, पहली बार गांधीनगर देखा था, उन्होंने जो मुझे जवाब दिया, मैं समझता हूं कि सार्वजनिक जीवन में काम करने वाले हम सबके लिए प्रेरणा है, उस बहन ने मुझे कहा कि मेरी एक इच्छा है कि हमें पांच साल मिले हैं इन पांच साल में हम ऐसा कुछ करना चाहते हैं कि हमारे गांव में एक भी व्यक्ति गरीब ना रहे। आप कल्पना कर सकते हैं कि क्या दृष्टिकोण रहा होगा उनका, और सच में ट्रांसफॉर्मेशन का कहां आधार होता है ये उनको मालूम था। ये सामर्थ्य और सोच हमारे गांव में बैठी माताओं और बहनों को भी होता है।

महिलाओं में सकारात्मक बदलाव की ये प्रवृत्ति, और संसाधनों के बेहतर से बेहतर इस्तेमाल की दूरदर्शिता हमें हर जगह पर मिलती है। परिवार में तो डगर-डगर पर नजर आता है। अभी कुछ दिन पहले मैं मध्य प्रदेश गया था, तो वहां शहडोल के पास एक आदिवासी गांव में गया, तो सभी आदिवासी बहनों को बुलाया था लेकिन विशेषता ये थी कि उनमें सौ से ज्यादा लखपति दीदी आई थी।

आदिवासी बेटियां-लखपति दीदी, तो मैंने उनसे संवाद किया, एक बहन ने जो मुझे बताया वो वाकई, हम सोच सकते हैं कि उनका सामर्थ्य कितना है, वो आदिवासी बेटी जो कहती है कि मैं लखपति दीदी हूं, मैं आज वूमेन सेल्फ हेल्प ग्रुप के द्वारा ये-ये काम करके इतना-इतना कमाती हूं। तो मैंने पूछा, इतना पैसा कमाने लगी तो करती क्या हो। एक आदिवासी महिला मुझे कह रही है, ये दिल्ली की महिलाओं के लिए भी आश्चर्य होगा, वो कहती है कि मेरे पति साइकिल पर जाते थे, काम करने के लिए रोजगार ढूंढने के लिए साइकिल पर जाते थे, मैं लखपति दीदी बन गई तो मैं उनके लिए स्कूटी ले आई। देखिए आत्मविश्वास, वो कह रही है कि मैं मेरे पति के लिए स्कूटी ले आई। फिर बोली- मुझे पता चला कि मुझे बैंक से लोन मिल सकता है, तो मैंने सोचा कि लोन से ट्रैक्टर ले लूं, वो बोले कि मैंने लोन से ट्रैक्टर लिया और मेरे पति को स्कूटी लेकर के मैंने उनको बदले में ट्रैक्टर दे दिया और मेरे पति ट्रैक्टर लेकर के अगल-बगल के गांव में खेती के लिए लोगों की सेवा के लिए जाते हैं और कमाई करते हैं और बोले अब तो मेरी स्थिति है कि कुछ ही महीनों में उस ट्रैक्टर का लोन भी वापस कर दूंगी। यानि एक मेरी आदिवासी बहन लखपति दीदी का क्या विजन होता है क्या कल्पना होती है, अभी दो महीने पहले उनसे बात करके आया हूं।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम देश के भाग्य को बदलने का काम करेगा, और उसके पीछे मेरा जो ये अनुभव है इसके कारण मेरा विश्वास अनेक गुना बढ़ गया है। नारी जब कोई जिम्मेदारी संभालती है तो संकल्प को सिद्धि तक ले जाने के लिए वो जीजान से जुट जाती है। इस कानून का सबसे बड़ा लाभ ये होगा कि ये कानून देश की नारी शक्ति में बहुत बड़ा विश्वास पैदा करेगा।

देश के लिए काम करने का जज्बा, भारत को आगे बढ़ाने की जो शक्ति है, वो कई गुना बढ़ जाएगी। गुजरात के डेयरी उद्योग, ये अमूल, इतने बड़े-बड़े नाम के मूल में सभी महिलाएं हैं। जो पशुपालन का काम करती है दूध के व्यापार का काम करती है और डेयरी को अरबों और खरबों का व्यापार उन्होंने बना दिया है।

लिज्जत पापड़, आदिवासी महिलाओं द्वारा शुरू किया हुआ प्रकल्प आज मल्टीनेशनल कंपनियों को टक्कर मारने वाला लिज्जत पापड़ ये हमारी नारी शक्ति का परिचय देता है। उनका जो ये कौशल है, सामर्थ्य है, जो भगवान ने उन्हें नैसर्गिक गुण दिया हुआ है, वे कभी भी खराब क्वालिटी को स्वीकार नहीं करते हैं। हो सके उतना अच्छा करना उतने अच्छे ढंग से करना ये सामर्थ्य होता है। और ये शक्ति जब राष्ट्र निर्माण में सक्रिय होती है तब राष्ट्र कितना आगे बढ़ सकता है, इसका हम अंदाज लगा सकते हैं। महिलाओं के इसी कौशल का, उनकी लीडरशिप का उपयोग अब आने वाले दिनों में देश को होने वाला है। हमारी संसद में भी नारी शक्ति का महत्व दिखा है।

सारे दलों को इस बिल का समर्थन करना पड़ा है। मान लीजिए यही लोग हैं, जो बिल फाड़ा करते थे आज उनको बिल का समर्थन करना क्यों पड़ा? क्योंकि देश भर में पिछले दस साल में महिला एक शक्ति बन कर उभरी हैं। और हमने संसद में पहुंचने से पहले देश में सामर्थ्य जुटा दिया ताकि संसद में कोई हिल ना पाए इसका पूरा प्रबंध कर के हम सदन में गए। ये आप ही के सामर्थ्य पर भरोसा करके गया था, ये आप ही की शक्ति पर भरोसा करके मैं गया था, और आपकी शक्ति ने रंग दिखा दिया कि सभी राजनीतिक दलों को इस काम में जुड़ना पड़ा।

आज परिवार से लेकर पंचायत तक, Economy से लेकर Education और Entrepreneurship तक, हमारी बहन-बेटियाँ हर क्षेत्र में अभूतपूर्व काम कर रही हैं। भारत को चांद तक पहुंचाने में महिलाओं की बहुत बड़ी भूमिका रही है।

आज हमारे स्टार्टअप्स हों, सेल्फ हेल्प ग्रुप्स हो, या स्वच्छता जैसे सामाजिक अभियान हों, महिलाओं की भागीदारी और भूमिका देश की ताकत बन रही है। देश ने संकल्प लिया है कि जब हम आजादी के 100 वर्ष पूरे करें, तब तक हम भारत को विकसित बनाकर ही रहेंगे। एक डेवलप्ड कंट्री बनाकर के रहेंगे। इसमें देश की जो आधी आबादी है, उसकी सक्रिय भागीदारी और नेतृत्व के साथ सक्रिय भागीदारी, निर्णयों में बराबरी का हिस्सा ये इस सपने को साकार करने का बहुत बड़ा फोर्स बनने वाला है।

नया और आधुनिक संसद भवन और उसमें आधी आबादी का बढ़ता हुआ प्रतिनिधित्व, ये नई व्यवस्थाओं का सूत्रपात करेगा। विश्वास है कि देश की नारी शक्ति नई और स्वस्थ संसदीय परंपराओं का भी सृजन करेगी।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम को गांव-गांव घर-घर पहुंचाना हम सबका दायित्व है और इस सामर्थ्य को और तेजी से आगे बढ़ाएं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के विचार हम सबके लिए प्राणशक्ति- नरेन्द्र मोदी

- **ये हमारी जिम्मेदारी है कि हम भारत के उस स्वर्णिम भविष्य का निर्माण करें, जिसका सपना दीनदयाल उपाध्याय जी जैसी विभूतियों ने देखा था।**
- **मैं अपने समर्पित कार्यकर्ताओं को दीनदयाल जी के सात सूत्रों को अपने जीवन में उतारने के लिए लगातार प्रोत्साहित करता हूं।**
- **चंद्रयान-3 की सफलता के बाद विदेशों में लोग आम भारतीयों को बधाई दे रहे हैं।**
- **G-20 के बाद भी जिस तरह से भारत की सराहना की गई, उससे हर भारतवासी का सम्मान बढ़ा है।**
- **हम सबके प्रेरणास्रोत दीनदयाल उपाध्याय जी की जन्मजयंती का पावन अवसर एक प्रेरक अवसर हम सबके लिए प्राणशक्ति देता आया है।**

भाजपा के नेतृत्व में संसद में "नारी शक्ति वंदन अधिनियम" पास हुआ है। दीनदयाल जी ने एकात्म मानवदर्शन का, integral humanism का, जो मंत्र राजनीति को दिया था, ये उसी विचार का विस्तार है।

राजनीति में महिलाओं की उचित भागीदारी के बिना हम समावेशी समाज की, डेमोक्रेटिक इंटिग्रेशन की बात नहीं कर सकते। इसलिए, ये कदम न केवल हमारे लोकतन्त्र की जीत है, बल्कि भारतीय जनता पार्टी के तौर पर हमारी वैचारिक जीत भी है।

जयपुर में धानक्या रेलवे स्टेशन के पास जब राजस्थान में भाजपा सरकार थी तो वहां पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्मारक का निर्माण हुआ था। आप सबसे आग्रह है कि जब भी आपका जयपुर जाना हो कुछ समय निकालकर के वहां जरूर जाइए। बहुत ही अच्छे ढंग से दीनदयाल जी के जीवन को समझने के लिए वहां पर कुछ प्रयास किया गया है। और हम जो उनकी प्रेरणा को लेकर के चल रहे हैं, हमारे मन में हमेशा रहना चाहिए। कम से कम दो स्थान मैं जरूर कहूंगा.. एक वो स्थान रेलवे की छोटी सी कुटीर में दीनदयाल जी का जन्म हुआ था, जहां आज म्यूजियम बना हुआ है और दूसरा जहां दीनदयाल जी ने अंतिम श्वास लिया, वो भी रेल की पटरी थी, वहां भी दीनदयाल जी का एक स्मारक, जो काशी से बहुत दूर नहीं है, जब भी हमें जाने का मौका मिले कुछ पल वहां जाकर बिताना चाहिए।

एक ओर दीनदयाल उपाध्याय पार्क है, और सामने ही भारतीय जनता पार्टी का कार्यालय है। उनके ही रोपे गए बीज से आज बीजेपी एक विशाल वटवृक्ष बन चुकी है। ऐसे में, दीनदयाल जी की ये प्रतिमा हम सबके लिए ऊर्जा का स्रोत बनेगी। ये प्रतिमा 'राष्ट्र प्रथम' के प्रण का प्रतीक बनेगी। ये प्रतिमा दीन दयाल जी द्वारा दिए गए एकात्म-मानवदर्शन की प्रेरणा बनेगी। ये प्रतिमा हमें हमारे अंत्योदय के संकल्प की याद बार-बार दिलाती रहेगी। ये प्रतिमा इस बात की भी प्रतीक बनेगी कि हमें देश में राजनैतिक शुचिता को हमेशा जीवंत बनाए रखना है।

दीनदयाल जी की जयंती से ठीक पहले देश ने एक ऐसा काम भी पूरा किया है, जिसने इस अवसर का संतोष और बढ़ा दिया है।

भाजपा के नेतृत्व में संसद में 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' पास हुआ है। दीनदयाल जी ने एकात्म मानवदर्शन का, integral humanism का, जो मंत्र राजनीति को दिया था, ये उसी विचार का विस्तार है। राजनीति में महिलाओं की उचित भागीदारी के बिना हम समावेशी समाज की, डेमोक्रेटिक इंटिग्रेशन की बात नहीं कर सकते। इसलिए, ये कदम न केवल हमारे लोकतन्त्र की जीत है, बल्कि भारतीय जनता पार्टी के तौर पर हमारी वैचारिक जीत भी है।

आज हमारे जैसे करोड़ों लोग दीनदयाल जी के मार्ग का अनुसरण करते हैं, उन्हें अपना आदर्श मानकर काम करते हैं। लेकिन, हम जो सामने देख रहे हैं, उसकी जड़ों में क्या है, ये जानना भी उतना ही जरूरी होता है। कैसे उन्होंने

एक मिशन के लिए, एक संकल्प के लिए अपना पूरा जीवन खपाया, और तब आज उसका फल हमें मिल रहा है, देश को मिल रहा है। हम सब जब उन्हें याद करते हैं तो उनके लिखे पत्र भी बार-बार याद आते हैं। हम जानते हैं कि बचपन में ही माता-पिता की मृत्यु की वजह से दीनदयाल जी ज्यादातर समय अपने ननिहाल में ही रहे। एक बार दीनदयाल जी ने अपने मामा को एक पत्र लिखा था।

उस समय उनका परिवार समस्याओं से घिरा हुआ था, उनके मामा जी शायद चाह रहे थे कि वो समाज कार्यों को छोड़कर घर वापस आ जाएं, कुछ पैसे कमाने के लिए कोई नौकरी ज्वाइन कर लें। तब दीनदयाल जी ने एक चिट्ठी लिखी थी और उस पत्र में उन्होंने लिखा था कि-''एक ओर भावना और मोह खींचते हैं, तो दूसरी ओर प्राचीन ऋषियों और हुतात्माओं की आत्माएं पुकारती हैं।'' उन्होंने व्यक्तिगत पारिवारिक जिम्मेदारियों की जगह राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों का मार्ग चुना।

दीनदयाल उपाध्याय जी ने हमेशा समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की बात की थी। यही उनके अंत्योदय का संकल्प था। इसी संकल्प पर चलते हुए बीते 9 वर्षों में हमने अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का सामर्थ्य बढ़ाने, उसके जीवन को बेहतर बनाने के लिए कई बड़े कदम उठाए हैं।

अब समय है कि हम शत-प्रतिशत गरीबों वंचितों तक पहुँचकर समग्र विकास को सिद्ध करें। अंत्योदय का ये संकल्प हमारी योजनाओं में भी दिख रहा है, हमारे व्यक्तिगत प्रयासों में भी दिख रहा है। आजादी के अमृत काल में हमने सैचुरेशन यानि जनकल्याण की हर योजना को शत-प्रतिशत लाभार्थियों तक पहुंचाने का संकल्प लिया है। सैचुरेशन तक पहुंचने के इस अभियान का मतलब है, भेदभाव की सारी गुंजाइश को खत्म करना, तुष्टिकरण की आशंकाओं को समाप्त करना, स्वार्थ के आधार पर लाभ पहुंचाने की प्रवृत्ति को खत्म करना, और समाज की आखिरी पंक्ति में खड़े आखिरी व्यक्ति तक सरकारी लाभ पहुंचे, ये सुनिश्चित करना। यही तो है अंत्योदय। जब सरकारी मशीनरी खुद ये लक्ष्य बना ले कि उसे हर पात्र व्यक्ति तक पहुंचना है, तो फिर पक्षपात, भेदभाव, टिक ही नहीं पाता। इसलिए हमारा ये सेवा अभियान, सोशल जस्टिस, सामाजिक न्याय का बहुत बड़ा माध्यम है। और यही सच्ची पंथनिरपेक्षता है, सच्चा सेक्युलरिज्म है।

मैं हमेशा से ही कार्यकर्ताओं से दीनदयाल जी के सात सूत्रों को जीवन में उतारने का आग्रह करता हूं। आज फिर से इन सूत्रों को याद करने का दिन है। ये सूत्र हैं-

- **सेवाभाव**
- **संतुलन**
- **संयम**
- **समन्वय**
- **सकारात्मक**
- **संवेदना** और
- **संवाद।**

इस समय देश में हम कर्तव्य काल की राह पर चल पड़े हैं। इस समय तो ये सूत्र और भी सामयिक हो जाते हैं। आज देश में जितनी भी योजनाएं चल रही हैं उसमें हमारे कार्यकर्ताओं का सेवाभाव, समन्वय और संवेदना इनका प्रभाव और बढ़ा सकती हैं। सेवाभाव से अगर हमारे कार्यकर्ता लोगों के सुख-दुख से जुड़ेंगे तो योजनाओं के विस्तार को नई ताकत मिलेगी, हमारे हर कार्यकर्ता को संवेदना के साथ योजनाओं को समझना और उनको हर व्यक्ति तक पहुंचाने की कोशिश करनी होगी। कार्यकर्ता को दो स्तर पर संवाद बनाकर रखना है। पहला सरकार के स्तर पर जिससे उन्हें योजनाओं के बारे में पता चल सके। आपको ये पता रहेगा कि आपके इलाके में किन योजनाओं की जरुरत है इसके लिए आपको नमो एप और mygov.in से मदद मिल जाएगी। दूसरा स्तर, जो ज्यादा महत्वपूर्ण है वो है जनता जनार्दन से संवाद बनाने का है। आप सामान्य मानवी से संवाद करें उन्हें बताएं कि आपके लिए इस तरह की योजना चल रही है। जितना अधिक संवाद करेंगे उतना ही योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने में आसानी होगी। हमें इसी सकारात्मक सोच से आगे बढना है।

जब हम बड़े सपने देखते हैं, बड़े लक्ष्यों के लिए प्रयास करते हैं, और सबको साथ लेकर चलते हैं, तो हमारी सक्सेस का स्केल भी बहुत बड़ा हो जाता है। सार्वजनिक सफलता हमेशा व्यक्तिगत सफलता से कहीं ज्यादा गौरव की अनुभूति करवाती है। आप भी देख रहे हैं कि आज जब भारत ने अपने सामर्थ्य से अपनी छवि को बदला है, तो विदेशों में एक आम भारतीय को भी सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। अभी हाल में ही, सोशल मीडिया पर आपने देखा होगा, चंद्रयान-3 की सफलता के बाद विदेशों में लोग आम भारतीयों को बधाई दे रहे हैं। G-20 के बाद भी पूरी दुनिया में जिस तरह भारत की वाहवाही हुई है, उससे हर भारतवासी का सम्मान और बढ़ा है। और ये मुकाम हासिल करने के लिए भारत को अपनी पहचान, अपने मूल्य बदलने नहीं पड़े। बल्कि, हमने भारतीय संस्कृति को पूरे गौरव के साथ दुनिया के सामने रखा। यही दीनदयाल जी का वो सपना है, जिसे आज हम पूरा कर रहे हैं।

दशकों तक हमारे यहाँ सार्वजनिक संसाधनों और समाज का उपयोग निजी राजनीतिक स्वार्थ के लिए होता रहा। लेकिन आज हमें चाहिए कि, हम व्यक्तिगत संसाधनों का उपयोग भी इस तरह से करें कि उससे देश के विकास के लिए रास्ते खुलें। आज भारत, आत्मनिर्भर होने के जिस संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, 'वोकल फॉर लोकल' के मंत्र को बढ़ा रहा है, वो इसी विजन का विस्तार है। जब हम देश के भीतर अलग-अलग राज्यों में टूरिज्म के लिए जाते हैं, तो इससे फायदा देश के लोगों को होता है। जब हम स्थानीय उत्पाद खरीदते हैं तो इससे फायदा देश के लोगों का होता है। जब हम खादी खरीदते हैं, हैंडलूम खरीदते हैं, हैंडिक्राफ्ट खरीदते हैं, तो इन उत्पादों का बढ़ावा और इसके कारण हर घर में चलने वाले छोटे-छोटे उद्योग, गांव में चलने वाले छोटे उद्योग, गरीबों की मेहनत से पलते हुए उद्योग, उन्हें एक नई ताकत मिलती है उनको आर्थिक लाभ भी पहुंचता है। और इससे देश के लोगों का फायदा होता है। जब हम स्वच्छता को बढ़ावा देते हैं, गंदगी नहीं फैलाते, तो इससे देश स्वच्छ बनता है।

सदियों तक हमारा देश ऐसे ही मुश्किल हालातों में फंसा हुआ था, जहां राष्ट्रसेवा का कोई भी अनुष्ठान बिना बलिदान के पूरा नहीं होता था। आजादी के बाद भी, नए विचार, नए प्रयास के लिए रास्ते आसान नहीं थे। उस समय भी दीनदयाल जी जैसे महापुरुषों ने अपना सब कुछ देश पर न्योछावर कर दिया था। और मैं मानता हूं कि उगर उनकी अचानक और रहस्यमयी मृत्यु नहीं हुई होती, तो भारत का भाग्य बहुत दशक पहले ही बदलना शुरू हो जाता।

जिस व्यक्ति के विचार, उनकी मृत्यु के बाद आज भी इतना प्रभावी हो, वो अगर कुछ समय और जीवित रहते, तो भारत में परिवर्तन की एक नई आंधी उठ खड़ी होती।

आजादी के अमृतकाल में हम अपने सपनों को बड़ा करते हुये देश को विकास की नई ऊंचाई पर लेकर जा रहे हैं। ये सुख हमें अतीत के बलिदानों की वजह से मिला है। अब हमारी जिम्मेदारी है कि अमृतकाल में हम प्रयासों को पराकाष्ठा तक लेकर जाएं। ये हमारी जिम्मेदारी है कि हम भारत के उस स्वर्णिम भविष्य का निर्माण करें, जिसका सपना दीनदयाल जी जैसी विभूतियों ने देखा था।

सबको सम्मान का जीवन देना सभी तक सुविधा पहुँचाना ये मोदी की गारंटी है...

भगवान विश्वकर्मा की जयंती पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों को समर्पित

भगवान विश्वकर्मा के आशीर्वाद से, प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना का आरंभ हो रहा है। हाथ के हुनर से, औजारों से, परंपरागत रूप से काम करने वाले लाखों परिवारों के लिए पीएम विश्वकर्मा योजना, उम्मीद की एक नई किरण बनकर आ रही है।

इस योजना के साथ ही देश को इंटरनेशनल एक्जीबिशन सेंटर-यशोभूमि भी मिला है। जिस प्रकार का काम यहां हुआ है, उसमें श्रमिक भाइयों और बहनों का, विश्वकर्मा भाइयों-बहनों का तप नजर आता है, तपस्या नजर आती है। यशोभूमि देश के हर श्रमिक, हर विश्वकर्मा साथी को समर्पित है। बड़ी संख्या में हमारे विश्वकर्मा साथी भी यशोभूमि के लाभार्थी होने वाले हैं। गांव-गांव में विश्वकर्मा साथी जो सामान बनाते हैं, जो शिल्प, जिस आर्ट का सृजन करते हैं, उसको दुनिया तक पहुंचाने का ये बहुत बड़ा Vibrant Center, सशक्त माध्यम बनने वाला है। ये आपकी कला, आपके कौशल, आपकी आर्ट को दुनिया के सामने शोकेस करेगा। ये भारत के लोकल प्रॉडक्ट को ग्लोबल बनाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाएगा।

हमारे यहां शास्त्रों में कहा गया है- **''यो विश्वं जगतं करोत्येसे स विश्वकर्मा''** अर्थात् जो समस्त संसार की रचना या उससे जुड़े निर्माण कार्य को करता है, उसे ''विश्वकर्मा'' कहते हैं। हजारों वर्षों से जो साथी भारत की समृद्धि के मूल में रहे हैं, वो हमारे विश्वकर्मा ही हैं। जैसे हमारे शरीर में रीढ़ की हड्डी की भूमिका होती है, वैसे ही समाज जीवन में इन विश्वकर्मा साथियों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हमारे ये विश्वकर्मा साथी उस काम, उस हुनर से जुड़े हैं, जिनके बिना रोजमर्रा की, जिंदगी की कल्पना भी मुश्किल है। आप देखिए, हमारी कृषि व्यवस्था में लोहार के बिना कुछ क्या संभव है? नहीं है। गांव-देहात में जूते बनाने वाले हों, बाल काटने वाले हों, कपड़े सिलने वाले दर्जी हों, इनकी अहमियत कभी खत्म नहीं हो सकती। फ्रिज के दौर में भी लोग आज मटके और सुराही का पानी पीना पसंद करते हैं। दुनिया कितनी भी आगे बढ़ जाए, टेक्नॉलॉजी कहीं भी पहुंच जाए, लेकिन इनकी भूमिका, इनका महत्व हमेशा रहेगा। और इसलिए आज समय की मांग है कि इन विश्वकर्मा साथियों को पहचाना जाए, उन्हें हर तरह से सपोर्ट किया जाए।

हमारे यहां शास्त्रों में कहा गया है- "यो विश्वं जगतं करोत्येसे स विश्वकर्मा" अर्थात् जो समस्त संसार की रचना या उससे जुड़े निर्माण कार्य को करता है, उसे "विश्वकर्मा" कहते हैं।

हजारों वर्षों से जो साथी भारत की समृद्धि के मूल में रहे हैं, वो हमारे विश्वकर्मा ही हैं। जैसे हमारे शरीर में रीढ़ की हड्डी की भूमिका होती है, वैसे ही समाज जीवन में इन विश्वकर्मा साथियों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हमारे ये विश्वकर्मा साथी उस काम, उस हुनर से जुड़े हैं, जिनके बिना रोजमर्रा की, जिंदगी की कल्पना भी मुश्किल है।

हमारी सरकार अपने विश्वकर्मा भाई-बहनों को और उनका सम्मान बढ़ाने का, उनका सामर्थ्य बढ़ाने और उनकी समृद्धि बढ़ाने के लिए आज सरकार एक सहयोगी बनकर के आपके पास आई है। अभी इस योजना में 18 अलग-अलग तरह का काम करने वाले विश्वकर्मा साथियों पर फोकस किया गया है। और शायद ही कोई गांव ऐसा होगा कि जहां इस 18 प्रकार के काम करने वाले लोग न हों। इनमें

- **लकड़ी का काम करने वाले कारपेंटर,**
- **लकड़ी के खिलौने बनाने वाले कारीगर,**
- **लोहे का काम करने वाले लोहार,**
- **सोने के आभूषण बनाने वाले सुनार,**
- **मिट्टी का काम करने वाले कुम्हार,**
- **मूर्तियां बनाने वाले मूर्तिकार,**
- **जूते बनाने वाले भाई,**

- **राजमिस्त्री का काम करने वाले लोग,**
- **हेयर कटिंग करने वाले लोग,**
- **कपड़े धोने वाले लोग,**
- **कपड़े सिलने वाले लोग,**
- **माला बनाने वाले,**
- **फिशिंग नेट बनाने वाले,**
- **नाव बनाने वाले,**

ऐसे अलग-अलग, तरह-तरह के काम करने वाले साथियों को शामिल किया गया है। पीएम विश्वकर्मा योजना पर सरकार अभी 13 हजार करोड़ रुपए खर्च करने वाली है।

कुछ साल पहले यानी करीब 30-35 साल हो गए होंगे, मैं एक बार यूरोप में ब्रसल्स गया था। तो वहां कुछ समय था तो मुझे वहां के जो मेरे होस्ट थे वो एक जूलरी का एक्जीबिशन था वो देखने के लिए ले गए। तो मैं जिज्ञासा से जरा पूछ रहा था उनको कि भई यहां इन चीजों का मार्केट कैसा होता है, क्या होता है। तो मेरे लिए बड़ा सरप्राइज था, उन्होंने कहा साहब यहां जो मशीन से बनी हुई जूलरी है उसकी डिमांड कम से कम होती है, जो हाथ से बनी हुई जूलरी है लोग महंगे से महंगे पैसे देकर भी उसको खरीदना पसंद करते हैं। आप सभी हाथ से, अपने हुनर से जो बारीक काम करते हैं, दुनिया में उसकी डिमांड बढ़ रही है। आजकल हम देखते हैं कि बड़ी-बड़ी कंपनियां भी अपने प्रॉडक्ट बनाने के लिए अपना काम दूसरी छोटी-छोटी कंपनियों को देती हैं। ये पूरी दुनिया में एक बहुत बड़ी इंडस्ट्री है। आउटसोर्सिंग का काम भी हमारे इन्हीं विश्वकर्मा साथियों के पास आए, आप बड़ी सप्लाई चेन का हिस्सा बनें, हम इसके लिए आपको तैयार करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। हम दुनिया की बड़ी-बड़ी कंपनियां, आपके दरवाजे पर आकर के खड़ी रहे, आपके दरवाजे पर दस्तक दें, वो क्षमता आपके अंदर लाना चाहते हैं। इसलिए ये योजना विश्वकर्मा साथियों को आधुनिक युग में ले जाने का प्रयास है, उनका सामर्थ्य बढ़ाने का प्रयास है।

बदलते हुए इस समय में हमारे विश्वकर्मा भाई-बहनों के लिए ट्रेनिंग-टेक्नोलॉजी और टूल्स बहुत ही आवश्यक हैं। विश्वकर्मा योजना के जरिए आप सब साथियों को सरकार के द्वारा ट्रेनिंग देने पर बहुत जोर दिया गया है। ट्रेनिंग के दौरान भी क्योंकि आप रोजमर्रा की मेहनत करके कमाने-खाने वाले लोग हैं। इसलिए ट्रेनिंग दरमियान भी आपको

- **हर रोज 500 रुपए भत्ता सरकार की तरफ से दिया जाएगा।**
- **आपको आधुनिक टूलकिट के लिए 15 हजार रुपये का टूलकिट वाउचर भी मिलेगा।**

- **आप जो सामान बनाएंगे, उसकी ब्रांडिंग और पैकेजिंग से लेकर मार्केटिंग में भी सरकार हर तरह से मदद करेगी। और बदले में सरकार आपसे ये चाहती है कि**
- **आप टूलकिट उसी दुकान से खरीदें जो GST रजिस्टर्ड है, कालाबाजारी नहीं चलेगी।**
- **दूसरा मेरा आग्रह है ये टूल्स मेड इन इंडिया ही होने चाहिए।**

अगर आप अपना कारोबार बढ़ाना चाहतें हैं, तो शुरुआती पूंजी की दिक्कत ना आए इसका भी ध्यान सरकार ने रखा है।

- **इस योजना के तहत विश्वकर्मा साथियों को बिना गारंटी मांगे, जब बैंक आपसे गारंटी नहीं मांगती है तो आपकी गारंटी मोदी देता है। बिना गारंटी मांगे 3 लाख रुपए तक का कर्ज मिलेगा, ऋण मिलेगा।**
- **ये भी सुनिश्चित किया गया है कि इस ऋण का ब्याज बहुत ही कम रहे।**
- **सरकार ने प्रावधान ये किया है कि पहली बार में अगर आपकी ट्रेनिंग हो गई, आपने नए टूल ले लिए तो पहली बार आपको 1 लाख रुपए तक ऋण मिलेगा।**
- **जब आप ये चुका देंगे ताकि पता चलेगा कि काम हो रहा है तो फिर आपको 2 लाख रुपए का ऋण और उपलब्ध होगा।**

आज देश में वो सरकार है, जो वंचितों को वरीयता देती है। ये हमारी सरकार ही है जो वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट योजना के जरिए, हर जिले के विशेष उत्पादों को बढ़ावा दे रही है। हमारी सरकार ने ही पहली बार रेहड़ी-पटरी-ठेले वालों को पीएम स्वनिधि के तहत मदद की है, बैंक के दरवाजे उनके लिए खोल दिए हैं। ये हमारी ही सरकार है जिसने आजादी के बाद पहली बार बंजारा और घुमंतू जनजातियों की परवाह की। ये हमारी ही सरकार है जिसने आजादी के बाद पहली बार दिव्यांगजनों के लिए हर स्तर, हर स्थान पर विशेष सुविधाएं विकसित की हैं। जिसे कोई नहीं पूछता, उसके लिए गरीब का ये बेटा मोदी, उसका सेवक बनकर आया है। **सबको सम्मान का जीवन देना, सभी तक सुविधा पहुंचाना, ये मोदी की गारंटी है।**

जब Technology और Tradition मिलते हैं, तो क्या कमाल होता है, ये पूरी दुनिया ने G20 क्राफ्ट बाजार में भी देखा है। G20 में हिस्सा लेने के लिए जो विदेशी मेहमान आए थे, उनको भी गिफ्ट में हमने विश्वकर्मा साथियों के बनाए सामान ही भेंट में दिए। ''लोकल के लिए वोकल'' का ये समर्पण हम सभी का, पूरे देश का दायित्व है। क्यों इसमें ठंडे पड़ गए, मैं करूं तो ताली बजाते हो, आपको करने की बात आए तो रूक जाते हो। आप मुझे बताइए हमारे देश में जो चीजें हमारे कारीगर बनाते हैं, हमारे लोग बनाते हैं वो दुनिया के बाजार में पहुंचनी चाहिए कि नहीं पहुंचनी चाहिए? दुनिया के बाजार में बिकनी चाहिए कि नहीं बिकनी चाहिए? तो ये काम पहले लोकल के लिए वोकल बनना पड़ेगा और फिर लोकल को ग्लोबल करना होगा।

अब गणेश चतुर्थी, धनतेरस, दीपावली सहित

अनेक त्योहार आने वाले हैं। सभी देशवासियों से लोकल खरीदने का आग्रह करुंगा। और जब लोकल खरीदने की बात करता हूं तो कुछ लोगों को इतना ही लगता है कि दिवाली के दिये ले ले बस और कुछ नहीं। हर छोटी-मोटी चीज, कोई भी बड़ा सामान खरीदें जिसमें हमारे विश्वकर्मा साथियों की छाप हो, भारत की मिट्टी और पसीने की महक हो। आज का विकसित होता हुआ भारत, हर क्षेत्र में अपनी नई पहचान बना रहा है। कुछ दिन पहले हमने देखा है कि कैसे भारत मंडपम को लेकर दुनिया भर में चर्चा हुई है। ये इंटरनेशनल एक्जीबिशन सेंटर-यशोभूमि इसी परंपरा को और भव्यता से आगे बढ़ाता है। और यशोभूमि का सीधा-सीधा संदेश है इस भूमि पर जो भी होगा यश ही यश प्राप्त होने वाला है। ये भविष्य के भारत को शोकेस करने का एक शानदार सेंटर बनेगा।

भारत के बड़े आर्थिक सामर्थ्य, बड़ी व्यापारिक शक्ति को शोकेस करने के लिए, भारत की राजधानी में जैसा सेंटर होना चाहिए, ये वो सेंटर है। इसमें मल्टीमोडल कनेक्टिविटी और पीएम गति शक्ति के दर्शन एक साथ होते हैं। ये एयरपोर्ट के पास में है। इसको एयरपोर्ट से कनेक्ट करने के लिए मेट्रो की सुविधा दी गई है। ये मेट्रो स्टेशन सीधा इस कॉम्प्लेक्स से जुड़ा हुआ है। इस मेट्रो सुविधा के चलते दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों से लोगों का समय, बहुत आसानी से कम समय में ये यहां पहुंच पाएंगे। यहां जो लोग आएंगे, उनके लिए ठहरने का, मनोरंजन का, शॉपिंग का, टूरिज्म का, पूरा इंतजाम यहीं इस पूरे इकोसिस्टम में बनाया हुआ है, पूरी व्यवस्था में बना हुआ है।

बदलते हुए समय के साथ विकास के, रोजगार के नए-नए सेक्टर्स भी बनते हैं। आज से 50-60 साल पहले कोई इतनी बड़ी IT इंडस्ट्री के बारे में सोच भी नहीं सकता था। आज से 30-35 साल पहले सोशल मीडिया भी एक कल्पना भर ही था। अब दुनिया में एक और बड़ा सेक्टर बन रहा है, जिसमें भारत के लिए असीम संभावनाए हैं। ये सेक्टर है- कॉन्फ्रेंस टूरिज्म का। पूरी दुनिया में कॉन्फ्रेंस टूरिज्म इंडस्ट्री 25 लाख करोड़ रुपए से भी ज्यादा है। हर साल दुनिया में 32 हजार से भी ज्यादा बड़ी एक्जीबिशन लगती हैं, एक्सपो होते हैं। आप कल्पना कर सकते हैं जिस देश की आबादी दो-पांच करोड़ होगी लोग वहां भी कर देते हैं, यहां तो 140 करोड़ की आबादी है, जो आएगा वो मालामाल हो जाएगा। बहुत बड़ा मार्केट है। Conference Tourism के लिए आने वाले लोग एक सामान्य टूरिस्ट की अपेक्षा, कई गुना ज्यादा पैसा खर्च करते हैं। इतनी बड़ी इंडस्ट्री में भारत की हिस्सेदारी सिर्फ एक परसेंट है, सिर्फ एक परसेंट। भारत की ही अनेकों बड़ी कंपनियां हर साल अपने इवेंट्स बाहर कराने के लिए मजबूर हो जाती हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि देश और दुनिया का इतना बड़ा मार्केट हमारे सामने है। अब आज का नया भारत, खुद को Conference Tourism के लिए भी तैयार कर रहा है।

और आप सब जानते हैं, Adventure Tourism वहीं होगा जहां एडवेंचर के साधन-संसाधन हों। Medical Tourism वहीं होगा जहां आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं हों। Medical Tourism वहीं होगा, जहां ऐतिहासिक, धार्मिक, स्पीरिचुअल एक्टिविटी हों। Spiritual Tourism भी वहीं होगा, जहां हिस्ट्री और हेरिटेज का बाहुल्य हो। इसी तरह, Heritage Tourism भी वहीं होगा, जहां Events के लिए, Meetings के लिए, Exhibition के लिए, जरूरी साधन-संसाधन हों। इसलिए भारत मंडपम और यशोभूमि ये ऐसे सेंटर हैं, वो अब दिल्ली को कॉन्फ्रेंस टूरिज्म का सबसे बड़ा हब बनाने जा रहे हैं। अकेले यशोभूमि सेंटर से ही लाखों युवाओं को रोजगार मिलने की संभावना है। यशोभूमि भविष्य में एक ऐसा स्थान बनेगा जहां दुनिया भर के देशों से लोग International Conference, Meeting, Exhibition इन सबके लिए queue लगने वाली है।

दुनिया भर के देशों में Exhibition और Event Industry से जुड़े लोगों को हिन्दुस्तान में, दिल्ली में, यशोभूमि में विशेष रूप से आमंत्रित करता हूं। देश की, पूरब-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण, हर क्षेत्र की Film Industry, TV Industry को आमंत्रित करूंगा। आप अपने Award समारोह, Film Festival यहां आयोजित करिए, Film के पहले Show यहां आयोजित करिए। मैं International Event Companies, Exhibition Sector से जुड़े लोगों को भी भारत मंडपम और यशोभूमि से जुड़ने को आमंत्रित करता हूं। मुझे विश्वास है, भारत मंडपम हो या यशोभूमि, ये भारत के आतिथ्य, भारत की श्रेष्ठता और भारत की भव्यता के प्रतीक बनेंगे। भारत मंडपम और ये यशोभूमि, दोनों में ही भारतीय संस्कृति और अत्याधुनिक सुविधाओं, इन दोनों का संगम है। आज ये दोनों भव्य प्रतिष्ठान, नए भारत की यशगाथा, देश और दुनिया के सामने गा रहे हैं। इनमें नए भारत की आकांक्षाओं का प्रतिबिंब भी है, जो अपने लिए सबसे बेहतरीन सुविधाएं चाहता है।

मेरे शब्द लिखकर रखिए भारत अब रुकने वाला नहीं है। हमें चलते रहना है, नए लक्ष्य बनाते रहना है और उन नए लक्ष्यों को पाकर के ही चैन से बैठना है। और ये हम सभी के परिश्रम और परिश्रम की पराकाष्ठा देश को 2047 में दुनिया के सामने डंके की चोट पर विकसित भारत के रूप में खड़ा कर देंगे ये संकल्प लेकर के चलना है। ये समय हम सभी के लिए जुट जाने का समय है। हमारे विश्वकर्मा साथी, ''मेक इन इंडिया'' की शान हैं और ये इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर की इस शान को दुनिया के सामने शोकेस करने का माध्यम बनेगा।

प्रधानमंत्री श्री मोदी नए भारत के निर्माता हैं- मुख्यमंत्री श्री चौहान

विश्व में सृजन और कर्म ही जिसका व्यापार हो, वही विश्वकर्मा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का जन्म विश्वकर्मा जयंती पर हुआ है और वे नए भारत का निर्माण कर रहे हैं।

श्री मोदी विश्व के सर्वाधिक सर्वमान्य नेता हैं, उन्होंने भारत को विश्व-पटल पर सशक्त, समर्थ, सम्पन्न, समृद्ध राष्ट्र के रूप में स्थापित किया है और हाई परफार्मिंग राष्ट्र बनाया है। प्रधानमंत्री के तीसरे कार्यकाल में भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थ-व्यवस्था होगा।

प्रधानमंत्री की पहल से भारत विश्व की 5वीं अर्थ-व्यवस्था बना

प्रधानमंत्री श्री मोदी के मेक इन इंडिया,

स्किल इंडिया, डिजिटल इंडिया, वोकल फार लोकल जैसे अभियानों से भारत विश्व की 5वीं अर्थ-व्यवस्था बना है। डिजिटल ट्रांजेक्शन में हम विश्व के सिरमौर हैं। जी-20 के सफलतम आयोजन ने विश्व में भारत का प्रभाव बढ़ाया है। चंद्रयान, आदित्य L-1 के जरिए अंतरिक्ष में भी भारत का तिरंगा लहराया है। कोरोना जैसी महामारी में भारतीयों के साथ-साथ विश्व के कई देशों को मुफ्त वैक्सीन उपलब्ध कराई। देश में रिकार्ड गति से हाईवे, एक्सप्रेस-वे बन रहे हैं, नदियों को जोड़ा जा रहा है। जल्द ही अयोध्या में श्रीराम मंदिर का निर्माण भी पूर्ण होगा।

कारीगर भाई, हमारे लिए आधुनिक विश्वकर्मा

देश के सभी कारीगर भाई हमारे लिए आधुनिक विश्वकर्मा हैं। कारीगर भाइयों के कल्याण के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी ने प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना का क्रियान्वयन आरंभ किया है। योजना से देश के कौशल तंत्र को राष्ट्र के कारीगरों की जरूरत के अनुरूप ढालने का काम चल रहा है। इस योजना से हमारे कारीगर अपनी स्किल को स्केल कर सकेंगे।

मध्यप्रदेश की ग्रोथ रेट भारत में सबसे अधिक है

पहले हमारा मध्यप्रदेश भी बीमारु राज्य था, लेकिन मुझे कहते हुए गर्व है कि आज मध्यप्रदेश की ग्रोथ रेट भारत में सबसे अधिक है। इसमें निर्माण और सृजन में लगे कारीगरों की महत्वपूर्ण भूमिका है। हमारे यह कारीगर आधुनिक विश्वकर्मा हैं। भगवान विश्वकर्मा की सृजन शक्ति का वेदों में उल्लेख मिलता है। शास्त्रों के अनुसार भगवान विश्वकर्मा ने सृष्टि की रचना की।

देवशिल्पी होने के कारण भगवान विश्वकर्मा मशीनरी और उद्योग से जुड़े लोगों के भी आराध्य हैं। हमारे विश्वकर्मा चाहे वे बढ़ई हों, नाव निर्माता हों, लोहार हों, हथौड़ा और टूल्स के निर्माता हों, सुनार हों, कुम्हार हों, शस्त्र बनाने वाले हों, राज मिस्त्री हों, चर्मकार हों, टोकरी और चटाई, झाड़ू के निर्माता हों, गुड़िया और खिलौने के निर्माता हों, नाई, धोबी हों, दर्जी हों, मछली पकड़ने का जाल निर्माता हों, मूर्तिकार हों, ये सब हमारे आधुनिक विश्वकर्मा हैं, इनके बिना यह सृष्टि चल नहीं सकती है। इनके लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना लेकर आए हैं।

पीएम विश्वकर्मा योजना

प्रधानमंत्री ने 17 सितंबर, 2023 को केंद्रीय पीएम विश्वकर्मा योजना शुरू की है। जिसका उद्देश्य अपने हाथों और औजारों की मदद से काम करने वाले कारीगरों और शिल्पकारों को शुरू से अंत तक सहायता प्रदान करना है। इस योजना में 18 व्यवसायों जैसे **(i) बढ़ई (ii) नाव निर्माता (iii) हथियार निर्माता (iv) लोहार (v) हथौड़ा और टूल किट निर्माता (vi) ताला बनाने वाला (vii) सोनार (viii) कुम्हार (ix) मूर्तिकार (मूर्तिकार, पत्थर तराशने वाला), पत्थर तोड़ने वाला (x) मोची/जूता कारीगर (xi) राजमिस्त्री (xii) टोकरी/चटाई/झाड़ू निर्माता/कॉयर बुनकर (xiii) गुड़िया और खिलौना निर्माता (पारंपरिक) (xiv) नाई (xv) माला बनाने वाला (xvi) धोबी (xvii) दर्जी और (xviii) मछली पकड़ने का जाल निर्माण में लगे कारीगरों और शिल्पकारों को शामिल किया गया है।**

इस योजना के तहत कारीगरों और शिल्पकारों को लाभ प्रदान करने की व्यवस्था की गई है-

(i) **पहचान:** पीएम विश्वकर्मा प्रमाण पत्र और आईडी कार्ड के माध्यम से कारीगरों और शिल्पकारों की पहचान।

(ii) **कौशल उन्नयन:** 500 रुपये प्रति दिन के वजीफे के साथ 5-7 दिनों का बुनियादी प्रशिक्षण और 15 दिनों या उससे अधिक का उन्नत प्रशिक्षण।

(iii) **टूलकिट प्रोत्साहन:** बुनियादी कौशल प्रशिक्षण की शुरुआत में ई-वाउचर के रूप में 15,000 रु. रुपये तक का टूलकिट प्रोत्साहन।

(iv) **कर्ज सहायता:** बिना कुछ गिरवी रखे 'उद्यम विकास ऋण' के रूप में तीन लाख रुपए तक का ऋण एक लाख और दो लाख रुपए के दो किश्तों में क्रमशः 18 महीने और 30 महीने की अवधि के लिए 5 प्रतिशत निर्धारित रियायती ब्याज दर पर भारत सरकार द्वारा 8 प्रतिशत की सीमा तक छूट के साथ प्रदान किया जाएगा। जिन लाभार्थियों ने बुनियादी प्रशिक्षण पूरा कर लिया है, वे एक लाख रुपये तक की ऋण सहायता की पहली किश्त का लाभ उठाने के पात्र होंगे। दूसरी ऋण किश्त उन लाभार्थियों के लिए उपलब्ध होगी जिन्होंने पहली किश्त का लाभ उठाया है और एक मानक ऋण खाता बनाए रखा है और अपने व्यवसाय में डिजिटल लेनदेन को अपनाया है या उन्नत प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

(v) **डिजिटल लेनदेन के लिए प्रोत्साहन:** प्रत्येक डिजिटल भुगतान या रसीद के लिए प्रति डिजिटल लेनदेन एक रुपये की राशि के हिसाब से अधिकतम 100 लेनदेन मासिक तक लाभार्थी के खाते में जमा किया जाएगा।

(vi) **विपणन सहायता:** मूल्य श्रृंखला से जुड़ाव में सुधार के लिए कारीगरों और शिल्पकारों को गुणवत्ता प्रमाणन, ब्रांडिंग, जीईएम जैसे ई-कॉमर्स प्लेटफार्मों पर मौजूदगी, विज्ञापन, प्रचार और अन्य विपणन गतिविधियों के रूप में विपणन सहायता प्रदान की जाएगी।

उपर्युक्त लाभों के अलावा, यह योजना लाभार्थियों को औपचारिक एमएसएमई परितंत्र में 'उद्यमियों' के रूप में उदयम असिस्ट प्लेटफॉर्म पर शामिल करेगी। लाभार्थियों का नामांकन पीएम विश्वकर्मा पोर्टल पर आधार-आधारित बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण के साथ सामान्य सेवा केंद्रों के माध्यम से किया जाएगा। लाभार्थियों के नामांकन के बाद तीन-चरणों में सत्यापन किया जाएगा जिसमें (i) ग्राम पंचायत/ यूएलबी स्तर पर सत्यापन (ii) जिला कार्यान्वयन समिति द्वारा जांच और सिफारिश (iii) स्क्रीनिंग समिति द्वारा अनुमोदन शामिल होगा।

अंत्योदय के ध्येय मंत्र को साकार करती भाजपा

नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में जब 2014 में पहली बार भाजपा की सरकार बनी थी, तब उन्होंने कहा था कि हमारी सरकार आदिवासियों, दलितों, पिछड़ों और गरीबों की सरकार है। और आज 9 साल बाद हम सभी साक्षी हैं कि मोदी जी ने अपनी कही हुई एक-एक बात को सच साबित करते हुए धरातल पर उतारा है।

विष्णु दत्त शर्मा

25 सितंबर भारतीय इतिहास की एक ऐसी विशिष्ट तारीख है जिसने न केवल भारतीय राजनीति को दिशा देने वाले महापुरुष को जन्म दिया बल्कि अभूतपूर्व सामाजिक क्रांति का सूत्रपात भी किया। यह क्रांति थी अन्त्योदय की क्रांति। पिछड़ों को अग्रणी भूमिका में लाने की क्रांति और समानता के साथ समरसता के भाव को जाग्रत करने की क्रांति। 25 सितंबर को भारतीय चेतना में एकात्म मानववाद के महान उद्घोषक, अंत्योदय की विचारधारा के प्रणेता राष्ट्र के सजग प्रहरी, भारतीय जनसंघ के संस्थापक श्रद्धेय पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म हुआ था। उस दिन केवल एक व्यक्ति ने नहीं बल्कि सामाजिक उत्थान से राष्ट्र उत्थान के विचार ने जन्म लिया था। पं. दीनदयाल उपाध्याय के इसी विचार ने भारतीय जनसंघ के रूप में एक ऐसे राजनीतिक दल को जन्म दिया जिसने राजनीति में सिद्धांतवाद का दीप प्रज्ज्वलित किया था।

वही दीप जिसने अंत्योदय का विचार गढ़ा और राजनीति में शोषित, पीड़ित, वंचित, मजदूर, किसान, और पंक्ति के अंत में खड़े हुए व्यक्ति को प्राथमिकता दी। जनसंघ में रहते हुए उन्होंने एक ऐसी विचारधारा की नींव रखी जिस पर चलकर भारतीय जनता पार्टी का निर्माण हुआ है। जो आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में न केवल राष्ट्रीय उत्थान बल्कि विश्व कल्याण के भाव से सकारात्मक राजनीतिक भूमिका निभा रही है।

दीनदयाल उपाध्याय जी पार्टी को न केवल राजनीतिक बल्कि वैचारिक रूप से भी मजबूत करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं की वैचारिक पुष्टि हेतु पत्र पत्रिकाओं का भी प्रकाशन किया। वह जानते थे कि आने वाली 21 वी सदी का नेतृत्व वही व्यक्ति कर सकेगा जो न केवल राजनीतिक सूझबूझ से कार्य करता हो बल्कि उसकी वैचारिक समझ भी प्रबल हो। दीनदयाल जी की उस दूरदृष्टि का साकार स्वरूप आज हम सभी भारतीय प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के रूप में देख भी रहे हैं। जिन्होंने पंडित जी के अंत्योदय के मार्ग को अपनी कार्यशैली में अंगीकृत कर लिया है। उनके नेतृत्व में आज 21 वीं सदी का भारत अपने विचार, अपने प्रयास और अपने परिश्रम से विकास के आखिरी पायदान पर खड़े नागरिक को विकास के पहली पायदान पर लाने के लिए काम कर रहा है। नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में जब 2014 में पहली बार भाजपा की सरकार बनी थी, तब उन्होंने कहा था कि हमारी सरकार आदिवासियों, दलितों, पिछड़ों और गरीबों की सरकार है। और आज 9 साल बाद हम सभी साक्षी हैं कि मोदी जी ने अपनी कही हुई एक-एक बात को सच साबित करते हुए धरातल पर उतारा है। उन्होंने हर वर्ग, हर जाति, हर समुदाय और हर क्षेत्र के विकास और कल्याण के लिए अनेकानेक प्रयास किये।

पिछली सरकार के समय घरों में शौचालय नहीं थे, मोदी जी ने 10 करोड़ घरों में शौचालय बनाए जिनमें सबसे ज्यादा शौचालय आदिवासियों के घरों में बने। मोदी जी ने 3 करोड़ लोगों को घर दिए, बिजली दी, गैस सिलेंडर दिए, 5 लाख तक का पूरा स्वास्थ्य का खर्चा मुफ्त कर दिया।

अंत्योदय के साथ, एक भारत श्रेष्ठ भारत और समरस भारत की छवि विश्व पटल पर स्थापित की है। दीनदयाल जी कहते थे कि आत्म निर्भरता और स्वयं सहायता सभी

योजनाओं के केंद्र में होनी चाहिए। उनके इन विचारों को सरकार की योजनाओं और सरकार की कार्य संस्कृति में निरंतर लाने का प्रयास किया गया। जिसके फलस्वरूप मोदी जी द्वारा लायी गयीं ज्यादातर योजनाएं- दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण-कौशल योजना, स्टार्ट-अप व स्टैंड-अप इंडिया, मुद्रा बैंक योजना, दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना, सांसद आदर्श-ग्राम योजना, मेक-इन-इंडिया आदि एकात्म मानववाद के सिद्धांतों से प्रेरित हैं। 'सबका साथ, सबका विकास' जैसा नारा भी उन्हीं की 'अंत्योदय' (समाज के अंतिम व्यक्ति का उत्थान) की अवधारणा पर आधारित है।

दीनदयाल उपाध्याय जी की तरह ही मोदी जी ने अंत्योदय के सपने को अगली पीढ़ी के माथे नहीं छोड़ा। उपदेशों की पोटली मात्र नहीं थोपी। उन्होंने अपनी परिकल्पना-संकल्पना को साकार करने के लिए जो बदलाव अपेक्षित समझे, उसके लिए प्रयास किये। स्वयं की कार्यशैली में अंत्योदय को जिया है तभी तो देश ने मोदी जी के नेतृत्व में एक प्रधानमंत्री को सफाई मित्रों के पैर धोते भी देखा है और उनके साथ बैठकर भोजन करने के अभूतपूर्व दृश्यों का साक्षी भी यह देश बना है। लेकिन चाहे पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के समय की बात हो या तब से लेकर आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के समय की बात हो, किसी व्यक्ति या दल का विचार कभी स्वतः ही पूरा नहीं होता। उसकी पूर्णता में हजारों हजार लोगों का परिश्रम शामिल होता है। यह परिश्रम ही धरातल पर सकारात्मक परिणाम लाता है जिसके चलते पंडित जी जैसे राष्ट्र सेवक द्वारा प्राणित अंत्योदय का विचार मोदी जी जैसे नेतृत्वकर्ता के समय में जनांदोलन बन जाता है। और इस जनांदोलन के वाहक भाजपा जैसे जनहितैषी दल के करोड़ों कार्यकर्ता बनते हैं।

1951 से लेकर आज तक, जनसंघ से लेकर वर्तमान की भाजपा तक भाजपा के सामने विपरीत हालात कभी कम नहीं हुए, इसके बावजूद भाजपा की मौजूदगी और प्रासंगिकता बराबर बनी रही। प्रारंभ से अब तक जो कुछ भी भारतीय जनता पार्टी ने अर्जित किया है वह केवल और केवल अपने कर्तव्यनिष्ठ कार्यकर्ताओं के दम पर प्राप्त किया है। इसलिये भाजपा का हर नेतृत्वकर्ता अपने कार्यकर्ताओं की शक्ति व सामर्थ्य का सम्मान करते हुए स्वयं भी कार्यकर्ता भाव से संलग्न रहता है।

इसी भाव के साथ, अभी जो जन आशीर्वाद यात्रा प्रदेश में पांच स्थानों से निकली, यात्राओं ने 10880 से अधिक किलोमीटर का सफर तय कर प्रदेश के हर भू भाग को कवर किया, यात्रा में 1000 से ज्यादा स्वागत समारोह, लगभग 700 से ज्यादा रथ सभाएं, 250 से ज्यादा मंच सभाएं और 50 से अधिक बड़ी जन सभाएं यात्रा के केंद्र में रही।

इन यात्राओं में भाजपा के राष्ट्रीय नेतृत्व, प्रदेश नेतृत्व और हमारे कार्यकर्ताओं ने जनता के मन की आवाज सुन ली है, जनता के मन में हमारे मोदी जी रमते हैं. मध्य प्रदेश का जन-जन मोदी-मोदी कह रहा है। एमपी के मन में मोदी और मोदी के मन में एमपी है, इसलिए भाजपा के सदस्यता अभियान में 23 लाख से अधिक सदस्य जुड़े हैं। भाजपा आज सिर्फ एक पार्टी नहीं आंदोलन है, जो जन-जन के लिए समर्पित है, जन-जन के लिए संकल्पित है।

इसी कड़ी में, 25 सितंबर को भाजपा मध्यप्रदेश द्वारा कार्यकर्ता महाकुंभ का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यकर्ता महाकुंभ आयोजित करने हेतु पंडित जी की जयंती से उपर्युक्त कोई अन्य दिवस हो ही नहीं सकता। वह भाजपा के कार्यकर्ताओं को ही पार्टी की असली पूंजी मानते थे। स्वयं भी आजीवन कार्यकर्ता भाव से पार्टी और देश की सेवा में संलग्न रहे। तभी तो अपने हर कार्य के लिये स्वाबलंबी बने रहे। दो जोड़ी कपड़े और एक सूटकेस को ही अपनी संपत्ति मानकर राजनीतिक चकाचौंध में भी जल में कमल से खिले रहे। उनके कृतित्व ने देश में भाजपा की पौध को वटवृक्ष बनाने में अपना जीवन समर्पित कर दिया। करोड़ों कार्यकर्ताओं को गढ़ते हुए संगठन कार्यों में संलग्न किया।

भाजपा की वर्तमान पीढ़ी को कार्यकर्ता भाव से संगठन भाव की सीख यदि कोई दे सकता है तो वह केवल श्रद्धेय पंडित जी का व्यक्तित्व ही है। इसलिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'श्रद्धेय दीनदयाल उपाध्याय जी' की जयंती को ''कार्यकर्ता महाकुंभ'' के लिये चुना। उनकी स्मृति में कार्यकर्ता महाकुंभ का आयोजन एक सच्चे संगठक के कार्यों को सही अर्थों में श्रद्धांजलि है।

पंडित जी ने जिस विचार वृक्ष को सींचा, उसकी शाखाएँ आज लोक-कल्याण और राष्ट्रीयता के भाव की पोषक हैं। वह वृक्ष आज एक वटवृक्ष की तरह फल-फूल रहा है और उसके फल आज देश में जनहित के विभिन्न कार्यों के रूप में प्राप्त हो रहे हैं। इस संगठन रूपी वटवृक्ष की जड़ भाजपा के लगनशील, कर्तव्यनिष्ठ और मेहनती कार्यकर्ता हैं, जो प्रतिपल-प्रतिक्षण सजगता के साथ संगठन के विस्तार के लिये जुटे रहते हैं। भाजपा के ऐसे असंख्य कार्यकर्ता हैं, जो कभी कैमरों और चैनलों पर नहीं आए लेकिन उनकी संगठन निष्ठा की बदौलत हमारा संगठन विश्वभर के कैमरों और चैनलों की सुर्खियों में रहता है।

भाजपा ने संघर्ष पथ पर चलते हुए आज अकल्पनीय सफलता हासिल की है। शून्य से शिखर का सफर तय किया है। इसके पीछे पुरखों की तपस्याओं के साथ समृद्ध विचारधारा को लेकर चलने वाले कार्यकर्ताओं का संघर्ष रहा है। जिसे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी सहित संपूर्ण भाजपा का संगठन जानता है। इसलिए अपने सांगठनिक पुरखों की विरासत और कार्यकर्ताओं की ताकत का समारोप करने हेतु कार्यकर्ता महाकुंभ आयोजित किया जा रहा है। इस महाकुंभ से पंडित जी के विचार का अमृत, मोदी जी के विजन की नाव में सवार होकर, नाविक रूपी कार्यकर्ताओं के द्वारा जन-जन तक पहुंचाया जाएगा है।

(लेखक- भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद हैं)

डबल इंजन की सरकार के नेतृत्व में प्रदेश में बही विकास की गंगा: विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की डबल इंजन की सरकार के नेतृत्व में प्रदेश में विकास की गंगा बही है। गरीब कल्याण की योजनाओं के सहारे लोगों के जीवन स्तर में बदलाव आया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी और मुख्यमंत्री श्री चौहान की सरकारें लगातार विकास के कार्य कर रही है। बूथ विजय संकल्प के साथ फिर प्रचंड बहुमत से पार्टी की सरकार बनेगी।

युवाओं के लिए लगातार नए-नए अवसर बन रहे हैं

रोजगार मेले में भी हमारी बेटियों को बड़ी संख्या में नियुक्ति पत्र मिले हैं। आज भारत की बेटियां Space से Sports तक अनेक नए कीर्तिमान बना रही हैं।

रोजगार मेले में जिन अभ्यर्थियों को सरकारी सेवा के नियुक्ति पत्र मिले है, सभी ने कड़े परिश्रम के बाद ये सफलता हासिल की है। चयन लाखों अभ्यर्थियों के बीच से किया गया है, इसलिए इस सफलता का जीवन में बहुत बड़ा महत्व है।

हमारा देश ऐतिहासिक उपलब्धियों और फैसलों का साक्षी बन रहा है। कुछ दिन पहले ही नारी शक्ति वंदन अधिनियम के रूप में देश की आधी आबादी को बहुत बड़ी ताकत मिली है। 30 वर्षों से महिला आरक्षण का जो विषय लंबित था, वो अब रिकॉर्ड वोटों के साथ दोनों सदनों से पास हुआ है।

आप कल्पना कीजिए कि ये कितनी बड़ी उपलब्धि है। ये मांग तब से हो रही थी, जब आप लोगों में से ज्यादातर लोगों का जन्म भी नहीं हुआ होगा। ये निर्णय देश की नई संसद के पहले सत्र में हुआ है। एक तरह से नई संसद में, देश के नए भविष्य की शुरुआत हुई है।

इस रोजगार मेले में भी हमारी बेटियों को बड़ी संख्या में नियुक्ति पत्र मिले हैं। आज भारत की बेटियां Space से Sports तक अनेक नए कीर्तिमान बना रही हैं। मुझे नारी शक्ति की इस सफलता पर बहुत-बहुत गौरव होता है। सरकार की नीति भी यही है कि नारी शक्ति के लिए नए-नए द्वार खोले जाएं। हमारी बेटियां अब देश के सशस्त्र बलों में कमीशन लेकर राष्ट्र सेवा के रास्ते पर आगे बढ़ रही हैं। हम सभी का अनुभव है कि नारी शक्ति ने हमेशा नई ऊर्जा के साथ हर क्षेत्र में बदलाव किया है। हमारी आधी आबादी के लिए सरकार का सुशासन, इसके लिए आपको नए Ideas पर काम करना चाहिए।

आज 21वीं सदी के भारत की आकांक्षाएं बहुत ऊंची हैं, हमारे समाज की, सरकार से अपेक्षाएं बहुत ज्यादा हैं। आप खुद देख रहे हैं कि ये नया भारत आज क्या कमाल कर रहा है। ये वो भारत है जिसने कुछ दिनों पहले चंद्रमा पर अपना तिरंगा लहराया है। इस नए भारत के सपने बहुत ऊंचे हैं। देश ने 2047 तक विकसित भारत बनने का संकल्प लिया है।

अगले कुछ वर्षों में हम तीसरी सबसे बड़ी Economy बनने वाले हैं। आज जब देश में इतना कुछ हो रहा है तो उसमें हर सरकारी कर्मचारी की भूमिका बहुत ज्यादा बढ़ने वाली है। आपको हमेशा Citizen First की भावना से काम करना है। आप तो एक ऐसी Generation का हिस्सा हैं, जो Technology के साथ बड़ी हुई है। जो Gadgets आपके Parents मुश्किल से ऑपरेट कर पाते हैं, आप ने खिलौनों की तरह उनका इस्तेमाल किया है।

Technology से इस सहजता को अब आप को अपने कार्यक्षेत्र में इस्तेमाल करना है। हमें सोचना होगा कि हम Governance में भी Technology की मदद से कैसे नया सुधार कर सकते हैं? आपको देखना होगा कि अपने अपने क्षेत्रों में आप कैसे Technology के जरिए Efficiency को और Improve कर सकते हैं?

Technological Transformation से Governance कैसे आसान होती है, आप ने बीते 9 सालों में देखा है। पहले रेल की टिकट लेने के लिए Booking Counters पर लाइन लगती थी। Technology ने ये मुश्किल आसान कर दी। आधार कार्ड, Digital Locker और E-KYC ने Documentation की Complexity खत्म कर दी। गैस Cylinder की Booking से लेकर Electricity Bills के Payment तक सब अब App पर होने लगा है। App के जरिए सरकारी योजनाओं का पैसा सीधे लोगों के अकाउंट में पहुंच रहा है। Digi Yatra से हमारा आना-जाना आसान हुआ है। यानी Technology से Corruption घटा है, Credibility बढ़ी है, Complexity घटी है, Comfort बढ़ा है।

आपको इस दिशा में और ज्यादा से ज्यादा काम करना है। गरीबों की हर जरूरत, सरकार का हर काम, Technology के जरिए कैसे और आसान होगा, आपको इस काम के लिए

नए-नए तरीके ढूंढने हैं, Innovative तरीके ढूंढने हैं, और उसे आगे भी बढ़ाना होगा।

पिछले 9 वर्षों में हमारी Policies ने बड़े से बड़ा लक्ष्य हासिल करने का रास्ता तैयार किया है। हमारी नीतियां नए Mindset, Constant Monitoring, Mission Mode Implementation और Mass Participation पर आधारित हैं। 9 वर्षों में सरकार ने Mission mode पर नीतियों को लागू किया है। चाहे स्वच्छ भारत हो, या जल जीवन मिशन, इन सभी योजनाओं में 100 Percent Saturation के लक्ष्य पर काम किया जा रहा है। सरकार के हर स्तर पर Schemes की Monitoring हो रही है।

खुद मैं भी प्रगति Platform के द्वारा Projects की Progress पर नजर रखता हूं। इन प्रयासों के बीच, केंद्र सरकार की योजनाओं को जमीन पर उतारने की सबसे बड़ी जिम्मेदारी आप सभी नव-नियुक्त सरकारी कर्मचारियों पर है। जब आप जैसे लाखों युवा सरकारी सेवाओं से जुड़ते हैं तो नीतियों को लागू करने की Speed और Scale भी बढ़ जाती है। इससे सरकार के बाहर भी रोजगार के अवसर तैयार होते हैं। साथ-साथ कामकाज की नई व्यवस्था भी बनती है।

वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में मुश्किलों के बीच आज भारत की GDP तेजी से बढ़ रही है, हमारे Production और Export दोनों में बड़ी वृद्धि हुई है। देश आज अपने आधुनिक Infrastructure पर जितना निवेश कर रहा है, वो पहले कभी नहीं किया गया। आज देश में नए-नए Sectors का विस्तार हो रहा है। आज 'Renewable Energy, Organic Farming, Defence' और पर्यटन समेत कई सेक्टरों में अभूतपूर्व तेजी दिख रही है।

Mobile Phone से Aircraft Carrier तक, Corona Vaccine से Fighter Jets तक भारत के आत्मनिर्भर अभियान की ताकत सबके सामने है। ऐसा माना जा रहा है कि 2025 तक अकेले भारत की Space Economy ही 60 हजार करोड़ से बड़ी हो जाएगी। यानी आज देश के युवाओं के लिए लगातार नए-नए अवसर बन रहे हैं, रोजगार की नई संभावनाएं बन रही हैं।

आजादी के अमृतकाल में अगले 25 साल जितने अहम हैं, उतना ही आपका अगले 25 साल का करियर अहम है। आपको टीम वर्क को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी है। आपने देखा है, इसी महीने इस देश में G-20 बैठकों का सफल आयोजन पूरा हुआ है। दिल्ली समेत देश के 60 शहरों में 200 से ज्यादा बैठकें आयोजित की गईं। इस दौरान विदेशी मेहमानों ने हमारे देश की विविधता के रंग देखे। G-20 हमारी परंपरा, संकल्प और आतिथ्य भावना का आयोजन बना। G-20 समिट की सफलता भी Public और Private Sector के अलग-अलग विभागों की सफलता है। सभी ने इस आयोजन के लिए एक टीम के रूप में काम किया। आप भी सरकारी कर्मचारियों की Team India का हिस्सा बनने जा रहे हैं। आप सभी को देश की विकास यात्रा में सरकार के साथ सीधे जुड़कर काम करने का अवसर मिला है। इस यात्रा में आप सीखते रहने की अपनी आदत को बनाए रखिए। Online Learning Portal - 'iGoT Karmayogi' के द्वारा आप अपनी पसंद के courses से जुड़ सकते हैं।

कांग्रेस ने किसानों से झूठ बोलकर उन्हें डिफाल्टर बना दिया - शिवराज सिंह चौहान

संघर्ष का शंख फूंक गया है। 2003, 2008, 2013 और 2018 में भरपूर आशीर्वाद विंध्य की जनता का हमें मिला था। इस बार भी हमें जनता का भरपूर आशीर्वाद मिलेगा। दोरी सागर बांध का अब काम शुरू होने जा रहा है। पहले यहां डाकुओं का आतंक था, लेकिन हमने डाकुओं का सफाया कर दिया। मंदाकिनी और नर्मदा जी का संगम होगा। नर्मदा जी का पानी दोरी सागर तक लाएंगे, उसके बाद मंदाकिनी तक पहुंचाया जाएगा। कांग्रेसी झूठ बोलते रहे कि कर्ज माफ करेंगे, लेकिन उन्होंने किसानों को डिफॉल्टर बना दिया। कमलनाथ ने तो सारी योजनाएं बंद कर दी, कांग्रेस गंदगी और भ्रम फैला रही है। गंदे आरोप लगा रही है। पहले कांग्रेस ने 900 वादे किए पर एक भी पूरा नहीं किया। कांग्रेस के झूठे वादों के झांसों में नहीं आना है।

मुख्यमंत्री जी, प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में देश-प्रदेश में लगातार हो रहा विकास: विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व में देश और प्रदेश में लगातार विकास हो रहा है। हम देख रहे हैं गांव-गांव में बढ़िया सीमेंटेड रोड बन रही हैं। क्या भाजपा की सरकार बनने से पहले भी इस तरह की सड़कें बनती थीं?

आप भाजपा के उम्मीदवार को जिताएं, हम किसी भी क्षेत्र के विकास में कोई कमी नहीं रहने देंगे, विकास के कामों को प्राथमिकता देंगे।

150 से अधिक सीटें देकर भाजपा की सरकार बनाएं - अमित शाह

भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने 2003 से 2023 तक के 20 सालों में बीमारू मध्यप्रदेश को बेमिसाल मध्यप्रदेश बनाया है। ये अमृतकाल का समय है, देश को महान बनाने का समय है। चाहे किसानों को बिजली-पानी उपलब्ध कराना हो, गरीबों को घर और अनाज उपलब्ध कराना हो, आदिवासियों, दलितों और पिछड़ों का कल्याण करना हो, सभी के लिए मध्यप्रदेश और केंद्र सरकार अनेकों योजनाएं चला रही हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश और मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के नेतृत्व में मध्यप्रदेश तेजी से तरक्की कर रहे हैं। विकास की यह रफ्तार बनी रहे, इसके लिए आप भारतीय जनता पार्टी को अपना आशीर्वाद दें और 150 से अधिक सीटें देकर भाजपा की सरकार बनाएं।

कांग्रेस ने आदिवासी समाज को सिर्फ वोट बैंक समझा, भाजपा ने इस वर्ग से राष्ट्रपति बनाया- विष्णुदत्त शर्मा

भाजपा सरकार जनजातीय नायकों की स्मृतियों को चिरस्थायी बना रही

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र एवं मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में प्रदेश भाजपा सरकार ने गरीब कल्याण की योजनाओं के माध्यम से गरीबों के जीवन में खुशहाली लाने का काम किया है। कांग्रेस ने दशकों तक देश पर राज किया लेकिन कभी आदिवासी भाई-बहनों की चिंता नहीं की। श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने आदिवासी भाई-बहनों के कल्याण के लिए अलग से मंत्रालय बनाया। कांग्रेस ने आदिवासी समाज को सिर्फ वोट बैंक समझा, यहां तक की देश की आजादी के लिए अपना बलिदान देने वाले जनजातीय महानायकों के योगदान को भुला दिया था। भाजपा सरकार जनजातीय नायकों को सम्मान देकर उनकी स्मृतियों को चिरस्थायी बना रही है।

भाजपा सही मायनों में आदिवासियों की हितैषी है

कांग्रेस ने केवल राज किया है विकास की चिंता नहीं। लेकिन अब केंद्र में मोदी सरकार और प्रदेश में भाजपा की सरकार ने ऐसी योजनाएं बनाकर लागू की है कि गरीबों को किसी के आगे हाथ नहीं फैलाने पड़ते। भारतीय जनता पार्टी सही मायनों में आदिवासियों की हितैषी हैं, इसका एक उदाहरण इसी बात से लगता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक आदिवासी समाज की बहन को देश के सर्वोच्च पद पर राष्ट्रपति बनाया है। कांग्रेस ने तो वैक्सीन का भी विरोध किया था। कोरोना काल में प्रधानमंत्री ने जो योजना बना कर काम किया और हर घर- हर गरीब को जो मदद दी है वह दुनिया के लिए एक बड़ा उदाहरण है।

भाजपा की सरकार ने लगाए विकास को चार चांद

विष्णुदत्त शर्मा

2003 के पहले का वह दौर प्रदेश की दुरावस्था का दौर था, जो आज भी लोगों को याद है। उस समय मि. बंटाधार यानी दिग्विजय सिंह कांग्रेस के मुख्यमंत्री थे। जनता सड़क, बिजली, पानी जैसी सुविधाओं के लिए भी लालायित रहती थी। भाजपा की सरकार ने प्रदेश को उस दुरावस्था से निकाला और बीते 20 सालों में प्रदेश के विकास को चार चांद लगाए हैं। गाँव-गाँव में सड़क, बिजली, पानी से लेकर स्वास्थ्य की सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

पढ़ाई के लिए सीएम राइज स्कूल हैं। अगर किसी गरीब का बेटा या बेटी डॉक्टर, इंजीनियर बनना चाहता है, तो उसकी फीस के लिए माता-पिता को चिंता करने की जरूरत नहीं है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार उसकी फीस भरके उसे डॉक्टर, इंजीनियर बनाने का काम कर रही हैं। प्रदेश में जब 15 महीने के लिए कमलनाथ सरकार थी, उस सरकार ने गरीबों की योजनाओ को बंद करके, हर गरीब का हक और अधिकार छीन लिया था। मैचिंग ग्रांट न होने की बात कहकर बड़ी संख्या में प्रधानमंत्री आवास लौटा दिए थे। लखनादौन में मकान बनने से पहले इसलिए लौटा दिया गया कि हमारे पास इन मकानों को बनवाने जगह नहीं है।

देश के प्रधानमंत्री जी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह जी ने गरीब आदमी के दर्द को समझा है और भाजपा की सरकारें उस दर्द को कम करने के प्रयास में लगी हैं। इसलिए आप भूल से भी पुरानी गलती न दोहराएं। आने वाले चुनाव में भाजपा को अपना आशीर्वाद दें, ताकि देश और प्रदेश भी विकास के रास्ते पर बढ़ते रहें।

अटल इरादे कोई काम मुश्किल नहीं

मन की बात के एक और एपिसोड में मुझे आप सभी के साथ देश की सफलता को, देशवासियों की सफलता को, उनकी inspiring life journey को, आपसे साझा करने का अवसर मिला है। इन दिनों सबसे ज्यादा पत्र, सन्देश, जो मुझे मिले हैं वो दो विषयों पर बहुत अधिक है। पहला विषय है, चंद्रयान-3 की सफल landing और दूसरा विषय है दिल्ली में G-20 का सफल आयोजन। देश के हर हिस्से से, समाज के हर वर्ग से, हर उम्र के लोगों के, मुझे, अनगिनत पत्र मिले हैं। जब चंद्रयान-3 का Lander चंद्रमा पर उतरने वाला था, तब करोड़ों लोग अलग-अलग माध्यमों के जरिए एक साथ इस घटना के पल-पल के साक्षी बन रहे थे। ISRO के YouTube Live Channel पर 80 लाख से ज्यादा लोगों ने इस घटना को देखा -अपने आप में ही एक record है। इससे पता चलता है कि चंद्रयान-3 से करोड़ों भारतीयों का कितना गहरा लगाव है। चंद्रयान की इस सफलता पर देश में इन दिनों एक बहुत ही शानदार Quiz Competition भी चल रहा है -प्रश्न स्पर्धा और उसे नाम दिया गया है -'चंद्रयान-3 महाक्विज'। MyGov portal पर हो रहे इस competition में अब तक 15 लाख से ज्यादा लोग हिस्सा ले चुके हैं। MyGov की शुरुआत के बाद यह किसी भी Quiz में सबसे बड़ा participation है। मैं तो आपसे भी कहूँगा कि अगर आपने अब तक इसमें हिस्सा नहीं लिया है तो अब देर मत करिए, अभी इसमें, छः दिन और बचे हैं। इस Quiz में जरुर हिस्सा लीजिये।

चंद्रयान-3 की सफलता के बाद G-20 के शानदार आयोजन ने हर भारतीय की खुशी को दोगुना कर दिया। भारत मंडपम तो अपने आप में एक celebrity की तरह हो गया है। लोग उसके साथ selfie खिंचा रहे हैं और गर्व से post भी कर रहे हैं। भारत ने इस summit में African Union को G-20 में Full Member बनाकर अपने नेतृत्व का लोहा मनवाया है। आपको ध्यान होगा, जब भारत बहुत समृद्ध था, उस जमाने में, हमारे देश में, और दुनिया में, Silk Route की बहुत चर्चा होती थी। ये Silk Route, व्यापार-कारोबार का बहुत बड़ा माध्यम था। अब आधुनिक जमाने में भारत ने एक और Economic Corridor, G-20 में सुझाया है। ये है India-Middle East-Europe Economic। ये Corridor आने वाले सैकड़ों वर्षों तक विश्व व्यापार का आधार बनने जा रहा है, और इतिहास इस बात को हमेशा याद रखेगा कि इस Corridor का सूत्रपात भारत की धरती पर हुआ था।

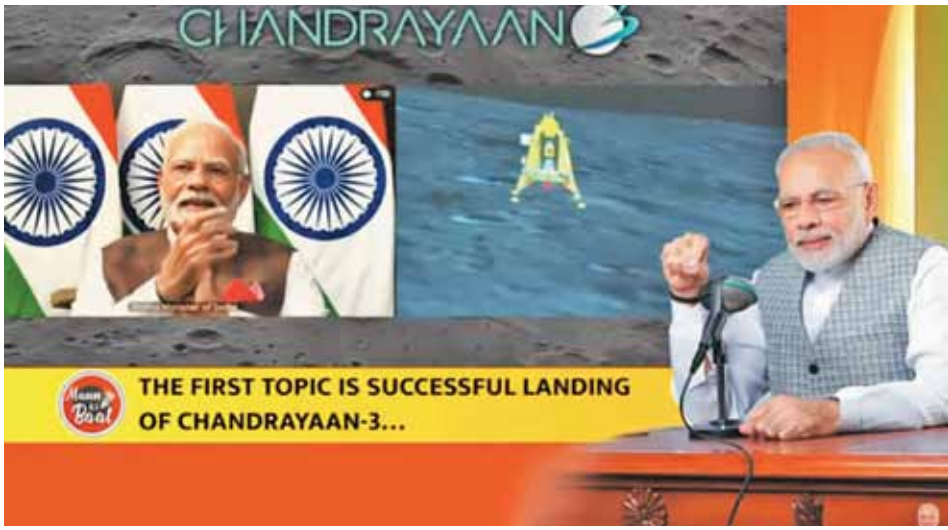

चंद्रयान-3 की सफलता के बाद G-20 के शानदार आयोजन ने हर भारतीय की खुशी को दोगुना कर दिया।

भारत मंडपम तो अपने आप में एक celebrity की तरह हो गया है। लोग उसके साथ selfie खिंचा रहे हैं और गर्व से post भी कर रहे हैं। भारत ने इस summit में African Union को G-20 में Full Member बनाकर अपने नेतृत्व का लोहा मनवाया है।

G-20 के दौरान जिस तरह भारत की युवा शक्ति, इस आयोजन से जुड़ी, उसकी आज, विशेष चर्चा आवश्यक है। साल-भर तक देश के अनेकों universities में G-20 से जुड़े कार्यक्रम हुए। अब इसी श्रृंखला में दिल्ली में एक और exciting programme होने जा रहा है - 'G-20 University Connect Programme'। इस programme के माध्यम से देश-भर के लाखों University students एक-दूसरे से जुड़ेंगे। इसमें IITs, IIMs, NITs और Medical Colleges जैसे कई प्रतिष्ठित संस्थान भी भाग लेंगे। मैं चाहूँगा कि अगर आप college student हैं, तो, 26 सितम्बर को होने वाले इस कार्यक्रम को जरुर देखिएगा, इससे जरुर जुड़िएगा। भारत के भविष्य में, युवाओं के भविष्य पर, इसमें, बहुत सारी दिलचस्प बातें होने वाली हैं। मैं खुद भी इस कार्यक्रम में शामिल होऊंगा। मुझे भी अपने college student से संवाद का इंतजार है।

27 सितम्बर को 'विश्व पर्यटन दिवस' है। पर्यटन को कुछ लोग सिर्फ सैर-सपाटे

के तौर पर देखते हैं, लेकिन पर्यटन का एक बहुत बड़ा पहलू 'रोजगार' से जुड़ा है। कहते हैं, सबसे कम Investment में, सबसे ज्यादा रोजगार, अगर कोई sector पैदा करता है, तो वो, Tourism Sector ही है। Tourism Sector को बढ़ाने में, किसी भी देश के लिए goodwill, उसके प्रति आकर्षण बहुत matter करता है। बीते कुछ वर्षों में भारत के प्रति आकर्षण बहुत बढ़ा है और G-20 के सफल आयोजन के बाद दुनिया के लोगों का interest भारत में और बढ़ गया है।

G-20 में एक लाख से ज्यादा delegates भारत आए। वो यहाँ की विविधता, अलग-अलग परम्पराएं, भांति-भांति का खानपान और हमारी धरोहरों से परिचित हुए। यहाँ आने वाले delegates अपने साथ जो शानदार अनुभव लेकर गए हैं, उससे tourism का और विस्तार होगा। आप लोगों को पता ही है कि भारत में एक से बढ़कर एक world Heritage sites भी हैं और इनकी संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। कुछ ही दिन पहले शान्ति निकेतन और कर्नाटक के पवित्र होयसड़ा मंदिरों को world Heritage sites घोषित किया गया है। मैं इस शानदार उपलब्धि के लिए समस्त देशवासियों को बधाई देता हूँ। मुझे 2018 में शान्ति निकेतन की यात्रा का सौभाग्य मिला था। शान्ति निकेतन से गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का जुड़ाव रहा है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शान्ति निकेतन का Motto संस्कृत के एक प्राचीन श्लोक से लिया था। वह श्लोक है -

''यत्र विश्वम भवत्येक नीडम्''

अर्थात्, जहाँ एक छोटे से घोंसले में पूरा संसार समाहित हो सकता है।

कर्नाटक के जिन होयसड़ा मंदिरों को UNESCO ने विश्व धरोहर सूची में शामिल किया है, उन्हें, 13वीं शताब्दी के बेहतरीन architecture के लिए जाना जाता है। इन मंदिरों को UNESCO से मान्यता मिलना, मंदिर निर्माण की भारतीय परंपरा का भी सम्मान है। भारत में अब World Heritage Properties की कुल संख्या 42 हो गई है। भारत का प्रयास है कि हमारे ज्यादा-से-ज्यादा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जगहों को World Heritage Sites की मान्यता मिले। मेरा आप सबसे आग्रह है कि जब भी आप कहीं घूमने जाने की योजना बनाएं तो ये प्रयास करें कि भारत की विविधता के दर्शन करें। आप अलग-अलग राज्यों की संस्कृति को समझें, Heritage Sites को देखें। इससे, आप अपने देश के गौरवशाली इतिहास से तो परिचित होंगे ही, स्थानीय लोगों की आय बढ़ाने का भी आप अहम माध्यम बनेंगे।

भारतीय संस्कृति और भारतीय संगीत अब Global हो चुका है। दुनिया भर के लोगों का इनसे लगाव दिनों-दिन बढ़ता ही जा रहा है। एक प्यारी सी बिटिया द्वारा की गई एक प्रस्तुति उसका एक छोटा सा audio आपको सुनाता हूँ...

इसे सुनकर आप भी हैरान हो गए न! कितनी मधुर आवाज है और हर शब्द में जो भाव झलकते हैं, ईश्वर के प्रति इनका लगाव हम अनुभव कर सकते हैं। अगर मैं ये बताऊँ कि ये सुरीली आवाज जर्मनी की एक बेटी की है, तो शायद आप और अधिक हैरान होंगे। इस बिटिया का नाम - कैसमी है। 21 साल की कैसमी इन दिनों Instagram पर खूब छाई हुई है। जर्मनी की रहने वाली कैसमी कभी भारत नहीं आई है, लेकिन, वो, भारतीय संगीत की दीवानी है, जिसने, कभी भारत को देखा तक नहीं, उसकी भारतीय संगीत में ये रूचि, बहुत ही Inspiring है। कैसमी जन्म से ही देख नहीं पाती है, लेकिन, ये मुश्किल चुनौती उन्हें असाधारण उपलब्धियों से रोक नहीं पाई। Music और Creativity को लेकर उनका Passion कुछ ऐसा था कि बचपन से ही उन्होंने गाना शुरू कर दिया। African Drumming की शुरुआत तो उन्होंने महज 3 साल की उम्र में ही कर दी थी। भारतीय संगीत से उनका परिचय 5-6 साल पहले ही हुआ। भारत के संगीत ने उनको इतना मोह लिया- इतना मोह लिया कि वो इसमें पूरी तरह से रम गई। उन्होंने तबला बजाना भी सीखा है। सबसे Inspiring बात तो यह है कि वे कई सारी भारतीय भाषाओं में गाने में महारत हासिल कर चुकी हैं। संस्कृत, हिंदी, मलयालम, तमिल, कन्नड़ या फिर असमी, बंगाली, मराठी, उर्दू, उन्होंने इन सबमें अपने सुर साधे हैं। आप कल्पना कर सकते हैं, किसी को दूसरी अनजान भाषा की दो-तीन लाइने बोलनी पड़ जाए तो कितनी मुश्किल आती है, लेकिन कैसमी के लिए जैसे बाएं हाथ का खेल है। आप सभी के लिए मैं यहाँ कन्नड़ा में गाए उनके एक गीत को शेयर कर रहा हूँ।

भारतीय संस्कृति और संगीत को लेकर जर्मनी की कैसमी के इस जुनून की मैं हृदय से सराहना करता हूँ। उनका यह प्रयास हर भारतीय को अभिभूत करने वाला है।

हमारे देश में शिक्षा को हमेशा एक सेवा के रूप में देखा जाता है। मुझे उत्तराखंड के कुछ ऐसे युवाओं के बारे में पता चला है, जो, इसी भावना के साथ बच्चों की शिक्षा के लिए काम कर रहे हैं। नैनीताल जिले में कुछ युवाओं ने बच्चों के लिए अनोखी घोड़ा Library की शुरुआत की है। इस Library की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि दुर्गम से दुर्गम इलाकों में भी इसके जरिए बच्चों तक पुस्तकें पहुँच रही हैं और इतना ही नहीं, ये सेवा, बिल्कुल निःशुल्क है। अब तक इसके माध्यम से नैनीताल के 12 गाँवों को Cover किया गया है। बच्चों की शिक्षा से जुड़े इस नेक काम में मदद करने के लिए स्थानीय लोग भी खूब आगे आ रहे हैं। इस घोड़ा Library के जरिए यह प्रयास किया जा रहा है, कि दूरदराज के गाँवों में रहने वाले बच्चों को स्कूल की किताबों के अलावा 'कविताएँ', 'कहानियाँ' और 'नैतिक शिक्षा' की किताबें भी पढ़ने का पूरा मौका मिले। ये अनोखी Library बच्चों को भी खूब भा रही है।

मुझे हैदराबाद में Library से जुड़े एक

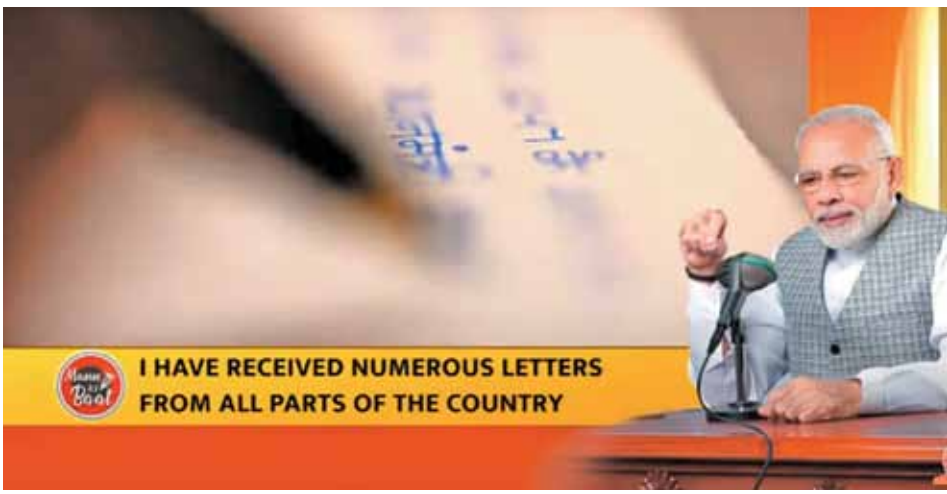

ऐसे ही अनूठे प्रयास के बारे में पता चला है। यहाँ, सातवीं Class में पढ़ने वाली बिटिया 'आकर्षणा सतीश' ने तो कमाल कर दिया है। आपको यह जानकार आश्चर्य हो सकता है कि महज 11 साल की उम्र में ये बच्चों के लिए एक-दो नहीं, बल्कि, सात-सात Library चला रही है। 'आकर्षणा' को दो साल पहले इसकी प्रेरणा तब मिली, जब वो अपने माता-पिता के साथ एक कैंसर अस्पताल गई थी। उसके पिता जरूरतमंदों की मदद के सिलसिले में वहाँ गए थे। बच्चों ने वहाँ उनसे 'Colouring Books' की माँग की, और यही बात, इस प्यारी-सी गुड़िया को इतनी छू गई कि उसने अलग-अलग तरह की किताबें जुटाने की ठान ली। उसने, अपने आस-पड़ोस के घरों, रिश्तेदारों और साथियों से किताबें इकट्ठा करना शुरू कर दिया और आपको यह जानकार खुशी होगी कि पहली Library उसी कैंसर अस्पताल में बच्चों के लिए खोली गई। जरूरतमंद बच्चों के लिए अलग-अलग जगहों पर इस बिटिया ने अब तक जो सात Library खोली हैं, उनमें अब करीब 6 हजार किताबें उपलब्ध हैं। छोटी-सी 'आकर्षणा' जिस तरह बच्चों का भविष्य संवारने का बड़ा काम कर रही है, वो हर किसी को प्रेरित करने वाला है।

ये बात सही है कि आज का दौर Digital Technology और E-Books का है, लेकिन फिर भी किताबें, हमारे जीवन में हमेशा एक अच्छे दोस्त की भूमिका निभाती है। इसलिए, हमें बच्चों को किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

हमारे शास्त्रों में कहा गया है -

जीवेषु करुणा चापि, मैत्री तेषु विधीयताम्।

अर्थात्, जीवों पर करुणा कीजिए और उन्हें अपना मित्र बनाइए। हमारे तो ज्यादातर देवी-देवताओं की सवारी ही पशु-पक्षी हैं। बहुत से लोग मंदिर जाते हैं, भगवान के दर्शन करते हैं, लेकिन जो जीव-जंतु उनकी सवारी होते हैं, उस तरफ उतना ध्यान नहीं देते। ये जीव-जंतु हमारी आस्था के केंद्र में तो रहने ही चाहिए, हमें इनका हर संभव संरक्षण भी करना चाहिए। बीते कुछ वर्षों में, देश में, शेर, बाघ, तेंदुआ और हाथियों की संख्या में उत्साहवर्धक बढ़ोत्तरी देखी गई है। कई और प्रयास भी निरंतर जारी हैं, ताकि इस धरती पर रह रहे दूसरे जीव-जंतुओं को बचाया जा सके। ऐसा ही एक अनोखा प्रयास राजस्थान के पुष्कर में भी किया जा रहा है। यहाँ, सुखदेव भट्ट जी और उनकी Team मिलकर वन्य जीवों को बचाने में जुटे हैं, और जानते हैं उनकी Team का नाम क्या है? उनकी Team का नाम है - कोबरा। ये खतरनाक नाम इसलिए है क्योंकि उनकी Team इस क्षेत्र में खतरनाक साँपों का Rescue करने का काम भी करती है। इस Team में बड़ी संख्या में लोग जुड़े हैं, जो सिर्फ एक Call पर मौके पर पहुंचते हैं और अपने Mission में जुट जाते हैं। सुखदेव जी की इस Team ने अब तक 30 हजार से ज्यादा जहरीले साँपों का जीवन बचाया है। इस प्रयास से जहाँ लोगों का खतरा दूर हुआ है, वहीं प्रकृति का संरक्षण भी हो रहा है। ये Team अन्य बीमार जानवरों की सेवा के काम से भी जुड़ी हुई है।

तमिलनाडु के चेन्नई में Auto Driver एम. राजेंद्र प्रसाद जी भी एक अनोखा काम कर रहे हैं। वो पिछले 25-30 साल से कबूतरों की सेवा के काम में जुटे हैं। खुद उनके घर में 200 से ज्यादा कबूतर हैं। वहीं पक्षियों के भोजन, पानी, स्वास्थ्य जैसी हर जरुरत का पूरा ध्यान रखते हैं। इस पर उनका काफी पैसा भी खर्च होता है, लेकिन वो, अपने काम में डटे हुए हैं।

लोगों को नेक नीयत से ऐसा काम करते देखकर वाकई बहुत सुकून मिलता है, काफी खुशी होती है। अगर आपको भी ऐसे ही कुछ अनूठे प्रयासों के बारे में जानकारी मिले तो उन्हें जरुर Share कीजिए।

आजादी का ये अमृतकाल, देश के लिए हर नागरिक का कर्तव्यकाल भी है। अपने कर्तव्य

निभाते हुए ही हम अपने लक्ष्यों को पा सकते हैं, अपनी मंजिल तक पहुँच सकते हैं। कर्तव्य की भावना, हम सभी को एक सूत्र में पिरोती है। यू. पी. के सम्भल में, देश ने कर्तव्य भावना की एक ऐसी मिसाल देखी है, जिसे मैं आपसे भी Share करना चाहता हूँ। आप सोचिए, 70 से ज्यादा गाँव हों, हजारों की आबादी हो और सभी लोग मिलकर, एक लक्ष्य, एक ध्येय की प्राप्ति के लिए साथ आ जाएँ, जुट जाएँ ऐसा कम ही होता है, लेकिन, सम्भल के लोगों ने ये करके दिखाया। इन लोगों ने मिलकर जन-भागीदारी और सामूहिकता की बहुत ही शानदार मिसाल कायम की है। दरअसल, इस क्षेत्र में दशकों पहले, 'सोत' नाम की एक नदी हुआ करती थी। अमरोहा से शुरू होकर सम्भल होते हुए बदायूं तक बहने वाली ये नदी एक समय इस क्षेत्र में जीवनदायिनी के रूप में जानी जाती थी। इस नदी में अनवरत जल प्रवाहित होता था, जो यहाँ के किसानों के लिए खेती का मुख्य आधार था। समय के साथ नदी का प्रवाह कम हुआ, नदी जिन रास्तों से बहती थी वहां अतिक्रमण हो गया और ये नदी विलुप्त हो गई। नदी को माँ मानने वाले हमारे देश में, सम्भल के लोगों ने इस सोत नदी को भी पुनर्जीवित करने का संकल्प ले लिया। पिछले साल दिसंबर में सोत नदी के कायाकल्प का काम 70 से ज्यादा ग्राम पंचायतों ने मिलकर शुरू किया। ग्राम पंचायतों के लोगों ने सरकारी

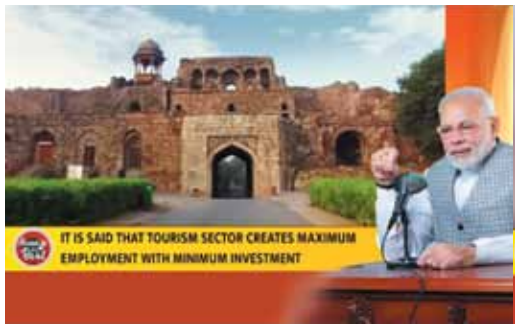

विभागों को भी अपने साथ लिया। आपको ये जानकर खुशी होगी कि साल के पहले 6 महीने में ही ये लोग नदी के 100 किलोमीटर से ज्यादा रास्ते का पुनरोद्धार कर चुके थे। जब बारिश का मौसम शुरू हुआ तो यहां के लोगों की मेहनत रंग लाई और सोत नदी, पानी से, लबालब भर गई। यहां के किसानों के लिए यह खुशी का एक बड़ा मौका बनकर आया है। लोगों ने नदी के किनारे बांस के 10 हजार से भी अधिक पौधे भी लगाए हैं, ताकि इसके किनारे पूरी तरह सुरक्षित रहें। नदी के पानी में तीस हजार से अधिक गम्बूसिया मछलियों को भी छोड़ा गया है ताकि मच्छर न पनपें।

सोत नदी का उदाहरण हमें बताता है कि अगर हम ठान लें तो बड़ी से बड़ी चुनौतियों को पार कर एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं। आप भी कर्तव्य पथ पर चलते हुए अपने आसपास ऐसे बहुत से बदलावों का माध्यम बन सकते हैं।

जब इरादे अटल हों और कुछ सीखने की लगन हो, तो कोई काम, मुश्किल नहीं रह जाता है। पश्चिम बंगाल की श्रीमती शकुंतला सरदार ने इस बात को बिल्कुल सही साबित करके दिखाया है। आज वो कई दूसरी महिलाओं के लिए प्रेरणा बन गई हैं। शकुंतला जी जंगल महल के शातनाला गांव की रहने वाली हैं। लंबे समय तक उनका परिवार हर रोज मजदूरी करके अपना पेट पालता था। उनके परिवार के लिए गुजर-बसर भी मुश्किल थी। फिर उन्होंने एक नए रास्ते पर चलने का फैसला किया और सफलता हासिल कर सबको हैरान कर दिया। आप ये जरुर जानना चाहेंगे कि उन्होंने ये कमाल कैसे किया! इसका जवाब है - एक सिलाई मशीन। एक सिलाई मशीन के जरिए उन्होंने 'साल' की पत्तियों पर खूबसूरत design बनाना शुरू किया। उनके इस हुनर ने पूरे परिवार का जीवन बदल दिया। उनके बनाए इस अद्भुत craft की मांग लगातार बढ़ती जा रही है। शकुंतला जी के इस हुनर ने, न सिर्फ उनका, बल्कि, 'साल' की पत्तियों को जमा करने वाले कई लोगों का जीवन भी बदल दिया है। अब, वो, कई महिलाओं को training देने का भी काम कर रही हैं। आप कल्पना कर सकते हैं, एक परिवार, जो कभी, मजदूरी पर निर्भर था, अब खुद दूसरों को रोजगार के लिए प्रेरित कर रहा है। उन्होंने रोज की मजदूरी पर निर्भर रहने वाले अपने परिवार को अपने पैरों पर खड़ा कर दिया है। इससे उनके परिवार को अन्य चीजों पर भी focus करने का अवसर मिला है। एक बात और हुई है, जैसे ही शकुंतला जी की स्थिति कुछ ठीक हुई, उन्होंने बचत करना भी शुरू कर दिया है। अब वो जीवन बीमा योजनाओं में निवेश करने लगी हैं, ताकि उनके बच्चों का भविष्य भी उज्जवल हो। शकुंतला जी के जज्बे के लिए उनकी जितनी सराहना की जाए वो कम है। भारत के लोग ऐसी ही प्रतिभा से भरे होते हैं - आप, उन्हें अवसर दीजिए और देखिए वे क्या-क्या कमाल कर दिखाते हैं।

दिल्ली में G-20 Summit के दौरान उस दृश्य को भला कौन भूल सकता है, जब कई World Leaders बापू को श्रद्धासुमन अर्पित करने एक साथ राजघाट पहुंचे। यह इस बात का एक बड़ा प्रमाण है कि दुनिया-भर में बापू के विचार आज भी कितने प्रासांगिक है। मुझे इस बात की भी खुशी है कि गांधी जयंती को लेकर पूरे देश में स्वच्छता से सम्बंधित बहुत सारे कार्यक्रमों का plan किया गया है। केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में 'स्वच्छता ही सेवा अभियान' काफी जोर-शोर से जारी है। Indian Swachhata League में भी काफी अच्छी भागीदारी देखी जा रही है। 'मन की बात' के माध्यम से सभी देशवासियों से एक आग्रह भी करना चाहता हूं - 1 अक्टूबर यानि रविवार को सुबह 10 बजे स्वच्छता पर एक बड़ा आयोजन होने जा रहा है।

आप भी अपना वक्त निकालकर स्वच्छता के जुड़े इस अभियान में अपना हाथ बटाएं। आप अपनी गली, आस-पड़ोस, पार्क, नदी, सरोवर या फिर किसी दूसरे सार्वजनिक स्थल पर इस स्वच्छता अभियान से जुड़ सकते हैं और जहाँ-जहाँ अमृत सरोवर बने हैं वहाँ तो स्वच्छता अवश्य करनी है। स्वच्छता की ये कार्यांजलि ही गांधी जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मैं आपको फिर से याद दिलाना चाहूँगा कि इस गाँधी जयंती के अवसर पर खादी का कोई ना कोई Product जरूर खरीदें।

हमारे देश में त्योहारों का season भी शुरू हो चुका है। आप सभी के घर में भी कुछ नया खरीदने की योजना बन रही होगी। कोई इस इंतजार में होगा कि नवरात्र के समय वो अपना शुभ काम शुरू करेगा। उमंग, उत्साह के इस वातावरण में आप vocal for local का मंत्र भी जरुर याद रखें।

जहां तक संभव हो, आप, भारत में बने सामानों की खरीदारी करें, भारतीय Product का उपयोग करें और Made in India सामान का ही उपहार दें।

आपकी छोटी सी खुशी, किसी दूसरे के परिवार की बहुत बड़ी खुशी का कारण बनेगी। आप, जो भारतीय सामान खरीदेंगे, उसका सीधा फायदा, हमारे श्रमिकों, कामगारों, शिल्पकारों और अन्य विश्वकर्मा भाई-बहनों को मिलेगा। आजकल तो बहुत सारे Start-ups भी स्थानीय Products को बढ़ावा दे रहे हैं। आप स्थानीय चीजें खरीदेंगे तो start-ups के इन युवाओं को भी फायदा होगा।

त्याग एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति
राजमाता विजया राजे सिंधिया

राजमाता विजया राजे सिंधिया का जन्म 12 अक्टूबर, 1919 में सागर, मध्य प्रदेश के राणा परिवार में हुआ था। श्रीमती विजया राजे सिंधिया के पिता श्री महेन्द्रसिंह ठाकुर जालौन जिला के डिप्टी कलेक्टर थे और उनकी माता श्रीमती विंदेश्वरी देवी थीं। श्रीमती विजया राजे सिंधिया का विवाह के पूर्व का नाम लेखा दिव्येश्वरी था। राजमाता सिंधिया के पुत्र श्री माधवराव सिंधिया, पुत्री श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया और श्रीमती यशोधरा राजे सिंधिया हैं।

श्रीमती विजया राजे सिंधिया को ग्वालियर की राजमाता के रूप में जाना जाता था। भारत के विशालतम और संपन्नतम राजे-रजवाड़ों में से ग्वालियर एक था। उस रियासत के महाराजा के साथ उनका विवाह हुआ था। 1957 में श्रीमती विजया राजे सिंधिया ने कांग्रेस से चुनाव लड़ा और वे विजयी हुईं। अपने पति के स्वर्गवास के बाद सन् 1962 में कांग्रेस के टिकट पर वे संसद सदस्य बनीं। पांच साल के बाद अपने सैद्धान्तिक मूल्यों के कारण वे कांग्रेस छोड़कर जनसंघ में शामिल हो गईं। एक राज परिवार से रहते हुए भी वे अपनी ईमानदारी, सादगी और प्रतिबद्धता के कारण पार्टी में सर्वप्रिय बन गईं। शीघ्र ही वे पार्टी में शक्ति स्तंभ के रूप में सामने आईं।

राजमाता विजया राजे सिंधिया भारतीय जनता पार्टी के संस्थापकों में से एक थीं। राजमाता ने जनसंघ और भाजपा के कई प्रमुख नेताओं जैसे- श्री अटल बिहारी वाजपेयी और श्री लालकृष्ण आडवाणी के साथ काम किया। यही नहीं, मध्य प्रदेश की राजनीति में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान है।

1967 में मध्य प्रदेश में सरकार गठन में उन्होंने बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। हालांकि, श्रीमती विजया राजे सिंधिया का सार्वजनिक जीवन प्रभावशाली और आकर्षक था, लेकिन उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन में मुश्किलों का सामना किया।

सन् 1989 के आम चुनाव में राजमाता विजया राजे सिंधिया ने एक बार फिर गुना से भाजपा प्रत्याशी के रूप में जीत दर्ज कीं। इससे पहले 22 साल पूर्व सन् 1967 में राजमाता यहां से जीती थीं। 1991 के चुनाव में श्रीमती विजया राजे सिंधिया ने कांग्रेस प्रत्याशी को पराजित किया। राजमाता सिंधिया सिद्धांतों के प्रति समर्पित सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से ओतप्रोत विदुषी जननायक थीं। उन्होंने महलों के वैभव को छोड़कर जनता के न्याय के लिए संघर्ष का मार्ग स्वीकार किया और सड़कों पर उतरकर राजमाता से लोकमाता बन गईं। उन्होंने समर्पित जीवन जिया। सेवा की उनमें ललक थी। सादगी और सरलता उनका स्वभाव था। राजमाता का मानना था की अपनों की जड़ खोदकर कभी कोई दूसरों का चहेता नहीं बना है। राजमाता सिंधिया लंबे समय तक महिलाओं से जुड़ी रहीं और उन्हें सदैव प्रेरित करती थीं।

राजमाता विजया राजे सिंधिया भारतीय जनता पार्टी के संस्थापकों में से एक थीं। राजमाता ने जनसंघ और भाजपा के कई प्रमुख नेताओं जैसे- श्री अटल बिहारी वाजपेयी और श्री लालकृष्ण आडवाणी के साथ काम किया।

वे हमेशा सेवा के लिए समर्पित रहीं। उन्हें पद और सत्ता ने कभी आकर्षित नहीं किया। उन्होंने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित कर दिया।

राजमाता त्याग एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति थी। राजमाता विजया राजे सिंधिया ने लोगों के दिलों पर बरसों राज किया।

सत्ता के शिखर पर रहने के बाद भी उन्होंने जनसेवा से कभी अपना मुख नहीं मोड़ा। राजमाता का सपना था कि जब देश में कमल खिलेगा तभी अंतिम सांस लेंगी। यह स्वप्न पूरा भी हुआ और श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में केंद्र में सरकार बनी। सन् 1998 से राजमाता का स्वास्थ्य खराब रहने लगा और 25 जनवरी, 2001 में राजमाता विजया राजे सिंधिया का स्वर्गवास हो गया।

बारडोली सत्याग्रह की सफलता पर महिलाओं ने सरदार की उपाधि प्रदान की

सरदार वल्लभ भाई भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। भारत की आजादी के बाद वे प्रथम गृह मंत्री और उप-प्रधानमंत्री बने। बारडोली सत्याग्रह का नेतृत्व कर रहे पटेल को सत्याग्रह की सफलता पर वहाँ की महिलाओं ने सरदार की उपाधि प्रदान की। आजादी के बाद विभिन्न रियासतों में बिखरे भारत के भू-राजनीतिक एकीकरण में केंद्रीय भूमिका निभाने के लिए पटेल को भारत का बिस्मार्क और लौह पुरूष भी कहा जाता है।

पटेल का जन्म नडियाद, गुजरात में एक लेउवा/लेवा गुर्जर कृषक परिवार में हुआ था। वे झवेरभाई पटेल एवं लाडबा देवी की चौथी संतान थे। उनकी शिक्षा मुख्यतः स्वाध्याय से ही हुई। लन्दन जाकर उन्होंने बैरिस्टर की पढ़ाई की और वापस आकर अहमदाबाद में वकालत करने लगे। महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होने भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया।

खेड़ा संघर्ष

स्वतन्त्रता आन्दोलन में सरदार पटेल का सबसे पहला और बड़ा योगदान खेडा संघर्ष में हुआ। गुजरात का खेडा खण्ड (डिविजन) उन दिनो भयंकर सूखे की चपेट में था। किसानों ने अंग्रेज सरकार से भारी कर में छूट की मांग की। जब यह स्वीकार नहीं किया गया तो सरदार पटेल, गांधीजी एवं अन्य लोगों ने किसानों का नेतृत्व किया और उन्हे कर न देने के लिये प्रेरित किया। अन्त में सरकार झुकी और उस वर्ष करों में राहत दी गयी। यह सरदार पटेल की पहली सफलता थी। यद्यपि अधिकांश प्रान्तीय कांग्रेस समितियाँ पटेल के पक्ष में थीं, गांधी जी की इच्छा का आदर करते हुए पटेल जी ने प्रधानमंत्री पद की दौड़ से अपने को दूर रखा और इसके लिये नेहरू का समर्थन किया। उन्हे उपप्रधानमंत्री एवं गृह मंत्री का कार्य सौंपा गया। किन्तु इसके बाद भी नेहरू और पटेल के सम्बन्ध तनावपूर्ण ही रहे।

सरदार पटेल ने आजादी के ठीक पूर्व (संक्रमण काल में) ही पीवी मेनन के साथ मिलकर कई देसी राज्यों को भारत में मिलाने के लिये कार्य आरम्भ कर दिया था। पटेल और मेनन ने देसी राजाओं को बहुत समझाया कि उन्हे स्वायत्तता देना सम्भव नहीं होगा। इसके परिणाम स्वरूप तीन को छोड़कर शेष सभी राजवाड़ो ने स्वेच्छा से भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। केवल जम्मू एवं कश्मीर, जूनागढ़ तथा हैदराबाद के राजाओं ने ऐसा करना नहीं स्वीकारा। जूनागढ़ के नवाब के विरुद्ध जब बहुत विरोध हुआ तो वह भागकर पाकिस्तान चला गया और जूनागढ़ भी भारत में मिल गया। जब हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया तो सरदार पटेल ने वहाँ सेना भेजकर निजाम का आत्मसमर्पण करा लिया। किन्तु नेहरू ने कश्मीर को यह कहकर अपने पास रख लिया कि यह समस्या एक अंर्तराष्ट्रीय समस्या है।

सरदार पटेल ने आजादी के ठीक पूर्व (संक्रमण काल में) ही पीवी मेनन के साथ मिलकर कई देसी राज्यों को भारत में मिलाने के लिये कार्य आरम्भ कर दिया था।

पटेल और मेनन ने देसी राजाओं को बहुत समझाया कि उन्हे स्वायत्तता देना सम्भव नहीं होगा। इसके परिणाम स्वरूप तीन को छोड़कर शेष सभी राजवाड़ो ने स्वेच्छा से भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. नेहरू व प्रथम उपप्रधानमंत्री सरदार पटेल में आकाश-पाताल का अंतर था। यद्यपि दोनों ने इंग्लैण्ड जाकर बैरिस्टरी की डिग्री प्राप्त की थी परंतु सरदार पटेल वकालत में पं. नेहरू से बहुत आगे थे तथा उन्होंने सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य के विद्यार्थियों में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया था। नेहरू प्रायः सोचते रहते थे, सरदार पटेल उसे कर डालते थे। नेहरू शास्त्रों के ज्ञाता थे, पटेल शस्त्रों के भी पुजारी थे। पटेल ने भी ऊंची शिक्षा पाई थी परंतु उनमें किंचित भी अहंकार नहीं था। वे स्वयं कहा करते थे, 'मैंने कला या विज्ञान के विशाल गगन में ऊंची उड़ानें नहीं भरीं। मेरा विकास कच्ची

झोपड़ियों में गरीब किसान के खेतों की भूमि और शहरों के गंदे मकानों में हुआ है। 'पं. नेहरू को गांव की गंदगी, तथा जीवन से चिढ़ थी।' पं. नेहरू अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के इच्छुक थे तथा समाजवादी प्रधानमंत्री बनना चाहते थे।

सरदार पटेल की महानतम देन थी 562 छोटी-बड़ी रियासतों का भारतीय संघ में विलीनीकरण करके भारतीय एकता का निर्माण करना। विश्व के इतिहास में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जिसने इतनी बड़ी संख्या में राज्यों का एकीकरण करने का साहस किया हो। 13 नवम्बर को सरदार पटेल ने सोमनाथ के भग्न मंदिर के पुनर्निर्माण का संकल्प लिया, जो पंडित नेहरू के तीव्र विरोध के पश्चात भी बना। 1948 में हैदराबाद भी केवल 4 दिन की पुलिस कार्रवाई द्वारा मिला लिया गया। न कोई बम चला, न कोई क्रांति हुई, जैसा कि डराया जा रहा था।

जहां तक कश्मीर रियासत का प्रश्न है इसे पंडित नेहरू ने स्वयं अपने अधिकार में लिया हुआ था, परंतु यह सत्य है कि सरदार पटेल कश्मीर में जनमत संग्रह तथा कश्मीर के मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाने पर बेहद क्षुब्ध थे। निःसंदेह सरदार पटेल द्वारा यह 562 रियासतों का एकीकरण विश्व इतिहास का एक आश्चर्य था। भारत की यह रक्तहीन क्रांति थी। महात्मा गांधी ने सरदार पटेल को इन रियासतों के बारे में लिखा था, 'रियासतों की समस्या इतनी जटिल थी जिसे केवल तुम ही हल कर सकते थे।' यद्यपि विदेश विभाग पं. नेहरू का कार्यक्षेत्र था, परंतु कई बार उप प्रधानमंत्री होने के नाते कैबिनेट की विदेश विभाग समिति में उनका जाना होता था। उनकी दूरदर्शिता का लाभ यदि उस समय लिया जाता तो अनेक वर्तमान समस्याओं का जन्म नहीं होता। 1950 में पंडित नेहरू को लिखे एक पत्र में पटेल ने चीन तथा उसकी तिब्बत के प्रति नीति से सावधान किया था और चीन का रवैया कपटपूर्ण तथा विश्वासघाती बतलाया था।

अपने पत्र में चीन को अपना दुश्मन, उसके व्यवहार को अभद्रतापूर्ण और चीन के पत्रों की भाषा को किसी दोस्त की नहीं, भावी शत्रु की भाषा कहा था। उन्होंने यह भी लिखा था कि तिब्बत पर चीन का कब्जा नई समस्याओं को जन्म देगा। 1950 में नेपाल के संदर्भ में लिखे पत्रों से भी पं. नेहरू सहमत न थे। 1950 में ही गोवा की स्वतंत्रता के संबंध में चली दो घंटे की कैबिनेट बैठक में लम्बी वार्ता सुनने के पश्चात सरदार पटेल ने केवल इतना कहा 'क्या हम गोवा जाएंगे, केवल दो घंटे की बात है। 'नेहरू इससे बड़े नाराज हुए थे। यदि पटेल की बात मानी गई होती तो 1961 तक गोवा की स्वतंत्रता की प्रतीक्षा न करनी पड़ती।

आज भी देशभक्ति के लिए प्रेरित करता है
जय जवान-जय किसान का नारा

सादगी, अटूट देशभक्ति और ईमानदारी। यह परिचय है देश के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी का। 2 अक्टूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में मुंशी लाल बहादुर श्रीवास्तव का जन्म हुआ। मुंशी लाल बहादुर श्रीवास्तव अपने घर में सबसे छोटे थे लिहाजा घर वालों ने उन्हें नाम दिया 'नन्हे'। पिता की मौत के बाद नन्हे अपनी मां के साथ मिर्जापुर चले गए। मिर्जापुर में नन्हे अपने नाना के साथ रहने लगे। मिर्जापुर में ही नन्हे ने प्राथमिक शिक्षा हासिल की। जब लाल बहादुर श्रीवास्तव काशी विद्यापीठ से पढ़कर निकले तो उन्हें शास्त्री की उपाधि दी गई। बस इसी के बाद से ही लाल बहादुर श्रीवास्तव ने अपने नाम के अंत से जाति सूचक शब्द हटा लिया और वो बन गए लाल बहादुर शास्त्री।

साल 1920 में शास्त्री जी आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। शास्त्री जी गांधीवादी नेता थे उन्होंने सम्पूर्ण जीवन देश और गरीबों की सेवा में लगा दिया। जब लाल बहादुर शास्त्री ने महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में हिस्सा लिया था तब वो थोड़े समय के लिए जेल चले गए थे। लेकिन जेल से निकलते ही उन्होंने तत्कालीन काशी विद्यापीठ से संस्कृत भाषा में स्नातक स्तर की परीक्षा पास की और शास्त्री की उपाधि से नवाजे गए। मरो नहीं मारो, जय जवान-जय किसान, जैसे नारे देने वाले शास्त्री जी ने भारत सेवक संघ में शामिल होकर अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की। असहयोग आंदोलन, दांडी मार्च, भारत छोड़ो आंदोलन समेत कई आंदोलनों में लाल बहादुर शास्त्री ने सक्रिय भूमिका अदा की। भारत के आजाद होने के बाद सन् 1961 में लाल बहादुर शास्त्री गृह मंत्री के प्रभावशाली पद पर आसीन हुए। पंडित जवाहर लाल नेहरू के निधन के बाद सन् 1964 में शास्त्री जी देश के प्रधानमंत्री बने। जम्मू-कश्मीर के विवादित प्रांत पर पड़ोसी पाकिस्तान के साथ 1965 में हुए युद्ध में उनके द्वारा दिखाई गई दृढ़ता के लिए उनकी बहुत प्रशंसा हुई। ताशकंद में पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान के साथ युद्ध न करने की ताशकंद घोषणा के समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें मरणोपरान्त वर्ष 1966 में भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया। शास्त्रीजी की मृत्यु जिस संदिग्ध अवस्था में हुई उसकी सच्चाई का अभी तक पता नहीं चला है, ताशकंद की धरती पर जिस भारत पाक संधि पर हस्ताक्षर किया गया, उस दबाव में तो उनकी मृत्यु नहीं हुई, वह सवाल आज भी सवाल बना हुआ है।

आत्म शुद्धि के बिना अहिंसा का पालन असंभव : गांधीजी

इससे आगे का मेरा जीवन इतना अधिक सार्वजनिक हो गया है कि शायद ही कोई चीज ऐसी हो, जिसे जनता जानती न हो। फिर सन् 1921 से मैं कांग्रेस के नेताओं के साथ इतना अधिक ओत-प्रोत होकर रहा हूं कि किसी प्रसंग का वर्णन नेताओं के संबंध की चर्चा किए बिना मैं यथार्थ रूप में कर ही नहीं सकता। ये संबंध अभी ताजे हैं। श्रद्धानंदजी, देशबंधु, लालाजी और हकीम साहब आज हमारे बीच नहीं हैं, पर सौभाग्य से दूसरे कई नेता अभी मौजूद हैं। कांग्रेस के महान परिवर्तन के बाद का इतिहास अभी तैयार हो रहा है। मेरे मुख्य प्रयोग कांग्रेस के माध्यम से हुए हैं। अतएव, उन प्रयोगों के वर्णन में नेताओं के संबंधों की चर्चा अनिवार्य है। शिष्टता के विचार से भी फिलहाल तो मैं ऐसा कर ही नहीं सकता। अंतिम बात यह है कि इस समय चल रहे प्रयोगों के बारे में मेरे निर्णय निश्चयात्मक नहीं माने जा सकते। अतएव, इन प्रकरणों को तत्काल तो बंद कर देना ही मुझे अपना कर्तव्य मालूम होता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि इसके आगे मेरी कलम ही चलने से इनकार करती है।

पाठकों से विदा लेते हुए मुझे दुःख होता है। मेरे निकट अपने इन प्रयोगों की बड़ी कीमत है। मैं नहीं जानता कि मैं उनका यथार्थ वर्णन कर सका हूं या नहीं। यथार्थ वर्णन करने में मैंने कोई कसर नहीं रखी है। सत्य को मैने जिस रूप में देखा है, जिस मार्ग से देखा है, उसे उसी तरह प्रकट करने का मैंने सतत् प्रयत्न किया है और पाठकों के लिए उसका वर्णन करके चित्त में शांति का अनुभव किया है, क्योंकि मैंने आशा यह रखी है कि इससे पाठकों में सत्य और अहिंसा के प्रति अधिक आस्था उत्पन्न होगी। सत्य से भिन्न कोई परमेश्वर है, ऐसा मैंने कभी अनुभव नहीं किया। यदि इन प्रकरणों के पन्ने-पन्ने से यह प्रतीति न हुई हो कि सत्यमय बनने का एकमात्र मार्ग अहिंसा ही है तो प्रयत्न को व्यर्थ समझता हूं। प्रयत्न चाहे व्यर्थ हो, किंतु वचन व्यर्थ नहीं है। मेरी अहिंसा सच्ची होने पर भी कच्ची है, अपूर्ण है। अतएव, हजारों सूर्यों को इकट्ठा करने से भी जिस सत्य रूपी सूर्य के तेज का पूरा माप नहीं निकल सकता, सत्य की मेरी झाँकी ऐसे सूर्य की केवल एक किरण के दर्शन के समान ही है। आज तक के अपने प्रयोगों के अंत में मैं इतना तो अवश्य कह सकता हूं कि सत्य का संपूर्ण दर्शन

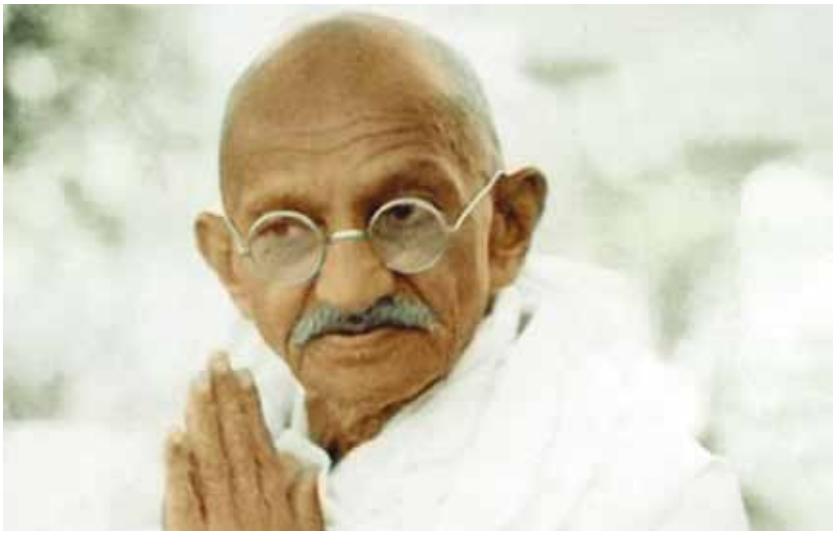

संपूर्ण अहिंसा के बिना असंभव है। ऐसे व्यापक सत्य-नारायण के प्रत्यक्ष दर्शन के लिए जीवमात्र के प्रति आत्मवत् प्रेम की परम आवश्यकता है और जो मनुष्य ऐसा करना चाहता है, वह जीवन के किसी भी क्षेत्र से बाहर नहीं रह सकता। यही कारण है कि सत्य की मेरी पूजा मुझे राजनीति में खींच लाई है। जो मनुष्य यह कहता है कि धर्म का राजनीति के साथ कोई संबंध नहीं है, वह धर्म को नहीं जानता, ऐसा कहने में मुझे संकोच नहीं होता।

बिना आत्मशुद्धि के जीवमात्र के साथ ऐक्य सध ही नहीं सकता। आत्मशुद्धि के बिना अहिंसा-धर्म का पालन सर्वथा असंभव है। अशुद्ध आत्मा परमात्मा के दर्शन करने में असमर्थ है। अतएव, जीवन-मार्ग के सभी क्षेत्रों में शुद्धि की आवश्यकता है।

यह शुद्धि साध्य है, क्योंकि व्यष्टि और समष्टि के बीच ऐसा निकट का संबंध है कि एक की शुद्धि अनेकों की शुद्धि के बराबर हो जाती है और व्यक्तिगत प्रयत्न करने की शक्ति तो सत्य-नारायण ने सबको जन्म से ही दी है। लेकिन मैं प्रतिक्षण यह अनुभव करता हूं कि शुद्धि का यह मार्ग विकट है। शुद्ध बनने का अर्थ है- मन से, वचन से और काया से निर्विकार बनना, राग-द्वेषादि से रहित होना। इस निर्विकारता तक पहुँचने का प्रतिक्षण प्रयत्न करते हुए भी मैं वहां पहुंच नहीं पाया हूं, इसलिए लोगों की स्तुति मुझे भुलावे

जो मनुष्य यह कहता है कि धर्म का राजनीति के साथ कोई संबंध नहीं है, वह धर्म को नहीं जानता, ऐसा कहने में मुझे संकोच नहीं होता।

में नहीं डाल सकती। उलटे यह स्तुति प्रायः तीव्र वेदना पहुंचाती है।

मन के विकारों को जीतना, संसार को शस्त्र-युद्ध से जीतने की अपेक्षा मुझे अधिक कठिन मालूम होता है। हिंदुस्तान आने के बाद भी मैं अपने भीतर छिपे हुए विकारों को देख सका हूं शर्मिंदा हुआ हूं, किंतु हारा नहीं हूं। सत्य के प्रयोग करते हुए मैंने आनंद लूटा है और आज भी लूट रहा हूं। लेकिन मैं जानता हूं कि अभी मुझे विकट मार्ग तय करना है। इसके लिए मुझे शून्यवत बनना है। मनुष्य जब तक स्वेच्छा से अपने को सबसे नीचे नहीं रखता, तब तक उसे मुक्ति नहीं मिलती।

अहिंसा नम्रता की पराकाष्ठा है और यह अनुभव सिद्ध बात है कि इस नम्रता के बिना मुक्ति कभी नहीं मिलती। ऐसी नम्रता के लिए प्रार्थना करते हुए और उसके लिए संसार की सहायता की याचना करते हुए इस समय तो मैं इन प्रकरणों को बंद करता हूं।

कंठ-कंठ में एक राग है

अटल बिहारी वाजपेयी

माँ के सभी सपूत गूँथते ज्वलित हृदय की माला।
हिन्दुकुश से महासिन्धु तक जगी संघटन-ज्वाला।

हृदय-हृदय में एक आग है, कण्ठ-कण्ठ में एक राग है।
एक ध्येय है, एक स्वप्न, लौटाना माँ का सुख-सुहाग है।

प्रबल विरोधों के सागर में हम सुदृढ़ चट्टान बनेंगे।
जो आकर सर टकराएँगे अपनी-अपनी मौत मरेंगे।

विपदाएँ आती हैं आएँ, हम न रुकेंगे, हम न रुकेंगे।
आघातों की क्या चिंता है? हम न झुकेंगे, हम न झुकेंगे।

सागर को किसने बाँधा है? तूफानों को किसने रोका।
पापों की लंका न रहेगी, यह उंचास पवन का झोंका।

आँधी लघु-लघु दीप बुझाती, पर धधकाती है दावानल।
कोटि-कोटि हृदयों की ज्वाला, कौन बुझाएगा, किसमें बल?

छुईमुई के पेड़ नहीं जो छूते ही मुरझा जाएँगे।
क्या तड़िताघातों से नभ के ज्योतित तारे बुझ पाएँगे?

प्रलय-घनों का वक्ष चीरकर, अंधकार को चूर-चूर कर।
ज्वलित चुनौती सा चमका है, प्राची के पट पर शुभ दिनकर।

सत्य सूर्य के प्रखर ताप से चमगादड़ उलूक छिपते हैं।
खग-कुल के क्रन्दन को सुन कर किरण-बाण क्या रुक सकते हैं?

शुद्ध हृदय की ज्वाला से विश्वास-दीप निष्कम्प जलाकर।
कोटि-कोटि पग बढ़े जा रहे, तिल-तिल जीवन गला-गलाकर।

जब तक ध्येय न पूरा होगा, तब तक पग की गति न रुकेगी।
आज कहे चाहे कुछ दुनिया कल को बिना झुके न रहेगी।

जनजातीय समाज के लिए की गई सभी 14 घोषणाओं को किया पूरा: शिवराज सिंह चौहान

हम सरकार नहीं चलाते बल्कि जनता की सेवा करते हैं। भाजपा की सरकार ने गरीब कल्याण के काम किए हैं। जनजातीय समाज के लिए 14 घोषणाएं की थीं और इन सभी घोषणाओं को पूरा करने का काम मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार ने किया है। कांग्रेस ने कभी जनजातीय योद्धाओं को सम्मान नहीं दिया। उसने हमेशा जनजातीय समाज का शोषण किया है। पेसा एक्ट भी भाजपा सरकार ने लागू किया है, श्री रघुनाथ शाह, श्री शंकर शाह का बलिदान दिवस मनाया जा रहा है। यह भाजपा की सरकार है, जिसने जनजातीय समाज के उत्थान के लिए काम किया है। कांग्रेस को एक परिवार के अलावा दूसरे महानायकों के नाम ही याद नहीं हैं। हम सरकार नहीं परिवार चलाते हैं।

देश सुरक्षित, जीवन आसान बना रही भाजपा सरकार- विष्णुदत्त शर्मा

2014 से पहले देश में आए दिन बम विस्फोट होते थे। पाकिस्तानी सैनिक हमारी सीमा में घुसकर हमारे सैनिकों के सिर काटकर ले जाते थे और उनसे फुटबाल खेलते थे। हमारी सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी रहती थी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के सत्ता में आने के बाद आज आतंकवादी भारत में कोई भी हमला करने से पहले कई बार सोचते हैं। पूर्व प्रधानमन्त्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था कि भारत का कोई भी गाँव ऐसा नहीं बचेगा, जो सड़कों से जुड़ा न हो। उन्होंने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना बनाई और गाँव-गाँव को सड़कों से जोड़ दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि गाँव-गाँव, घर- घर नल से पानी पहुंचाएंगे और आने वाले समय में कोई घर ऐसा नहीं बचेगा, जहां पीने का पानी नहीं पहुंचता हो। भाजपा की सरकारों की सोच गरीबों के कल्याण की, विकास और हर गरीब का जीवन बदलने की रही है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने बहनों के सम्मान की रक्षा के लिए गाँव-गाँव में शौचालय बनवाए हैं। प्रधानमंत्री मोदी जी की सरकार ने आयुष्मान कार्ड के माध्यम से हर गरीब को 5 लाख रुपये तक का फ्री इलाज कराने का अधिकार दिया है।

संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है

प्रत्येक राष्ट्र में राष्ट्रीयता की भावना जिससे बनी रहे, वही संस्कृति का आधार माना जाता है। संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है। आत्मा निकल जाने के पश्चात जैसे सब अंग-प्रत्यंग निश्चेष्ट हो जाते हैं। उसी प्रकार की अवस्था संस्कृति का लोप हो जाने से राष्ट्र की होती है। जैसे यूनान और मिस्र का प्राचीन राज्य समाप्त हो गया।

इसका यह अर्थ तो नहीं कि वहां की भूमि, नदियां, पर्वत, व्यक्ति आदि नष्ट हो गए। ये वस्तुएं तो ज्यों-की-त्यों बनी रहती हैं, परंतु व्यक्ति को एकसूत्र में बांधने की जो शक्ति संस्कृति में है, वह शक्ति समाप्त हो जाती है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

आम लोगों ने संघ कार्य के अनेक रूपों का विचार किया होगा। एक प्रश्न हमारे सामने यह भी आता है कि समय-समय पर हम कहते हैं कि हमारा कार्य सांस्कृतिक अधिष्ठान पर खड़ा है। इस दृष्टि से यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक ही है कि वह संस्कृति क्या है? संघ की प्रतिज्ञा में भी हम ऐसा कहते हैं, 'हिंदू धर्म, हिंदू संस्कृति की रक्षा कर हिंदू समाज की सर्वांगीण उन्नति करने के लिए हम संघ के घटक बने हैं।' बिना संस्कृति संरक्षण के राष्ट्र की उन्नति नहीं हो सकती, यह भी हम स्वीकारते हैं।

आखिर संस्कृति है क्या? हम यह भी देखते हैं कि संस्कृति के नाम पर आज देश में बहुत से कार्य प्रारंभ हो गए हैं। हर कहीं हम Cultural progress का नाम सुनते हैं। हमारे कलाकार सांस्कृतिक शिष्टमंडलों के रूप में विदेश जाते हैं, अन्य देशों से हम संस्कृति का संबंध जोड़ते हैं आदि। कहने का तात्पर्य यह कि हम नाच-गान को ही संस्कृति मान बैठते हैं।

भारत के विचारकों के समक्ष यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या गाना, नाचना, नाटक खेलना मात्र ही संस्कृति है। यदि यही संस्कृति की परिभाषा है तो इसका प्रचार हमारे पूर्वज ऋषियों, विद्वानों, स्वामी विवेकानंद जैसे लोगों द्वारा न होकर फिल्म अभिनेता तथा अभिनेत्रियों द्वारा ही होगा।

संस्कृति शब्द को आज गलत अर्थ ही दिया गया है। यह अज्ञानवश हो सकता है और जानबूझकर भी। जानबूझकर इसलिए कि अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए वे संस्कृति शब्द का उपयोग उन लोगों में गलत धारणा पैदा करके अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। जैसे डालडा को घी की संज्ञा देने से यह बात स्पष्ट है। घी शब्द के बारे में लोगों की धारणा अच्छी है। इसलिए डालडा के साथ साफ किया हुआ तेल-ऐसा न जोड़कर घी शब्द जोड़ दिया गया है। कुछ समय उपरांत लोग इस डालडा को ही वास्तविक घी समझकर इसका उपयोग करने में लज्जा महसूस नहीं करेंगे। ठीक यही बात संस्कृति के संबंध में है। संस्कृति के प्रति जिनकी श्रद्धा है, उन्हें गलत रास्ते पर डालने के लिए इस नवीन संस्कृति का प्रचार किया जा रहा है। राष्ट्रीयता के संबंध में भी यही बात हुई। हमें Indian Nationalism की भ्रांत धारणा दी गई और कहा गया कि मुसलमान, ईसाई सभी यहां के राष्ट्रीय हैं। सिक्खों को यह गलत धारणा दी गई कि वे हिंदू नहीं हैं आदि।

आज सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बारे में इसी कारण लोगों की कल्पना नाचने-गाने की ही हो गई है। एक व्यक्ति ने पूछा कि आप कहते हैं कि हमारा कार्य सांस्कृतिक है, परंतु हमें तो ऐसा दिखाई नहीं देता, क्योंकि वहां तो नाच-गाना होता नहीं। फिर मैंने व्यंग्य कसते हुए कहा कि जिस प्रकार नाचने-गाने में वे स्वर-ताल का ध्यान रखते हैं, इसी प्रकार संघ के कार्यक्रमों में एक कहने पर बायां पैर और दो कहने पर दायां पैर निकलता है और एक ताल के अनुसार कार्य होता है, इसलिए यह भी सांस्कृतिक हुआ।

संस्कृति के पीछे क्या भाव है, यह समझना

कुछ कठिन है। संस्कृति शब्द का प्रयोग वेदों को छोड़कर अन्य प्राचीन वाङ्मय में नहीं हुआ। संस्कृति को धर्म के अंतर्गत ही मान लिया गया था, परंतु आज संस्कृति शब्द का व्यापक प्रचार होने के कारण लोग इस शब्द को सुनकर चौंकते नहीं। कुछ लोगों ने इसे Culture के अनुवाद के रूप में स्वीकार किया है। यह भी संभावना हो सकती है कि यह शब्द स्वतंत्र रूप से विकसित हुआ हो। संस्कृति से मिलता-जुलता संस्कार शब्द हमारा पूर्व परिचित शब्द है। हमारे यहां सोलह संस्कार होते हैं, संस्कारों से मनुष्य बनता है, बिना संस्कार के वह पशु समान है- ऐसा बराबर सुनने में आता है। साधारणतया हम कह सकते हैं कि जो बाह्य वातावरण है, उसका मनुष्य पर जो परिणाम होता है, उसे हम संस्कार (Impression) कह सकते हैं।

परंतु संस्कार अच्छे और बुरे दोनों हो सकते हैं। किसी को चोरी की आदत लग जाए तो हम कहेंगे, उस पर बुरे संस्कार पड़े हैं। परंतु जब हम संस्कार कहते हैं तो उससे हमारा अभिप्राय अच्छे संस्कार से ही होता है। बुरे संस्कारों के लिए हम कुसंस्कार शब्द का प्रयोग करेंगे। जैसे चरित्रवान कहने से हमारा आशय अच्छे चरित्र वाले व्यक्ति से होता है, जबकि बुरे चरित्र वाले व्यक्ति के लिए हम चरित्रहीन शब्द का प्रयोग करते हैं।

अतः संस्कृति का अर्थ हुआ, अच्छे संस्कारों का परिणाम (प्रभाव)। मलयालम भाषा में हिंदू संस्कृति के लिए हिंदू संस्कार शब्द का प्रयोग होता है। स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि किन संस्कारों को हम अच्छा कहेंगे और किनको बुरा। इसकी व्याख्या करना सरल नहीं। पर एक छोटी सी कसौटी तो है। वह यह कि समाज के ध्येय के लिए जो पोषक है, वह अच्छा और जो बाधक है, वह बुरा। जैसे यदि हमारा लक्ष्य दिल्ली जाना है, तो जो रेलगाड़ी या मोटरगाड़ी उधर ले जाने में सहायक हो, वह अच्छी और जो विपरीत दिशा में ले जानेवाली है, वह बुरी।

परंतु दूसरा प्रश्न उत्पन्न होता है कि ध्येय क्या है? इस संबंध में हम इतना जानते हैं कि हमारी जो एकात्मकता है, एकीकरण है, इसकी अनुभूति ही हमारा ध्येय है। जब सब लोग एकता का अनुभव करें, तभी समाज अथवा राष्ट्र बनता है। यदि हम राष्ट्र के नाते जीवित रहना चाहते हैं तो एकात्मकता की अनुभूति जिससे होगी, वही हमारा ध्येय होगा।

यदि पांव में कांटा चुभ जाए और पता न लगे कि कहां चुभा है तो चिंता होने लगती है। शरीर के कण-कण की जब तक ठीक अनुभूति रहती है, तब तक ठीक है, परंतु जब बेहोशी आदि में शरीर का ज्ञान नहीं रहता, क्रियाओं, चेष्टाओं का ज्ञान नहीं रहता तो वह स्थिति चिंताजनक होती है और सारा शरीर गया, ऐसा लगने लगता है। जैसे लकवे में, हाथ होते हुए भी हाथ की क्रिया रुक जाती है, हाथ की अनुभूति नहीं होती। जब तक शरीर में चेतना है, अंगों का संबंध बराबर बना रहता है। तभी तक हममें सामर्थ्य है, जीवन है। इसी प्रकार राष्ट्र रूपी शरीर में चेतना बनाए रखना आवश्यक है। अतः जिन कारणों से राष्ट्र में चेतना का निर्माण होता है, वे अच्छे और दूसरे बुरे।

प्रत्येक राष्ट्र में राष्ट्रीयता की भावना जिससे बनी रहे, वही संस्कृति का आधार माना जाता है। संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है। आत्मा निकल जाने के पश्चात जैसे सब अंग-प्रत्यंग निश्चेष्ट हो जाते हैं। उसी प्रकार की अवस्था संस्कृति का लोप हो जाने से राष्ट्र की होती है। जैसे यूनान और मिस्र का प्राचीन राज्य समाप्त हो गया। इसका यह अर्थ तो नहीं कि वहां की भूमि, नदियां, पर्वत, व्यक्ति आदि नष्ट हो गए। ये वस्तुएं तो ज्यों-की-त्यों बनी रहती हैं, परंतु व्यक्ति को एकसूत्र में बांधने की जो शक्ति संस्कृति में है, वह शक्ति समाप्त हो जाती है। लकड़ियों को सूत के धागे से बांधा जा सकता है परंतु व्यक्ति-व्यक्ति को बांधने वाला सूत्र संस्कृति ही है। यह सूत्र वर्तमान प्राणियों के अतिरिक्त हमारा संबंध हमारे पूर्वजों अर्थात् राम, कृष्ण, शिवा, प्रताप, गोविंद सिंह आदि से तथा आगे जन्म लेने वालों से भी जोड़ देता है। इसी के बूते पर राष्ट्र टिक सकता है। अतः राष्ट्र रूप में जीवित रहने के लिए यही संस्कृति प्राप्तव्य है। अतः सिद्ध हुआ कि सारे समाज को आपस में जोड़ने वाला नाता संस्कृति है। जिन कार्यक्रमों से यह नाता जुड़ता है, वह संस्कार तथा जिन कार्यों से यह नाता टूटने लगता है, वे कुसंस्कार।

डाकुओं में जो स्वार्थ के कारण एकता है, क्या उसे भी संस्कृति मानें? उत्तर मिलेगा- 'नहीं।' कुछ देशों की संस्कृति का आधार यद्यपि यह भी है। जैसे अरब में मुसलमानों का संगठन लूट-खसोट के आधार पर ही किया इसी प्रकार इंग्लैंड भी सामूहिक स्वार्थ के नाम पर ही खड़ा हुआ।

परंतु हमने स्वार्थ के आधार पर एकता खड़ी नहीं की। यही हमारी और दूसरों की संस्कृति में अंतर है। जैसे मां से प्रेम करने के भिन्न-भिन्न आधार हो सकते हैं। इसी प्रकार विवाह के भी भिन्न आधार हो सकते हैं। एक यह कि विवाह दो प्राणियों का एकात्मकता के नाते आगे बढ़ना इसलिए है कि घर की देखभाल के लिए पत्नी मिल जाएगी। इसी प्रकार परिवार में हमारे माता-पिता भी शामिल होंगे। परंतु यूरोप में परिवार में मां-बाप नहीं होते।

जीवन में सभी चीजों की ओर देखने की हमारी दृष्टि कुछ भिन्न है। कुछ राष्ट्रों में ईमानदारी को व्यापार के लिए सर्वोत्तम नीति माना जाता है, परंतु हम इसे व्यापार की नीति के रूप में नहीं अपितु जीवन की नीति के रूप में अपनाना चाहते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति की अलग-अलग रुचि होती है। यह रुचि भिन्नता मूलतः सब प्राणियों में विद्यमान है। इसी प्रकार राष्ट्रों में भी रुचि भिन्नता है, अपनी-अपनी विशेषता है। सबके आधार भिन्न-भिन्न रहते हैं। इसके कारण हमारे देश में भी कुछ चीजें हमें रंजित करती हैं और कुछ नहीं। हमारी विशेष प्रवृत्ति है, जिसके आधार पर हम संगठन करते हैं। वह प्रवृत्ति स्वार्थ की नहीं, निःस्वार्थ भाव की है।

(राष्ट्र जीवन की दिशा से साभार)

▶ प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने शहीद कैप्टन देवाशीष शर्मा जी की माताजी से मिट्टी और चावल लेकर 'मेरी माटी-मेरा देश' अभियान का शुभारंभ किया।

▶ वरिष्ठ नेताओं ने पूजन करके जनआशीर्वाद यात्रा के रथों को रवाना किया।

▶ वरिष्ठ नेताओं ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी पर केंद्रित चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के जन्मदिवस के अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने वृक्षारोपण किया।

▶ मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी व प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने विकास रथों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने विजय के शंखनाद के साथ जन आशीर्वाद यात्रा का शुभारंभ किया।

▶ मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान जी जन आशीर्वाद यात्रा में।

▶ मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जी ने जन आशीर्वाद यात्रा में जनसभा को सम्बोधित किया।

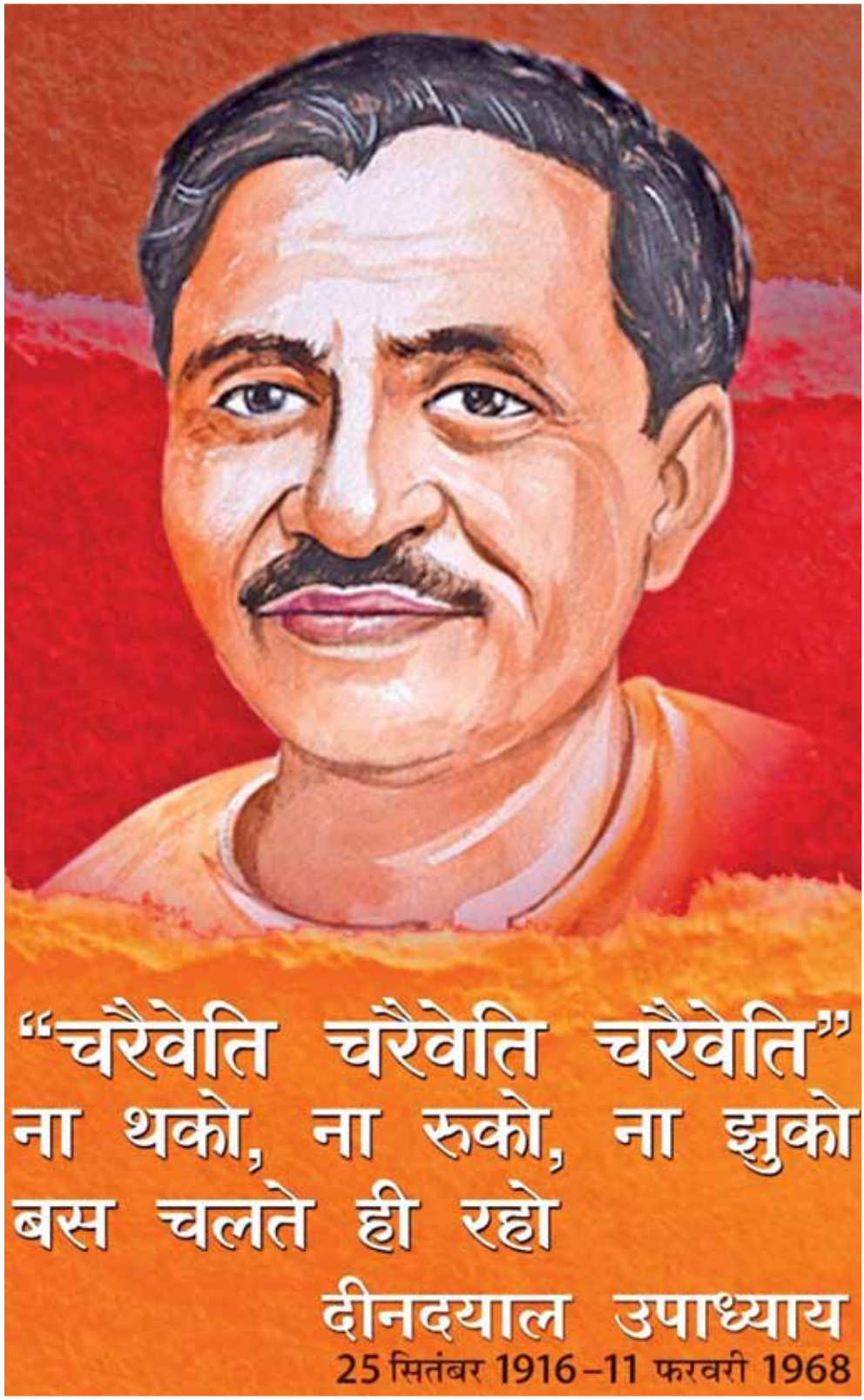
"चरैवेति चरैवेति चरैवेति"
ना थको, ना रुको, ना झुको
बस चलते ही रहो
दीनदयाल उपाध्याय
25 सितंबर 1916 – 11 फरवरी 1968